गुरु पूर्णिमा विशेषांक





| मानव जीवन की सर्वतोमुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से सम्बन्धित मासिक पत्रिका |

प्राचीन मंत्र यंत्र विज्ञान

▶ जून 2023 | ▶ वर्ष 13 | ▶ अंक 03 | ▶ ₹40

श्रावण मास शिव-शक्ति पाशुपतास्त्रेय साधना

महामाया शिव शक्ति गुरू पूर्णिमा साधना

Every Atom Of my body has guru tatva!

Pratyangira Sadhana

जगत गुरू श्री जगन्नाथ साधना

शिव गौरी शिवोहम धनदा साधना



जगतगुरू- तुम्ही हो हमारा जीवन सार

चार्तुमास

29 जून से 23 नवम्बर तक



चार्तुमासीय देवत्व शक्ति प्राप्ति दीक्षा

ब्रह्मा के पौत्र आङ्गिरस समस्त शास्त्रों के ज्ञाता, वेदों के पारंगत थे, उन्होने भगवान महादेव की तपस्या की, जिससे प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुये और वर मांगने को कहा। आङ्गिरस बोले कि मैं तो आपके दर्शन से ही कृतकृत्य हो गया हूं, अब कोई कामना नहीं रही है। इस पर शिव ने कहा-

"तुमने महान तप किया है, तुम इन्द्र आदि सभी देवताओं के
गुरू होओगे तथा सभी ग्रहों में पूज्य होओगे और 'बृहस्पति' नाम
से पुकारे जाओगे। तुम बड़े वक्ता और विद्वान होओगे,
तुम्हारी या तुम्हारे द्वारा जो मेरी अर्चना करेगा,
वह तुम्हारे समान ही विद्वान एवं श्रेष्ठ वक्ता बनेगा।"

तदनन्तर बृहस्पति को देवताओं का आचार्य पद प्राप्त हुआ और वे समस्त लोकों के सर्वाच्च पद पर आसीन हुये। धन बल, राज्य बल से भी अधिक श्रेष्ठ ज्ञान बल है। इस ज्ञान को समस्त शास्त्रों के ज्ञान को आध्यात्मिक सूक्ष्मताओं को जानने वाले ज्ञानी की सर्वत्र पूजा होती है। विद्वान व्यक्ति ही सर्वत्र पूजनीय होते हैं।

वर्ष 2080 जो कि पुरूषोत्तम मास युक्त है इस वर्ष में श्रावण मास दो माह तक क्रियाशील रहेगा। अतः 29 जून से 23 नवम्बर तक चार्तुमास पूर्णरूप से साधनात्मक रूप में चेतन्य व सक्रिय रहेगा। वैसे तो चार माह का ही चार्तुमास होता है परन्तु इसी चार्तुमास में एक माह अधिक होने के फलस्वरूप चार्तुमास पंच माह से सरोबार होगा।

इन पंच माह के चार्तुमास में सभी ग्रहों के अधिपति जो की देवगुरू बृहस्पति है। उनकी अभ्यर्थना आराधना शिव परिवार स्वरूप में करने से गृहस्थ भौतिक पारिवारिक उन्नति के साथ-साथ चारों ही स्वरूपों में आध्यात्मिक सिद्धता से युक्त होकर जीवन सर्व सुखोंमय मोक्षदा युक्त निर्मित हो सकेगा।

इसी हेतु चार्तुमास के प्रारम्भिक दिवसों में 29 जून से 03 जुलाई के मध्य पंच दिवसों में अथवा 20 नवम्बर से 24 नवम्बर के मध्य चार्तुमासीय देवत्व शक्ति प्राप्ति दीक्षा ग्रहण कर अगले पंच माह में जो भी पूजा, अर्चना, मंत्र, जप, हवन यज्ञ सम्पन्न करने पर उसका कोटी गुना सुफल प्राप्त हो सकेगा। इसी के प्रभाव से गुरू वृहस्पतिमय सुश्रेष्ठतायें भी आ सकेगी।

चार्तुमासीय देवत्व शक्ति प्राप्ति दीक्षा न्यौछावर ₹2100

दीक्षा हेतु नूतन फोटो व न्यौछावर राशि कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर (राज.) 9950809666 भेजें

न्यौछावर राशि KAILASH SHRIMALI State Bank Of India Main Branch Jodhpur
A/c No.: 10827454848 RTGS Code: SBIN0000649 Branch Code:659
नई दिल्ली E-1077 सरस्वती विहार,पीतमपुरा Mob. +91-90138-59760 / +91-87507-57042
सद्गुरूदेव जी के साधनात्मक कार्यक्रम GurudevKailash KAILASH SIDDHASHRAM पर देखे।



अपनो से अपनी बात...!

संसाधन जो हमें प्रकृति ने दिये है उससे केवल एक साधु का जीवन निर्वाह हो सकता है, पानी, अनाज, फल, सब्जी सभी प्रकृति में उपलब्ध है परन्तु हम यूँ ही जा के उनका भोग नहीं कर सकते, सामान्य संसाधनों जैसे रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा व ज्ञान का अर्जन, कोई रोजगार, एक परिवार व समाज का हिस्सा होना, मान-सम्मान, सामाजिक प्रतिष्ठा ये सभी आवश्यक संसाधन हैं, और इन सामान्य चीजों को प्राप्त करने के लिये भी हममें कौशल, निष्ठा व ज्ञान होना आवश्यक है, तभी हम संसाधनों का अर्जन व उपयोग कर सकेंगे।

यह कहना बहुत सरल और सुनने में भी अच्छा लगता है कि ईश्वर ने हमें इस धरा पर जन्म दिया है तो हमें सुख-समृद्धि से जीने का हक है पर यह अधिकार-हक सभी को तो नहीं मिलता यह आपको मिले उसके लिये आपके अंदर वो योग्यता, कोशल उत्पन्न करना होगा, वह भी सही समय पर, अगर सही समय पर आपको भोजन नहीं मिला तो उसका कोई लाभ नहीं, उसी प्रकार सही समय पर शिक्षा, उपचार न मिले तो उसका अभाव जीवन भर या जीवन को गवाने से भी नहीं मिलता। हम सबके पास है तो दिन के 24 घंटे ही, इन पलो को दैनिक कार्य के साथ इस रूप से व्यवस्थित करना होगा, कि आप न सिर्फ अपने पूरे दिन का कार्य सही रूप से संचारित करे साथ ही आने वाले दिनों के लिये पर्याप्त संसाधनों को सृजन करें।

ईश्वर ने प्रकृति में जो पर्याप्त संसाधन दे दिये हैं व प्रकृति उन्हें पुनः बना भी रही है, परन्तु मानव प्रकृति के व स्वंयम् के भी संसाधनों को समाप्त करने में लगा है। एक सजग गुरू का दायीत्व यही होगा है कि व साधक के जीवन को साधन व संसाधनों से हिन न होने दे। इसी के लिये गुरू अपने शिष्य के लिये हर उस विशेष दिवस काल पर एक साधना, मंत्र जप, प्रयोग, दीक्षा अवश्य बतलाते हैं। जिसके प्रयोग से साधक पूर्णता को प्राप्त कर अपना जीवन सरल व समृद्ध बना सके।

आप सभी विशिष्ट पर्वों पर साधना, मंत्र-जप कर सकते हैं पर जो साधना गुरू के सानिध्य में एक दिव्य स्थान पर साधना सम्पन्न करे तो उसका लाभ कई गुना बढ़ जाता है व साधक सही विधान से व बिना किसी सामग्री के अभाव से पूर्ण कर सकते हैं, अतः आपको जब भी समय मिले तो आप कैलाश सिद्धाश्रम, जोधपुर आकर गुरू सानिध्य में साधना सम्पन्न करें।

28 मई को हर्ष बावल योग युक्त आद्या शक्ति धूमावती सर्वकामना पूर्ति शिव-गौरी धनदा साधना पर्व है। पूर्ण आत्मिक भाव से दीक्षा ग्रहण करने से जीवन की समस्त दूषित क्रियायें समाप्त हो सकेंगी व जीवन अनमोल स्वरूप में अमूल्य बन सकेगा।

आपका अपना
विनीत श्रीमाली

कैलाश सिद्धाश्रम

।।ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्योः नमः।।

आशीर्वाद-प्रेरक संस्थापक



डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी)

संस्थापक

गुरुदेव कैलाश चन्द्र श्रीमाली जी

सम्पादक

विनीत श्रीमाली

सह-सम्पादक

शोभा श्रीमाली

निधि श्रीमाली

संयोजक

प्रशान्त श्रीमाली

सह-संयोजक

स्वामी पूर्णानन्द, भैरवनाथ, चैतन्य कृपाशंकर

कार्यालय

प्राचीन मंत्र-यंत्र विज्ञान

कैलाश सिद्धाश्रम

1-C पंचवटी कॉलोनी

रातानाडा, जोधपुर से प्रकाशित

e-mail: Info@pmyv.net

website:www.pmyv.net

सदस्यता शुल्क

एक प्रति	₹ 40	पंच वर्षीय	₹ 2550
वार्षिक	₹ 500	दस वर्षीय	₹ 5000

मुद्रण

Dewan publication

ब्लाक-A, मायापुरी इण्डस्ट्रियल एरिया

phaseI, मायापुरी, नई दिल्ली

पत्रिका में प्रकाशित लेखो से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद, तर्क के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक जिम्मेवार नहीं होंगे। किसी भी वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा।



पत्र व्यवहार

कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर

1-C, पंचवटी कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर-342011

Mob. +917568939648, +918769442398,+918750757042 ✆ 0291-2517025

GurudevKailash www.pmyv.net +91-99508-09666

G-mail:Info@pmyv.net YouTube KAILASHSIDDASHRAM

बैंक विवरण

बैंक:	स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
शाखा:	Main Branch,Jodhpur
धारक:	शोभा श्रीमाली (Shobha Shrimali)
A/c No:	10827437957
Code:	659
IFSC:	SBIN0000659
SWIFT Code:	SBININBB215

बैंक:	स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
शाखा:	Main Branch,Jodhpur
धारक:	प्रशान्त श्रीमाली (Prashant Shrimali)
A/c No:	10827465907
Code:	659
IFSC:	SBIN0006490
SWIFT Code:	SBININBB215

प्रेरक-लेख

उपनिषद वाणी 06
व्यक्तित्व का निखार 11
गुरू पूर्णिमा 17
किसकी गोद में सिर छिपाऊँ 23
तुम प्यार से पुकारों तो सही! 25
ये है अष्ट सिद्धियां 28
जगदगुरू तुम्ही हो हमारा जीवनसार 30
श्री नरसिंह अवतार 39
मखाना 48
क्यों जरूरी है बच्चों के लिये Meditation 51

स्तम्भ

राशिफल 42
सद्गुरू वाणी 46
शिष्य धर्म 47
वराहमिहिर & कालनिर्णय 52

विशिष्ट

धूमावती क्षीर भवानी माला 19
इस माह में विशेषः साधना-दीक्षा 50

शक्तिपात दीक्षा

चार्तुमास्त्रीय देवत्व शक्ति प्राप्ति दीक्षा 02
पूर्णमदः पूर्णमिदं गुरू आत्म शक्ति दीक्षा 41
शत्रु संहारिणी त्रिपिण्ड माता वैष्णों धनदा वृद्धि.. 67

ENGLISH CORNER

Rituals & Articles

Pratyangira Sadhana 53
Every atom of my body has Gutu Tatva 56
Shravan Month is bringing..... 58
Gain Unlimited Wealth via Swarn Khap.. 61

इस माह की साधनायें



08 जगतगुरु श्री जगन्नाथ साधना



13 महामाया शिव शक्ति गुरु पूर्णिमा साधना



20 श्रावण मास शिव शक्ति पाशुपतास्त्रेय साधना



26 शिव-गौरी शिवोहम धनदा साधना



उपनिषद् वाणी

स्वर्ण के अनेकों प्रकार के आभूषण बन सकते हैं। अनेक रूप आकृति हो सकती है- सुन्दर या कुरूप, पर आकृति स्वर्ण नहीं है। यद्यपि आकृति स्वर्ण के बिना प्रगट नहीं हो सकती, आकृति का स्वयं कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। रूप का शुद्ध कोई अस्तित्व नहीं होता। रूप तभी दिखाई पड़ता है जब किसी पर रूपायित होता है।

ऐसे तो स्वर्ण अनेकों रूप धारण कर सकता है, परन्तु कोई भी रूप स्वर्ण नहीं हो सकता। स्वर्ण का रूप बदला जा सकता है परन्तु उसका स्वभाव स्थिर ही रहेगा। **स्वर्ण के जो गुण हैं, स्वभाव है वह बदल नहीं सकते, क्योंकि वह स्थिर है, बदलता है तो केवल उसका रूप, आकार।**

जगत में जो भी दिखाई पड़ता है वह सब रूप है। जिस पर यह रूप प्रगट होता है वह रूपमुक्त होता है। **उस रूपमुक्त की ही खोज को सत्य की खोज कहा गया है।** उसे खोजने के लिये रूप का त्याग करना पड़ता है... सब रूपों को छोड़ना पड़ता है, सब उपाधि छोड़नी पड़ती है, सब सीमाओं को तोड़ना पड़ता है, तब ही उस असीम और अनंत और शाश्वत के निकट पहुंचा जा सकता है।

जिस प्रकार एक बीज है वह आज बीज के रूप में है, कल वह पौधे का रूप हो जायेगा। जो बीज वृक्ष हो सकता है, उस बीज में जरूर कुछ निराकार छिपा है, जो बीज का आकार भी ले लेता है, कभी वृक्ष का आकार भी ले लेता है। उस अकेले एक बीज से संसार के सारे वृक्ष पूरी पृथ्वी को भर सकते हैं। एक बीज से एक वृक्ष पैदा होता है और उस वृक्ष पर करोड़ों बीज लग जाते हैं और फिर उन करोड़ों बीज को बोने पर एक-एक बीज से करोड़ो-करोड़ो बीज उत्पन्न हो जाते हैं। **एक बीज पूरी पृथ्वी को वृक्षों से भर सकता है।** इतना एक बीज में छिपा होता है, तो आकार में नहीं छिपा हो सकता है। क्योंकि एक बीज अनंत बीजों को पैदा कर सकता है। तो जो बीज का आकार है वह हमारी भ्रांति है, बीज का स्वरूप तो निराकार है। जहां भी आकार दिखाई पड़ता है, वहां हमारे कारण आकार दिखाई पड़ता है।

तो वस्तुतः हम बहार जब भी खोजने जायेंगे, हमें रूप ही मिलेगा, अरूप नहीं। **अगर अरूप को हमें खोजना है तो हमें भीतर जाना पड़ेगा और भीतर प्रवेश करते ही हम निराकार में प्रवेश कर जाते हैं।**

सत्य तो बाहर भी है, सत्य तो भीतर भी है, परन्तु मनुष्य को पहले सत्य को भीतर ही जानना होता है। जिस दिन भीतर वह जान लेता है निराकार को, उस दिन बहार भी निराकार ही रह जाता है। उस दिन आकार सिर्फ ऊपर से बैठी हुई आकृतियां रह जाती है- जो हमारी दी हुई आकृतियां हैं।

यह जो **निराकार** है, यह जो **सत्य** है, **ज्ञान** है, **अनंत** है, **आनन्द** रूप है, **उपाधि** रहित है, **शुद्ध सोने जैसा ज्ञान** और चैतन्य है, ऐसा जब **चैतन्य का भाव** होता है, तब यह सूत्र बहुत किमती है... ऐसे चैतन्य का जब भाव होता है तब उसे **'त्वम्'** कहकर पुकारा जाता है, 'तू' कहकर पुकारा जाता है, मैं कहकर नहीं- केवल तू, त्वम्।

जिस दिन किसी ऐसे **निराकार सत्य** का अनुभव होता है, उस दिन उसे मैं कहने का कोई उपाय नहीं रह जाता, क्योंकि मैं की तो सीमा है और जिसको हमने अब तक मैं कहा था वह तो बचता ही नहीं। मैं कहें या तू कहें। मैं नहीं कह सकते, क्योंकि **मैं** जब मिटता है तभी इस **निराकार का अनुभव** होता है। इसलिये एक ही उपाय बचता है असमर्थ भाषा के पास कि इसे तू कहें। इसलिये भक्तों ने परमात्मा को तू कहा है, उसे त्वम् कहा है।

अतः जिस व्यक्ति को ऐसे **शुद्धतम निराकार, उपाधिरहित** चैतन्य की जब प्राप्ति होती है, तब उसे त्वम्, तू कहा जाता है और यह तब होता है जब उसे परमात्मा का अनुभव होता है।



जहां तू केन्द्र पर होता है और मैं परिधि बन जाता है। जहां स्वयं को विसर्जित कर देने की ही प्यास शेष रह जाती है- एक ही अभिलाषा रह जाती है कि तू के लिये मैं को कैसे विसर्जित करें! यह **भक्त** की अवस्था है, धार्मिक व्यक्ति की अवस्था है। तू रह जाता है, मैं क्षीण होता चला जाता है, मैं पतली परिधि बन जाता है, तू केन्द्र हो जाता है। यह **निर्अहंकार भाव है।**

त्वम् शब्द उस शिष्य के लिये उपयोग किया जाता है, जो सीखने बैठा है, जिज्ञासा करने बैठा है, जब उसे **शुद्धतम चैतन्य** जाना जाता है, तब उसे तू नाम दिया जाता है। यह तू शब्द **प्रीतिकर** भी है, सत्य के निकटतर भी है और अगर कोई व्यक्ति इस तू के आस-पास जीवन को जीने लगे, तो अत्यंत **क्रांतिकारी** भी।

अगर कोई व्यक्ति इतना भी **स्मरण** रख सके सतत श्वास लेते-छोडते कि मैं नहीं हूं तू है, तो सिर्फ कुछ ही दिनों में उसे पता लगेगा कि चित्त के सारे तनाव विसर्जित हो गये, चित्त का सारा **संताप** गिर गया, चिंता खो गयी, क्योंकि चिंता के लिये, संताप के लिये, तनाव के लिये मैं की खूंटी बिलकुल जरूरी है, उसी पर टंगती हैं ये चीजें, उसके बिना नहीं टंग सकती। अगर इतना ही भाव गहन होता चला जाये कि **मैं नहीं हूं, तू ही है,** तो **एक दिन निश्चित ही आप पायेंगे कि चिंतित होना मुश्किल हो गया।** करना भी चाहें तो नहीं कर सकते हैं, क्योंकि चिंता मैं की छाया है और निश्चिंत तू की छाया है। तू का भाव प्रगाढ़ हो जाये कि तू ही है, तो निश्चिंतता अपने आप फलित हो जाती है।

साधक जब अपना **मैं** त्याग कर, मैं के रूप में अपने **अहंकार** को त्याग कर, अपने इष्ट देव स्वरूप **सद्गुरू** में जा मिलता है, वह त्वम् **'गुरू'** पर निर्भर हो जाता है तो उसे उक्त किसी भी **व्यथा, चिंता, परेशानी** जैसी किसी भी **मलिन** व **कुस्थितियों** का सामना कभी नहीं करना पड़ता। साधक को चाहिये कि वह त्वम् को अपना कर अपने **सद्गुरू** को समर्पित हो जाये फिर निश्चित ही परमात्मा को अनुभव करने का पात्र बन जाता है। जिसके पश्चात् जीवन में पाने को, जानने को, अनुभव करने को कुछ शेष नहीं बचता। ऐसी स्थिति को जीवन में **पूर्णता प्राप्त** करना कहा जाता है।

आशीर्वाद के साथ
कैलाश श्रीमाली



जगत गुरू श्री जगन्नाथ साधना

'प्रत्येक व्यक्ति इस भौतिक शरीर रूपी रथ पर आरूढ़ है और बुद्धि उसकी सारथी है, मन चालक यंत्र है तथा इन्द्रिया घोड़े हैं, इस प्रकार मन तथा इन्द्रियों की संगति से यह आत्मा सुख या दु:ख को भोगती है' और इन सुख-दु:ख के बन्धनों से मुक्त होना नि:संदेह कठिन है, किन्तु इस 'जगन्नाथ साधना' के द्वारा इनसे विरक्ति प्राप्त होती है तथा अद्वैत अवस्था को प्राप्त करने पर मोक्ष की प्राप्ति संभव है।

मन को समस्त प्रकार की दुश्चिन्ताओं से शुद्ध करने के लिये यह परम शक्तिशाली एवं दिव्य विधि है, क्योंकि भगवान जगन्नाथ जी की साधना कर मनुष्य उन सब वस्तुओं के प्रति अनासक्त हो जाता है, जो मन को भ्रमित करने वाली होती है। मन को उन सारे कार्यों से विरक्त कर लेने पर ही मनुष्य सुगमता पूर्वक वैराग्य प्राप्त कर सकता है। वैराग्य का अर्थ है- पदार्थ से विरक्ति और मन का आत्मा में प्रवृत्त होना... और यह 'जगन्नाथ साधना' से ही संभव है।

जग के नियन्ता, जग के पालनकर्ता अर्थात् 'कृष्ण', जिनका एक करूणामयी स्वरूप जगन्नाथ भी है,

'जगन्नाथ' अर्थात् जग के नाथ, जिन्हें 'जगत गुरू' भी कहा गया है और उसी प्रेममयी, करूणामयी प्रतिमूर्ति के साक्षात् दर्शन, पूजा-आराधना करना जीवन का परम सौभाग्य कहलाता है।

श्री जगन्नाथ जहां अपने इस स्वरूप में भक्तों के समक्ष विद्यमान हैं, उस स्थल को जगन्नाथ पुरी के नाम से जाना जाता है, जो सही अर्थों में अद्वैत भाव का आश्रय स्थल है। हजारों लाखों की संख्या में भक्तजन श्री जगन्नाथ भगवान के दर्शन करने के लिए दूर-दूर से वहां आया करते हैं, क्योंकि ऐसा कहा जाता है, कि जो भी व्यक्ति वहां सच्चे मन से, श्रद्धा-भावना से कुछ मांगता है, उसकी वह इच्छा शीघ्र ही पूर्ण हो जाती है।

यहां के वातावरण में ऐसी विशेषता है, कि किसी भी व्यक्ति या साधक को यहां पहुंचते ही एक अजीब सी शांति महसूस होने लगती है और वह वहां के वातावरण की मोहक सुगन्ध में ही कहीं खोकर ध्यानावस्था में स्वत: ही चला जाता है, उसका मन शुद्ध, परिष्कृत व अद्वैतमय बन जाता है।

जीवन में मोक्ष-प्राप्ति के लिए अद्वैत अवस्था को प्राप्त करना अनिवार्य होता है, किन्तु व्यक्ति स्वयं इस स्थिति को प्राप्त करने में असमर्थ है। कहा जाता है, कि एक बार द्वारिका में रोहिणी, रूक्मिनी और सत्यभामा तथा अन्य पटरानियों के साथ विश्राम कक्ष में बैठी हुई थी, और यूं ही माता रोहिणी कृष्ण की लीलाओं से उन्हें अवगत कराते हुये हंसी-ठिठोली कर रही थी, तभी सुभद्रा ने हंसते हुये माता रोहिणी से कहा, कि 'आप भाभियों को कृष्ण गोकुल में कैसे रहा करते थे, वह वृत्तांत सुनाइये' यह सुनकर रोहिणी की स्मृतियां, जब उन्होंने कृष्ण को पालने में झुलाया था से लेकर उनके बड़े होने तक की सभी बातें पुन: उनके मानस-पटल पर अंकित हो गई, और उनकी आंखों से अश्रुकण छलकने लगे, तभी सुभद्रा ने कहा, कि 'मेरे यह कहने से अगर आपको दु:ख पहुंचा हो तो मैं क्षमा चाहती हूं।'

रोहिणी बोली – 'नहीं, मेरा मन तो उनके लीलामय स्वरूप को याद करके आनन्दित हो उठा था, इसीलिये ये आंसू निकल आये, किन्तु सुभद्रा मैं उनके स्वरूप का वर्णन अगर इन होठों से करूंगी, तो कृष्ण अपनी यादों में खो जायेंगे और दु:खी हो जायेंगे, इसलिये मैं नहीं चाहती, कि वे मेरी बातों को सुनकर व्यथित हो जाये', तब सुभद्रा ने माता रोहिणी को आश्वासन देते हुये कहा, कि 'आप चिन्ता न करें, आप निश्चिंत होकर उनके बारे में हमें बतायें, मैं कक्ष के दरवाजे पर खड़ी कृष्ण को देखती रहूंगी और उन्हें अन्दर न आने दूंगी।'

माता रोहिणी तब रूक्मिनी, सत्यभाषा सभी को कृष्ण की अनंत कथा, जो उनके गोकुल में बिताये सुन्दर व आनन्ददायक क्षण थे, सुनाने लगीं और सुनाते-सुनाते खुद भी इतना डूब गई, कि मानो वह समय ही लौट आया हो, तभी कृष्ण और बलराम भी कक्ष के बाहर आ पहुंचे, और जैसे ही अनदर जाने लगे सुभद्रा ने उन्हें रोक दिया, और कहा- 'मां रोहिणी के आज्ञा के बिना आप भीतर प्रवेश नहीं कर सकते और जब तक माता की अनुमति नहीं होगी, तब तक मैं आपको अन्दर नहीं जाने दूंगी' कृष्ण और बलराम दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा और वापिस मुड़कर जाने लगे, तभी कृष्ण को कुछ आवाजें कक्ष से बाहर जाती हुई सुनाई दीं, उन आवाजों को सुनकर कृष्ण के पांव वहीं ठहर गए, अपनी ही जीवन लीला को सुनकर वे इतना अधिक खो गये, कि उनके अनत:करण से, उनके रोम-रोम में करूणा का सागर बहने लगा।

दूर खड़े नारद मुनि इस दृश्य को बड़े आनन्द के साथ आत्मसात कर रहे थे, और गदगद कण्ठ से कृष्ण के निकट आकर बोले, 'हे प्रभु! आप तो करूणा निधान है, दया के सागर है, प्रेम स्वरूप है, आप अपने भक्तों पर कृपा कर तथा जन-कल्याण हेतु अपने इसी दिव्य स्वरूप को यहां स्थापित कर दीजिये, जिससे आपके इस प्रेममयी, करूणामयी स्वरूप को देख सभी मनुष्य मेरी तरह ही धन्य-धन्य हो सकें, और अपने जीवन के समस्त सुखों को प्राप्त कर सकें, जो भी यहां आपके दर्शन हेतु आये, वह आपकी कृपा-वर्षा से आप्लावित हो सके, और एक अपूर्व शांति प्राप्त कर सके, लीन हो सकें आप में', तभी से वहां श्री कृष्ण अपने एक अंश स्वरूप में 'जगन्नाथ पुरी' के नाम से विख्यात हो गये।

जगन्नाथ पुरी एक दिव्य तीर्थ स्थल है, जहां पहुंच कर प्रभु-चिन्तन में मग्न हो साधक की समाधि भी लग जाती है, क्योंकि कृष्ण अपने प्रेममयी स्वरूप में ही वहां हर क्षण विराजमान रहते हैं और उन्हीं कृष्ण की आराधना-साधना करना ही जीवन का अखण्ड सौभाग्य है।

जगन्नाथ साधना के माध्यम से साधक उस दिव्य तीर्थ स्थल के पुण्य को घर बैठे ही प्राप्त कर सकता है और

साथ ही इस साधना में सिद्धि प्राप्त कर, वह उनके साक्षात् दर्शन भी प्राप्त कर सकता है।

जीवन में पूर्ण आध्यात्मिकता एवं अपने इष्ट के दर्शन हेतु 'जगन्नाथ साधना' ही श्रेयस्कर है। योगियों और ऋषियों आदि की बात तो अलग है, किन्तु गृहस्थ व्यक्ति के लिये अद्वैत स्थिति को प्राप्त करना अत्यंत कठिन है, परन्तु इस सिद्धि को प्राप्त कर, वह जीवन के समस्त सुखोपभोग को प्राप्त कर, सुखमय जीवन व्यतीत करते हुये अद्वैत स्थिति को प्राप्त कर सकता है और यही जीवन की श्रेष्ठता है, पूर्णता है, सर्वोच्चता है, जो इस सिद्धि द्वारा साधक को प्राप्त हो जाती है, क्योंकि भगवान श्री जगन्नाथ करूणा के सागर है, दयानिधि हैं, दु:खों को दूर कर शत्रुओं का नाश करने वाले हैं।

यह एक गुह्य साधना है, जिसका ज्ञान बहुत ही सीमित लोगों के पास है, उसी का संक्षिप्त विवरण पहली बार ही इस पत्रिका में आपके सम्मुख प्रकशित किया जा रहा है।

साधना सामग्री- त्रिमुखी शंख, माधव प्रिया गुटिका, रोहिणी माला।

साधना समय- 20 जून, प्रात: 5 बजे से सायं 07:37 बजे तक

प्रयोग विधि

यह तीन दिन की साधना है। साधकों को चाहिये की वे प्रात: 4 बजे उठे, स्नान आदि से निवृत्त होकर, सभी साधना सामग्रियों के साथ, शांत मन से पीले आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठ जायें, फिर अपने सामने एक छोटी चौकी पर पीला कपड़ा बिछाये और एक थाली, उसमें कुंकुम या केसर से 'ऊँ' बनाये एवं उसमें चावल की ढेरी बनाकर उस पर 'त्रिमुखी शंख' स्थापित कर दें, फिर शंख में पीले रंग का चावल भर दें।

इसके ऊपर मनोवांछित 'माधव प्रिया गुटिका' स्थापित कर दें तथा 'रोहिणी माला' को शंख के ऊपर पहना दें, और फिर कुंकुम, धूप व दीप से गुटिका एवं शंख का पूजन करते हुये बांये हाथ में कुछ चावल लेकर दाहिने हाथ से उन्हें कृष्ण के 21 नामों का उच्चारण करते हुये, उस शंख व गुटिका पर चढ़ाये-

ऊँ कृष्णाय नम:
ऊँ गोपालाय नम:
ऊँ गोविन्दाय नम:
ऊँ जगन्नाथाय नम:
ऊँ गोवर्धनाय नम:
ऊँ माधवाय नम:
ऊँ अच्युताय नम:
ऊँ केशवाय नम:
ऊँ दामोदराय नम:
ऊँ श्रीधराय नम:
ऊँ द्वारिकानाथाय नम:
ऊँ द्रौपती रक्षकाय नम:
ऊँ नारोत्तमाय नम:
ऊँ ब्रजेश्वराय नम:
ऊँ यशोदा नन्दनाय नम:
ऊँ नंद-नंदनाय नम:
ऊँ गोपीजन वल्लभाय नम:
ऊँ अर्जुन प्रियाय नम:
ऊँ योगेश्वराय नम:
ऊँ श्रेष्ठाय नम:
ऊँ मनोहराय नम:

यह पूजन सम्पन्न करने के पश्चात् निम्न मंत्र का तीन दिन तक रोहिणी माला से दो माला जप करें, जप के पश्चात् माला को शंख पर पहिनाये।

मंत्र

।। ऊँ जगन्नाथो कृष्णाय सोलह कलायें प्राप्यथ नम: ।।

तीसरे दिन सभी पूजा सामग्रियों को (शंख और गुटिका को छोड़ कर) शेष जल में प्रवाहित कर दें।

यह साधना अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है, यथासंभव प्रत्येक साधक को इसे पूर्ण मनोयोग से सम्पन्न करना ही चाहिये, इस साधना से साधक को अध्यात्म पथ पर बढ़ने के लिये अधिकाधिक प्रेरणा प्राप्त होती है, साथ ही इस स्वरूप की साधना से कृष्ण के प्रत्यक्षीकरण का दिशा-निर्देश भी होता है।

इस साधना से कृष्ण करूणामयी स्वरूप में मुक्ति प्रदान करते हैं, तथा जीवन के हर क्षेत्र में पूर्णता प्रदान कर साधक के जीवन को रसमय एवं प्रेममय बना देते हैं, क्योंकि शुष्कता जीवन का अभिशाप है, अत: यह साधना प्रत्येक साधक के लिये अपेक्षित है।

न्यौछावर ₹ 800/-



व्यक्तित्व का निखार

यदि आपके पास प्रचुर धन-सम्पत्ति, ख्याति या राजनीतिक सत्ता है तो आप किसी को भी प्रभावित कर सकते हैं, परन्तु यदि यह आपके पास नहीं है तो भी ऐसा नहीं है कि आप ऐसा नहीं कर सकते। हॉ, तब आपको अपने रहन-सहन एवं व्यवहार में बदलाव करने होंगे। ये बदलाव सरल एवं सहज हैं। साधारणत, इन बदलावों में कुछ **व्यय** भी नहीं होता, लेकिन इनसे आपका व्यक्तित्व उभरता है जिससे आपके आस-पास का व्यक्ति आपसे प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकता है।

व्यक्ति का आधार स्तंभ संस्कार है। मानव जिन संस्कारों पर चलेगा, उसका व्यक्तित्व स्वयं उनके अनुरूप परिवर्तित हो जायेगा। व्यक्ति में जिस तरह के संस्कार होंगे उसी तरह की मानसिकता उसमें पैदा होगी और वह इंद्रियों द्वारा उसे कार्य रूप में परिणत करेगा। मनुष्य अपने संस्कारों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में समय-समय पर प्रकट करता रहता है।

जीवन में आगे बढ़ते रहने के लिये शिष्टाचार बहुत ही उपयोगी है। प्रत्येक माता-पिता का यह कर्तव्य है कि वे अपनी संतान को बचपन से ही स्कूली शिक्षा के साथ-साथ कुछ व्यवहारिक ज्ञान भी देते रहें। इस व्यवहारिक ज्ञान में शिष्टाचार का महत्वपूर्ण स्थान है। शिष्ट व्यक्ति का प्रत्येक स्थान पर सम्मान होता है, उसकी बड़ाई होती है तथा परिवार एवं समाज उसकी सराहना करते हैं। फलस्वरूप उसके व्यक्तित्व में विशेष रूप से निखार आता है। व्यक्ति को हंसमुख होना चाहिये, हंसना व्यक्ति के लिये उतना ही जरूरी है, जितना जरूरी आहार एवं जल है। हंसने से मानसिक शक्ति मिलती है। अतः हंसने और हंसाने की कला व्यक्तित्व में और अधिक आकर्षण पैदा करती है।

जीवन अमूल्य है, अतः इसे व्यर्थ की **चिंता** और **तनाव** की आग में जला कर समाप्त करना कोई बुद्धिमत्ता नहीं। बुद्धिमत्ता है हंसने-हंसाने में, दूसरे को प्रसन्नचित करने में, व्यक्ति को जो आनन्द मिलता है वह सर्वोच्च है। हंसिये, हंसाइये और प्रसन्नचित रहिये, यही जीवन का मूल संदेश है।

भाग्य की रेखाये व्यक्ति स्वयं अपने कर्मों से बनाता है। मेरा भाग्य ही खराब है- ऐसी **लज्जाजनक** बातें आत्मविश्वासी, लगनशील और कर्मयोगी कभी नहीं करते हैं। मनुष्य को अपने भाग्य पर नहीं, परन्तु अपने चरित्र पर निर्भर रहना चाहिये।

इस तथ्य को हमेशा याद रखना चाहिये कि आपका कार्य कोई दूसरा व्यक्ति नहीं करेगा। आपको स्वयं पूर्ण विश्वास एवं जोश के साथ अपने काम में लगना है। यह सदा स्मरण रखें कि ईश्वर भी उसी की सहायता करता है जो स्वयं अपनी सहायता करता है। अपने आत्मबल को निरन्तर बरकरार रखिये, परिस्थितियां चाहे कितनी भी विपरीत क्यों न हों, आत्मबल से प्रतिकूलता धीरे-धीरे स्वतः अनुकूलता में परिवर्तित हो जाती है।

दृढ़ता जीवन में सफलता का स्तंभ होती है। इसी के द्वारा इच्छा शक्ति सुदृढ़ होती है, इच्छा शक्ति और ध्येयनिष्ठा मिल कर सफलता निश्चित करती हैं। इनसे बढ़ कर उपलब्धि का उपाय भला और क्या हो सकता है?

जीवन में विनम्र या निरंहकार होना बहुत बड़ा गुण है, परन्तु इस गुण की अधिकता व्यक्तित्व के विकास में बाधा होती है। यदि आपमें कोई खास गुण हैं, चाहे वह ललित कला, व्यावसायिक प्रतिभा या शैक्षणिक जीवन से ही संबंधित क्यों न हो उसे छिपायें नहीं, उजागर करें ताकि व्यक्ति उक्त क्षेत्र में

आपकी उपलब्धि को मात्र मान्यता ही न दे, बल्कि उसे एक उदाहरण के रूप में भी पेश करे। व्यक्ति के पास न तो इतना वक्त होता है और न ही उसमें इतनी रूचि होती है कि वह अपने मित्रों की प्रतिभा को खोजे। अतः आपको स्वयं ही अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन एवं प्रचार करना होगा ताकि आप अपने क्षेत्र के लोगों को प्रभावित कर प्रेरित कर सकें। आपका यह कदम निश्चय ही आपको एक विशेष व्यक्ति बना देगा, अतः दूसरों पर अपना प्रभाव बनाने के लिये किसी एक काम में महारथ हासिल करना चाहिये, जिससे कि कोई साधारण व्यक्ति उस काम में आपकी बराबरी न कर सके।

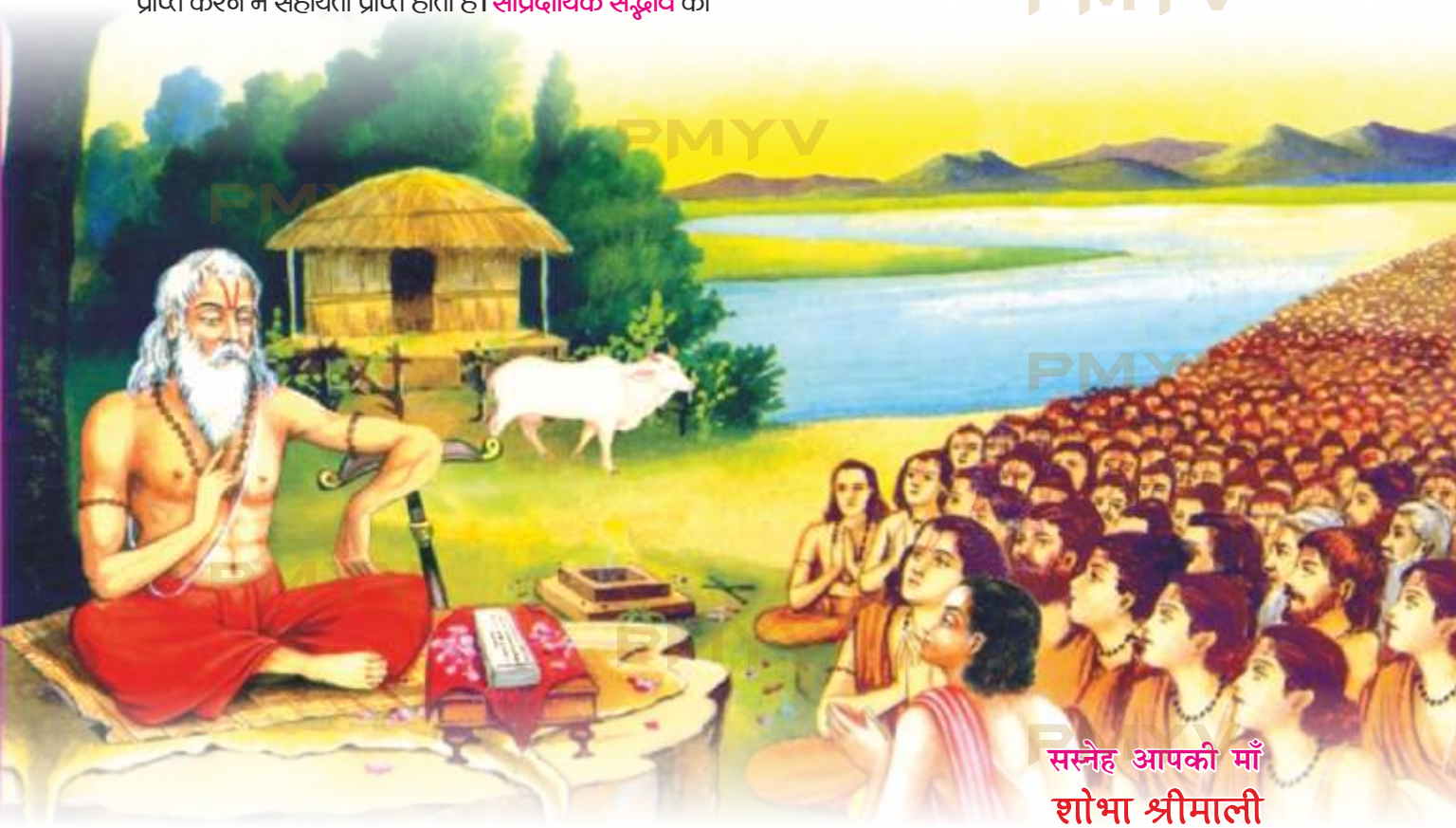
अनुभव, अधिक कष्ट सहन करना है और अधिक अध्ययन- यही विद्वता के तीन स्तंभ हैं। सदैव सत्साहित्य को अपनाना चाहिये। घर में भी बच्चों को इस बात की शिक्षा देनी चाहिये कि वे हमेशा अच्छी ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें एवं पत्रिकाये पढें। प्रत्येक घर में अपने-अपने धर्म के अनुकूल ग्रंथ रखने, नियमपूर्वक पढ़ने एवं उनका **मनन** करते रहना चाहिये। भगवद्गीता, रामायण समेत अन्य धार्मिक ग्रंथ प्रत्येक को अपने घर में अवश्य ही रखना एवं पढ़ना चाहिये, साथ ही मनन करते रहने से सुविचारों एवं सुंदर भावों का उदय होता है, जिससे मन पवित्र होता है। मस्तिष्क में सुंदर विचार रहने से विकास का पथ प्रशस्त होता है और घर में खुशहाली, प्रसन्नता एवं सुस्थितियों में निरन्तर वृद्धि होती रहती है। तन-मन निरोग एवं प्रसन्न रहता है, जिससे जीवन के परम लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता प्राप्त होती है। सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ाने में भी इन ग्रंथों की अहम भूमिका रहती है, क्योंकि सभी धर्म एकता एवं भाईचारे का ही उपदेश देते हैं, अतः इन ग्रंथों को पढ़ने एवं मनन करने से प्राणिमात्र के प्रति सद्भाव बढ़ेगी जो विश्वबंधुत्व का पथ प्रशस्त करेगी।

मनुष्य को वह आचरण करना चाहिये जो कम-से-कम **विकार** पैदा करे और बुद्धि उसके प्रति सावधान करती रहे।

जीवन में एक श्रेष्ठ गुरू का चुनाव करें, क्योंकि श्रेष्ठ गुरू ही अपनी ज्ञान, चेतना व शक्ति से हमारे जीवन को सुमार्ग की ओर प्रशस्त करते हैं। गुरू से जुड़ाव नित्य जुड़ाव बनाये रखने से सुसंस्कार, सुविचार व सुकर्म का ज्ञान प्राप्त होता है। जीवन को सही रूप में हर्ष, आनन्द, उत्साह के साथ जीने का ज्ञान प्राप्त होता है। गुरू ही हमें जीवन में पूर्णता प्रदान करते हैं, जो मानव जाति के लिये परम आवश्यक है।

हमारे जीवन में अभ्यास का बड़ा महत्व है। किसी भी कार्य में परांगत होने के लिये उस काम को जल्द-से-जल्द करना एवं करते रहना अत्यावश्यक है। किसी भी जानकारी को स्मरण रखने यानी बेहतर जानकारी के लिये उस जानकारी को दुहराते रहना भी अत्यावश्यक है। ठीक इसी प्रकार व्यक्ति को भी निरन्तर अपने गुरू के सानिध्य में शामिल होना चाहिये।

इसी तरह इन उपायों को अपना कर हम अपने व्यक्तित्व का विकास बेहतर ढंग से करके जीवन को सुखमय और सार्थक बना सकते हैं।



सस्नेह आपकी माँ
शोभा श्रीमाली



महामाया शिव शक्ति गुरू पूर्णिमा साधना

प्रत्येक शिष्य एवं साधक की यही हार्दिक इच्छा होती है, कि वह अपने जीवन में कम से कम एक बार पूर्णता के साथ गुरू साधना अवश्य करे। यद्यपि साधक के पूर्वजन्मकृत संस्कार उसे किसी देवी या देवता के प्रति भी आकृष्ट करते ही रहते हैं। इसी को साधना जगत में 'इष्ट' की संज्ञा दी गई है और इसी पूर्वजन्मकृत संस्कार के फलस्वरूप ही कोई साधक शिवभक्त होता है, तो कोई कृष्ण भक्त, किसी को देवी साधना में आन्तरिक तृप्ति मिलती है, तो किसी को गणपति साधना ही सारभूत साधना प्रतीत होती है।

अनेक मतमतान्तरों से भरे हिन्दू धर्म में सबको ही समुचित सम्मान दिया गया है और जब साधक वास्तव में ही अपने इष्ट से तादात्म्य स्थापित करने की स्थिति में आ जाता है, तभी वह समझ जाता है, कि वस्तुत: भेद तो कहीं है ही नहीं। इस स्थिति तक पहुंचने के पहले सबको एक ही मानना अथवा कहना मिथ्या प्रलाप से अधिक कुछ है नहीं। केवल ऐसा साधक ही इष्ट को अपने गुरू में साक्षात अनुभव कर सकता है।

इसी कारणवश गुरू साधना केवल एक प्राथमिक साधक के ही जीवन की आवश्यकता नहीं, वरन उच्च स्तर तक पहुंच गये साधक की भी प्रथम आवश्यकता है। प्राथमिक साधक गुरू का अवलम्बन इस कारण से लेता है, क्योंकि उसे अपने इष्ट तक पहुंचने का उपाय प्राप्त करना होता है और उच्च स्तर पर पहुंच गया साधक इसे (गुरू साधना को) इस कारणवश सम्पन्न करना चाहता है, क्योंकि गुरू साधना का तात्पर्य केवल गुरू की भक्ति ही न होकर जीवन के उन आयामों को प्राप्त करना होता है, जो कि केवल साधना के द्वारा ही प्राप्त किये जा सकते हैं। गुरू की आत्मा एवं प्राण साधना में ही निवास करती है और साधक किसी भी रूप में

किसी भी साधना का अवलम्बन क्यों न ले, वास्तव में उसे गुरू साहचर्य की ही प्राप्ति होती है।

इसके उपरान्त भी गुरू साधना करने की फिर आवश्यकता ही क्या है?

इसका कदाचित सबसे अधिक उपयुक्त उत्तर यही हो सकता है, कि गुरू साधना के माध्यम से व्यक्ति स्वयं ही अपने अन्दर गुरूत्व धारण करने की वह क्रिया करता है जिसके द्वारा वह कालान्तर में किसी भी सिद्धि अथवा लक्ष्य तक पहुंच सकता है।

गुरू साधना का अर्थ गुरूदेव को प्रसन्न करना भी नहीं होता, क्योंकि वे तो अपने 'सदाशिव' स्वरूप में सदैव प्रसन्न रहते ही हैं। शिष्य के कल्याणार्थ वे उसके विषों का सहर्ष पान करते ही रहते हैं, किन्तु जब वे अनुभव करते हैं, कि उनके शिष्य ने स्वयं को 'साधित' करने की अपेक्षा उनकी भक्ति ही प्रारभ कर दी है तो उन्हें क्लेश अवश्य होता है, क्योंकि गुरू से यह सूक्ष्म भेद नहीं छुपा सकता, कि उनका कौन सा शिष्य, किस भावना के वशीभूत होकर, उनसे क्या निवेदन कर रहा है।

इसी कारणवश आदर्श साधक तो वही है, जो प्रत्येक स्थिति में साधना का अवलम्बन लिये ही रहे। नित-नूतन पद्धतियों का ज्ञान प्राप्त करता ही रहे। केवल साष्टांग रूप से गुरूदेव के समक्ष बिछ जाना ही समर्पण नहीं होता, वरन उनके मानस से तादात्म्य स्थापित करने का प्रयत्न करते हुये उसी अनुरूप कार्य करने की चेष्टा करना भी 'समर्पण' होता है और गुरूदेव इसी समर्पण को अधिक प्रसन्नता से स्वीकार करते हैं।

हमारी पात्रता ऐसी नहीं है, कि हम गुरूदेव के विचारों को उनके ही अनुरूप समझ सकें, क्योंकि विविध वासनाये एवं संस्कार हमें विचलित करते ही रहते हैं, इस दशा में साधना ही वह मार्ग शेष रह जाता है,जो मार्ग के ऐसे संस्कार रूपी कंकड़ों को हटा सके और साधक अधिक तीव्रता से अपने लक्ष्य तक जा सके- 'गुरू सेवा' करते हुये।

'गुरू सेवा' साधना का सर्वोच्च स्वरूप अवश्य है, किन्तु यह ध्यान में रखना आवश्यक है, कि केवल वही व्यक्ति गुरू सेवा कर सकता है, जो 'शिष्यता' से युक्त हो, क्योंकि वही गुरू की इच्छा को समझने की (भले ही कुछ अंशों में) पात्रता रखता है। केवल कार्यरत हो जाना ही गुरू सेवा नहीं होती, वरन ऐसी 'सेवा' तो कालान्तर में कई विरोधाभासों को ही जन्म दे देती है। अत: जिन साधकों के मन-मस्तिष्क में यह भ्रम हो, कि वे मात्र गुरूदेव के समीप होने से अथवा कार्यरत रहने से ही साधनात्मक जीवन की उच्चता में प्रवेश कर गये हैं, उन्हें अपने आप में संशोधन कर ही लेना चाहिये। 'गुरू' से अधिक महत्ता 'गुरूत्व' की मानी गई है तथा गुरूतत्व को समुचित आदर न देना मूढ़ता का लक्षण माना गया है-

यज्ञो दानं जपस्तीर्थं व्रतं धर्मपरं चं यत्।
गुरू तत्त्वमविज्ञाय मूढ़ास्तेऽन्यपरा जना:।।

अर्थात- 'मूढ़ लोग ही गुरूतत्व को न जानकर यज्ञ, दान, तपस्या, तीर्थ, व्रत एवं अन्य धर्मों का आश्रय लेते हैं' (उनका परायण करते हैं)।

वस्तुत: गुरूदेव तो किसी भक्ति को प्रश्रय देते ही नहीं है, किन्तु यह हमारे देश की विशेषता रही, कि जब-जब उसने किसी आचरण को ग्रहण करने में कठिनाई अनुभव की, तब-तब बड़ी सूक्ष्मता से उस आदर्श या आचरण की वन्दना ही प्रारम्भ कर दी। साधक को इस दुर्गुण से सावधान रहना चाहिये और केवल आत्मोन्नति की दृष्टि से ही नहीं, वरन गुरूदेव की प्रियता प्राप्त करने की दृष्टि से भी साधना का अवलम्बन निरन्तर ग्रहण किये रहना चाहिये।

पूज्यपाद गुरूदेव के सहस्त्रों शिष्यों में से ऐसे अनेक शिष्य हैं, जो अपनी क्षमता भर प्रयास करते ही रहते हैं, कि वे किस प्रकार से पूज्यपाद गुरूदेव की संतुष्टि का हेतु बन सकें, उन्हें प्रसन्न कर सकें, उनके तनाव के क्षणों में कुछ कमी ला सकें।

यह लेख एवं साधना ऐसे ही श्रेष्ठतम शिष्यों को समर्पित है, जो यह समझ सके है, कि वे गुरू की सेवा तभी कर सकेंगे, जब वे स्वयं किसी 'गुरूत्व' से आपूरित होंगे।

गुरू साधना केवल कुछ मंत्र जप कर लेने की क्रिया ही नहीं होती, वरन अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को बदलने की क्रिया होती है। अपने दुष्चिन्तनों, कुसंस्कारों को पहचानते हुए, निरन्तर उनसे संघर्ष करते हुये अपने आपको एक नवीन व्यक्तित्व में परिवर्तित करने की क्रिया ही यथार्थत: 'गुरू साधना' है।

मंत्र विशेष इसी कार्य में सहयोग देते हैं। साधना विशेष इसी आंतरिक भावना को त्वरा देने के साथ ही साथ उन उपायों को भी सुलभ करती है जिससे साधक अल्प समय में ही अपने लक्ष्य तक पहुंच सके।

जो साधक गुरू साधना को ही अपने जीवन का आधार बना लेते हैं, उनके सौभाग्य की तो कोई उपमा ही नहीं दी जा सकती, क्योंकि ऐसे साधक पर गुरूदेव की सीधी दृष्टि होती है और जब वे स्वयं अनुभव कर लेते हैं, कि मेरे इस विशेष साधक का लक्ष्य केवल आत्मोन्नति को माध्यम से जन सामान्य के लिये हितकारी बनना है, तो वे ऐसी अनेक

विभूतियां स्वयं प्रदान कर देते हैं, जिनका शिष्य को ज्ञान तक नहीं होता है।

साधना जगत के विषय में हमारा ज्ञान है ही कितना ?

हम तो कुछ सिद्धियों एवं धन आदि को ही साधना का फल मानकर बैठे हैं, जबकि साधना के तो इतने अधिक आयाम हैं, जिनकी सामान्यत: कल्पना भी नहीं की जा सकती है। एक सम्पूर्ण योगी ही सम्पूर्ण रूप से ऐश्वर्याधिपति हो सकता है और वही भगवान शिव की भांति सर्वथा निर्लिप्त रह सकता है। जिस प्रकार भगवान शिव कुबेर के भी स्वामी होते हुये केवल बाघाम्बर एवं राख लपेटे रहते हैं, ठीक वहीं क्रिया किसी श्रेष्ठ साधक की भी होती है। जिसका भंडार भरा होता है वह प्रदर्शन नहीं करता और जिसके पास एक ही आभूषण होता है, वही उसे घुमा-फिरा कर दिखाने का उपक्रम करता रहता है।

गुरू साधना की भी यही सार्थकता है।

गुरू साधना के माध्यम से साधक के 'भंडार' इस प्रकार भरते चले जाते हैं, कि उसे अनुभव भी नहीं होता और जब वह किसी वस्तु की कामना करता है, तो पीछे मुड़कर देखने पर आश्चर्यचकित रह जाता है, कि उसके पास तो भंडार के भंडार भरे पड़े हैं। यद्यपि गुरू साधना का प्रथम पुष्प तो **विरक्ति, पीड़ा, तनाव** होता ही है...

इस तथ्य को छुपाया भी नहीं जाना चाहिये, क्योंकि जो साधक गुरू साधना में प्रवेश करने की इच्छा रखे, उसे यह बात स्पष्ट होनी ही चाहिये।

गुरू साधना में प्रवेश करने का अर्थ है- 'प्रेम के घर में प्रवेश कर जाना' और कबीरदास के ही शब्दों में इसके लिये तो बहुत कुछ त्यागने की मनोवृत्ति एवं साहस होना आवश्यक ही होता है-

कबीरा यह घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
सीस उतारे भुई धरे, सो पैठे धर माहिं।।

अपने लक्ष्य को अपने मन में स्पष्ट रखना 'लिप्सा' नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक साधक किसी न किसी 'प्राप्ति' के लिए ही तो गुरू-अवलम्बन ग्रहण करता है, किन्तु जहां वह कुछ मंत्र जप करके यह आशा करने लगता है, कि शीघ्र ही सभी सिद्धियां और वैभव उसी झोली में स्वत: आकर गिर जायेंगी, वहां वह निस्पृह नहीं अपितु स्पृहायुक्त है और ऐसे साधक को कम से कम गुरू साधना में कोई स्थान नहीं मिल सकता।

गुरू साधना तो एक प्रकार से आत्मीयता प्रगाढ़ करने की क्रिया है। शिष्य मानसिक रूप से जितना अधिक दृढ़ चिंतन युक्त होता जाता है, गुरूदेव के आदर्शों एवं लक्ष्यों की पूर्ति हेतु स्वयं को सक्षम बनाने में सफल होता जाता है, उतनी ही तीव्रता से गुरूदेव स्वयं उसके जीवन के अन्य पक्षों को सफल बनाने की क्रिया को सम्पन्न करते जाते हैं।

दुर्भाग्य से हमने साधना का अर्थ केवल 'सिद्ध' करना और उस 'सिद्धि' का मनमाना उपयोग करना ही समझ लिया है, किन्तु गुरू तो गुरू होते हैं। वे 'सिद्ध' हो ही नहीं सकते, यद्यपि 'रीझ' अवश्य सकते हैं। उनको 'रिझा' लेना ही इस साधना की सर्वोच्च उपलब्धि है।

गुरू साधना तो मुख्य रूप से एक आन्तरिक तालमेल को सम्पन्न करने की ही क्रिया है, नित्य आत्मविवेचन कर स्वयं को सन्नद्ध एवं सबल करने की युक्ति है और जिसे हम साधना कहते हैं, वह वास्तव में इन सभी बातों को पुष्ट करने का एक प्रकार ही होती है। केवल आन्तरिक चिन्तन से ही गुरू साधना में सफलता नहीं पाई जा सकती, न ही केवल मंत्र जप के माध्यम से गुरू साधना में सफलता पाई जा सकती है।

इसी मूल रहस्य को ध्यान में रख कर पत्रिका में समय-समय पर गुरू साधना की अनेक विधियां प्रकाशित की जाती रही है। 'मांत्रोक्त गुरू साधना', 'तांत्रोक्त गुरू साधना, 'शक्तियुक्त गुरू साधना' आदि इसी क्रम में आने वाली कुछ दुर्लभ पद्धतियां हैं।

'मांत्रोक्त पद्धति' जहां साधना मार्ग में प्रवेश करने वाले साधकों के लिये उपयुक्त विधि है, वहीं 'तांत्रोक्त पद्धति' उन साधकों के लिये अनुकूल है, जो साधना मार्ग में कुछ आगे बढ़ गये हैं। दस महाविद्या साधनाओं में प्रवेश करने के इच्छुक साधकों हेतु सर्वाधिक उपयुक्त पद्धति- 'शक्तियुक्त गुरू साधना' होती है।

इसके उपरांत भी गुरू साधना की इतिश्री नहीं हो जाती, अपितु अनेक आयाम शेष रह जाते हैं, जो न केवल प्राथमिक स्तर के साधक के लिये वरन उच्च स्तर के साधकों के लिये भी महत्वपूर्ण होते हैं। जिस प्रकार एक वायुमान, वह भले ही कितनी ही ऊंचाई तक उड़ने में सक्षम क्यों न हो, उसे पुन:-पुन: धरती पर आकर ईंधन प्राप्त करना ही होता है, ठीक उसी प्रकार साधनाओं के माध्यम से 'ईंधन' प्राप्त करते ही रहना पड़ता है, जिससे चित्त उनमुक्त होकर उस आकाश में विचरण कर सके जिसे आनन्द का आकाश कहा जाता है।

प्रस्तुत साधना, इसी श्रेणी की साधना है तथा इसे विशिष्ट साधकों के मध्य 'गुरू हृदयस्थ वशीकरण साधना' से जाना जाता है। इस साधना पद्धति में गुरू की उपासना केवल बीज रूप में की जाती है, अर्थात् उन्हें भौतिक स्वरूप

में न मानकर एक पुंज के रूप में देखा जाता है और उनसे सम्बन्धित स्वरूप वही होता है, जो कि उस बीज मंत्र विशेष का होता है।

बीज मंत्र केवल अक्षर नहीं होते वरन सम्पूर्ण स्वरूप ही होते हैं तथा साधक साधना के मध्य, अपनी पात्रता के अनुसार किसी क्रम पर इनका वास्तविक साक्षात भी कर लेता है। वस्तुत: बीज मंत्र का यही 'साक्षात' ही उससे सम्बन्धित देवी-देवता का वास्तविक स्वरूप होता है। गुरूदेव भी 'देव स्वरूप' ही तो हैं, अत: यह स्वाभाविक ही है, कि उनका भी मूल स्वरूप किसी बीज मंत्र के माध्यम से स्पष्ट हो।

प्रस्तुत साधना गुरू साधना के क्रम में एक अत्यन्त तीव्र एवं विस्फोटक प्रभाव की साधना है, जिसे केवल गुरू पूर्णिमा अथवा किसी गुरू पुष्य को ही सम्पन्न किया जा सकता है।

इस विलक्षण साधना को पूर्णता से सम्पन्न करने के लिए कुछ नियमों का दृढ़ता से पालन करना आवश्यक ही होता है।

इस साधना को सम्पन्न करने के इच्छुक साधक को चाहिये, कि वह साधना के निश्चित दिवस से लगभग तीन दिन पहले से ही यथासंभव मौन व्रत का आश्रय ले ले, केवल अत्यन्त आवश्यकता होने पर ही वार्तालाप करे, ब्रह्मचर्य का कठोरता से पालन करे, भूमि शयन करे तथा यथासंभव एक ही समय अन्न ग्रहण करता हुआ निरन्तर तीन दिनों तक प्रतिदिन कम से कम 21 माला गुरू मंत्र तो जप कर ही ले।

योग्य साधक पन्द्रह दिन की अवधि निर्धारित कर सवा लाख मंत्र जप का एक पुरश्चरण करके अपने आपको इस साधना हेतु सक्षम बनाते हैं।

साधना विधान

नियत दिवस गुरू पूर्णिमा 03 जुलाई शिव शक्ति सोमवार को साधक ब्रह्म मुहूर्त में उठें अथवा रात्रि के दूसरे प्रहर में इस साधना को सम्पन्न करें।

इस साधना हेतु उसके पास ताम्र पत्र पर अंकित 'गुरू बीज यंत्र' होना अति आवश्यक है, जो इस साधना का सर्वस्व है। इसके अतिरिक्त उसके पास चार 'लघु नारियल' एंव एक 'कमल गट्टे की माला' होनी भी शास्त्रोचित मानी गई है। साधक गहरे लाल रंग का नूतन गुरू पीताम्बर अवश्य ओढ़ें। पूजन हेतु उत्तर दिशा में बैठें। सर्वप्रथम यंत्र का पंचोपचार (गंध, पुष्प, धूप, दीप एवं नैवेद्य) पूजन करें तथा यंत्र के चारों कोनों पर एक-एक लघु नारियल स्थापित कर उन पर कुंकुम का टीका लगाये।

यंत्र पर दृष्टि एकाग्र रखते हुये भी निम्न ध्यान करें-

ध्यान- ऊँ बन्धूककांचननिभं रूचिराक्षमालां,
पाशांकुशैश्च वरदां निजबाहुदण्डै:।
बिभ्राणमिन्दुसकलाभरणं त्रिनेत्र,
मर्धाम्बिकेश मनिशं वपुराश्रयामि।।

ध्यान मंत्र के उच्चारण के बाद उसी प्रकार यंत्र पर त्राटक करते हुये कमलगट्टे की माला से निम्न 'गुरू बीज मंत्र' की कम से कम पांच माला जप अवश्य करें। केवल एक ही अक्षर का बीज मंत्र होने के कारण साधक इसे सरलतापूर्वक सम्पन्न कर सकते हैं-

गुरू बीज मंत्र- ।। श्रौं ।।

मंत्र जप के उपरांत मूल गुरू मंत्र की भी 01 माला सम्पन्न करें तथा पहले से प्राप्त किये गुये पूज्यपाद गुरूदेव के चित्र के समक्ष आरती प्रज्वलित कर पूर्ण भाव से, अपनी त्रुटियों की क्षमा मांगते हुये आरती सम्पन्न करें।

साधना की समाप्ति पर सभी सामग्री को विसर्जित कर दें।

गुरू पूर्णिमा पर साधना शिविर में आकर भी इस साधना को अवश्य सम्पन्न करें, क्योंकि इस साधना को साक्षात गुरू चरणों में बैठकर करने का सौभाग्य तो कुछ और ही है।

अत्यन्त लघु प्रकृति की यह साधना होने के कारण इसे सम्बन्धित दिवस की प्रात: उठकर अल्पकाल में इसे सम्पन्न किया जा सकता है।

वास्तव में इस प्रकार की साधना को सम्पन्न करने से साधक इस लाभ को और भी अधिक तीव्रता एवं सम्पूर्णता से ग्रहण कर पाता है, जो साधना शिविरों में पूज्यपाद गुरूदेव के शक्तिपात द्वारा प्राप्त होते हैं।

साधना के किसी भी स्तर पर खड़े साधक के लिये यह गुरू साधना एक नवीनता ही लेकर आयेगी, जिसका कुछ ही दिनों में साधक स्वयं अनुभव कर सकेगा।

इस साधना में स्वत: ही लक्ष्मी तत्त्व का समावेश है, जिससे यह जीवन के भौतिक पक्षों को भी समुन्नति करने में सहायक साधना है।

साधना सामग्री 900/- व महामाया शिव शक्ति सद्गुरूमय जीवन प्राप्ति दीक्षा 2100 /-

महामाया शिव शक्ति अटूट कुबेर लक्ष्मी प्राप्ति गुरू पूर्णिमा साधना महोत्सव

01-02-03 जुलाई रायपुर (छ.ग.)

शिविर स्थल: अग्रसेन धाम, सिटी मॉल के पास, G E Road-फूडहर मार्ग, रायपुर (छ.ग.)



गुरू से मिलन तो प्रथम दिवस ही हो जाता है
आगे की क्रिया तो जीवन गति है...
मुक्त करो जीवन को समाज की बंधी धारणाओं से
मिल जाओ गुरू विचार स्वरूप में...
'ईश्वर से परिचय मन की वृत्तियां ही करती हैं'

कभी किसी विद्वान का कहा यह वाक्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना कि कथन के अवसर पर रहा होगा और यह कदाचित भविष्य में भी रहेगा। ईश्वर या ईश्वर का कोई भी कल्पित स्वरूप वस्तुतः बाह्य नहीं होता, उससे कहीं अधिक व्यक्ति के अन्तर में होता है और यही कारण है, इस देश में देवताओं की विधिवता के पीछे भी। एक ओर श्रृंगार रस की पराकाष्ठा पर खड़े कृष्ण भी देवता हैं, तो वहीं श्मशान में निस्पृह और फक्कड़ भाव से लेटे भगवान शिव देव ही नहीं देवाधिदेव की संज्ञा से विभूषित हैं, एक ओर **दारिद्रय** की प्रतिनिधि बन भगवती धूमावती भी महाविद्या हैं, तो वही अत्युदात्त ऐश्वर्य से परिपूरित भगवती षोडशी भी उन्हीं दस महाविद्याओं में से एक है। यह तो जीव के मन की प्रवृत्ति होती है, कि उसे कौन सा स्वरूप भा जाता है या वह किस स्वरूप में अपने ही अन्तर्मन की पूर्ति प्राप्त कर उस स्वरूप को देवता मान लेता है या अधिक स्पष्टता से कहें, तो उसे देवता घोषित कर अपनी भावनाओं को एक सामाजिक, नैतिक मान्यता देने का प्रयास करता है। शायद कृष्ण ने भी इतना श्रृंगार रस में आनन्द न लिया होगा, जितना उनको देवता घोषित करके परवर्ती समाज ले लिया! और इसका सबसे पुष्ट प्रमाण है, रीतिकालीन कवियों की वे रचनाये, जिनके समक्ष तो आज का कोई अश्लील ग्रंथ भी नहीं टिक सकता है। यह एक बड़ी चतुराई पूर्ण व्यवस्था रही है, इस समाज की अपनी वासनाओं पर एक झीना सा पर्दा डालने की ओर आज भी यह प्रवृत्ति मृत नहीं हुई है। अन्ततोगत्वा इसमें **हानि** समाज की है, व्यक्ति की है, क्योंकि इस प्रकार के क्रिया कलापों के द्वारा ही व्यक्ति उस परम तत्व से पृथक हो जाता है, दूर होता चला जाता है।

गुरू द्वारा 'जन्म' देना अत्यन्त **पीड़ादायक घटना** कही गई है, क्योंकि 'जन्म' देने से पूर्व वे 'मृत्यु' देते हैं, व्यक्ति की पूर्व भावनाओं को, उसके पूर्वाग्रहों को... और पूर्वाग्रह तो प्रत्येक व्यक्ति के साथ चलते ही रहते हैं। यह पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण भी हो सकता है इस जन्म में सुनी-सुनाई, रटी-रटाई समाज की बद्ध धारणाओं के फलस्वरूप भी। केवल जिह्वा से 'गुरू-गुरू' की रट लगाने से ही जीवन में 'गुरू' उपलब्ध नहीं हो जाते हैं, केवल उनके चरण स्पर्श करने से या

उन्हें देखने से भी कोई आवश्यक नहीं, कि वे मन-प्राण और जीवन में समाहित हो ही जाये, क्योंकि समाहित तो वे तब हो सकेंगे जब हृदय पूर्ण समर्पण से युक्त होगा। जब तक वहां किसी और की मूर्ति बिठा रखी होगी, उसे छोड़ना ही न चाह रहे होंगे, तो वे समाहित होंगे, तो वे समाहित होंगे भी कहां?

यह सत्य है, कि प्रत्येक जीव को उसकी भावनाओं के अनुरूप प्रारम्भ में वैसा ही स्वरूप दिखाते हैं, क्योंकि मानव देह में प्रस्तुत होते निखिल ब्रह्माण्ड की ही एक सजीव प्रस्तुति जो होते हैं। जिनके विविध अंग-उपांग में अनेक देवी-देवता या उन देवी-देवताओं का लीला विचरण यूं तैर रहा होता है, जिस प्रकार से सुविस्तृत गगन में अनेक मेघ आते-जाते रहते हैं, किन्तु वे मेघ तो उस आकाश का स्वरूप नहीं होते, न उन मेघों से आकाश का कोई परिचय होता है। आकाश की अपनी शुभ्र नीलिमा होती है वही उसकी वास्तविक अभिव्यक्ति, उसका परिचय होता है और सही अर्थों में गुरू का तात्पर्य एक शुभ्र स्वच्छ आकाश ही होता है। यह अनायास नहीं है, कि इसी कारणवश गुरू की अभ्यर्थना 'अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः' के रूप में की गई है।

सम्भव है, कि किसी भक्त प्रवृत्ति के व्यक्ति को ये बातें रूचिकर न लगें, क्योंकि व्यक्ति की जब भी किसी धारणा पर चोट लगती है, तो उसके अहम् को चोट लगती है और कोई भी व्यक्ति अपने अहम् पर चोट सहन नहीं कर पाता। भक्ति तो एक **भय** है, भक्ति तो एक **स्वार्थ** पोषण का यंत्र है। यूं यथार्थ में होते ही कितने भक्त हैं, जिससे भक्ति मार्ग को श्रेयस्कर घोषित किया जा सके? मैंने तो सूक्ष्म अवलोकन में यही देखा है, कि जो व्यक्ति स्वयं को भक्त कहते हैं, किसी देवी या देवता के प्रति स्वयं को 'समर्पित' घोषित करते हैं, वे मन के किसी न किसी कोने में इसका एक मिथ्या बोध लिये दम्भ से भरे ही रहते हैं और उनकी मान्यता पर जरा सी चोट पहुंची नहीं, वे तड़प उठते हैं।

व्यक्ति का **पूरा जीवन** ही यूं छद्मों के पोषण, आवरण और मिथ्या प्रलाप में बीत जाता है, क्योंकि उसने विश्लेषण की उस प्रक्रिया से संयुक्त होना नहीं सीखा होता है, जो उसे गुरू के साहचर्य में आने के बाद अवश्यमेव अपनानी चाहिये और ऐसा वह इसलिये नहीं करता है, क्योंकि विश्लेषण की प्रक्रिया से संयुक्त होना त्रासदायक है। यह इतनी अधिक त्रासदायक क्रिया है, कि कबीर ने इसे घनु द्वारा काठ को खाये जाने की संज्ञा दी है, जो इस प्रक्रिया में संयुक्त हुआ नहीं उसका हास्य ही नहीं, रूदन भी खो जाता है, क्योंकि एक ओर तो उसे हर्ष होता है, कि जीवन में कुछ नवीन प्राप्त करने निकल पड़ा है, वह गुरू से सम्पर्क में आने के बाद प्रथम क्षणों में साक्षात कर आगे बढ़ा होता है-

रोऊं तो बल घटे है, हंसू तो हरि रिसाय।
मन ही मांहि बिसूरन, ज्यों काठहि घुण खाये।।

इसके उपरान्त भी कुछ साधकों को अपने पूर्व जन्म के संस्कारों, प्रवाहों चैतन्यता और जीवन में कुछ नूतन घटित करने के आग्रह के कारण सदैव से यही मार्ग रूचिकर लगा है, ऐसे ही व्यक्ति विभूति बने हैं।

यूं तो अनेक भक्तों ने भी अपना जीवन न्यौछावर किया है, किन्तु उनका सम्पूर्ण चिन्तन एकांगी रहा है। उन्होंने ईश्वर को केवल अपना माना है और अपने को केवल ईश्वर का माना है, जबकि साधक का लक्ष्य आत्म कल्याण से उठते ही, उसे सम्पूर्ण करते ही तत्क्षण लोक कल्याण की ओर उन्मुख हो जाना है या यूं कहें, कि वह आत्म कल्याण या अपनी मुक्ति का हेतु बन सके, गुरूत्व से युक्त हो सके। जहां तक ईश्वर और भक्त के बीच की बात है, वहां तो कुछ नहीं कहा जा सकता, किन्तु जब साधक गुरू का आश्रय ग्रहण करने के बाद भी एकांगी रूप से चलता रहे, तो उसे किस प्रकार श्रेयस्कर कहा जा सकता है? गुरू का तो आगमन ही होता है अनेक के लिये और यही उसके शिष्य का भी लक्ष्य होना चाहिये। अपनी बद्ध धारणाओं से मुक्त होकर गुरू साहचर्य को इस प्रकार ग्रहण करना भी एक प्रकार से गुरू साधना ही है।

चेतना का प्रवाह गंगा की भांति कभी रूकता नहीं है, और अन्त में स्वयं को एक ऐसी विशालता में लुप्त पाता है, जिसमें किसी देवी-देवता का (अथवा स्वयं उसका) कोई स्वरूप नहीं रह जाता। यही वास्तविक रूप में गुरू परिचय की स्थिति होती है और यही ब्रह्मत्व की भी स्थिति होती है। ऐसे गुरू रूपी समुद्र में प्रतिक्षण अनेक दिशाओं से आती ज्ञान की धाराये कभी प्रवाह को **शुष्क** नहीं होने देती है। गुरू अन्त में 'मिलन' नहीं होता है, गुरू तो प्रथम दिवस से ही साथ चल रहे होते हैं। अन्त तो सम्पूर्णता में होता है, अनेकता के सम्मिलन स्थल में होता है। आवश्यक केवल यह रह जाता है, कि शिष्य प्रतिक्षण गतिशील बना रहे। जब उसे मार्ग ना मिल रहा हो तब भी वह अटकी नदी की तरह छटपटाता रहता है और मार्ग के पत्थरों को घिस-घिस कर समाप्त करने की क्रिया करता रहे... पत्थर तो अनेक हैं। विश्लेषण की क्रिया इन्हीं सब क्रियाओं का संयुक्त नाम ही तो होती है।

ऐसा होने पर ही गुरू साहचर्य की सफलता होती है और शिष्य व्यर्थ में **प्रलापों, धारणाओं** से मुक्त होकर गुरू रूपी समुद्र में झुककर अपने प्रतिबिम्ब को निहार कर समझ जाता है, कि उसका नूतन जन्म तो एक हंस के रूप में कब का हो चुका था।

महामाया शिव शक्ति अटूट कुबेर लक्ष्मी
प्राप्ति गुरू पूर्णिमा साधना महोत्सव
01-02-03 जुलाई रायपुर (छ.ग.)
शिविर स्थलः **अग्रसेन धाम, सिटी मॉल के पास,**
G E Road-फूडहर मार्ग, रायपुर (छ.ग.)

28 मई धूमावती अवतरण पर्व

धूमावती क्षीरभवानी माला

सांसारिक जीवन में व्यक्ति पारिवारिक, गृहस्थ, भौतिक सुखों व कामनाओं की पूर्ति के लिये निरन्तर कर्मशील बना रहता है, परन्तु सभी कार्यों में पूर्णता या सफलता प्राप्त नहीं होती व साथ ही समय पर भी कार्य सम्पन्न नहीं हो पाते हैं। इसी से उसके जीवन में **दुखः, कलह, रोग, कष्ट, बाधा, दरिद्रता** आदि विषम परिस्थितियां बराबर व्याप्त रहती हैं।

इसका मूल कारण पूर्ण चेतना भाव से परिश्रम के सुपरिणाम में शत्रुओं द्वारा द्वेष भावना, ईर्ष्या के फलस्वरूप अनर्गल क्रियायें टोना-टोनी द्वारा तंत्र प्रयोग स्वरूप कुक्रियायें होने से ही जीवन अनेक स्वरूपों में **दुःख, विषाद, कष्ट** पूर्ण बन जाता है।

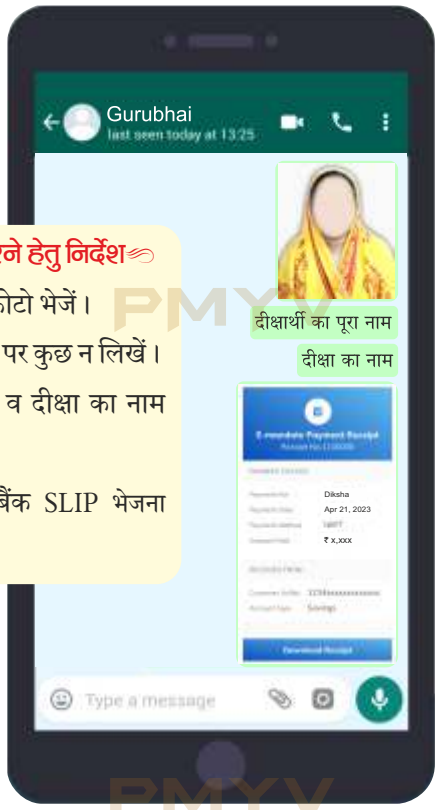
अतः इस प्रकार की कुक्रियायें किसी भी रूप में जीवन में आये ही नहीं व निरन्तर साधक का जीवन सर्व सुरक्षामय बना रहे इस हेतु दस महाविद्याओं में सबसे तीव्र और भयच्युत देवी धूमावती की उपासना सहायक होती है। साथ ही जो साधक देवी धूमावती की चेतना आत्मसात कर लेता है उसका जीवन तेजस्वी, बलवान, साहसी, निडर, विजयश्री बन जाता है।

28 मई, रविवार हर्षण बालव योग युक्त क्षीरभवानी शक्तिमय धूमावती अवतरण पर्व पर सद्गुरूदेव कैलाश श्रीमाली जी माता धूमावती के सहस्त्र नाम युक्त सवा लाख मंत्र जप सम्पन्न कर फोटो से विशिष्ट धूमावती क्षीरभवानी दीक्षा व माला चेतन्य रूप में प्रदान की जायेगी। दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् माला को धारण करने से अनेक तरह की **अनर्गल स्थितियां** समाप्त हो सकेंगी।

धूमातवी क्षीरभवानी दीक्षा युक्त माला

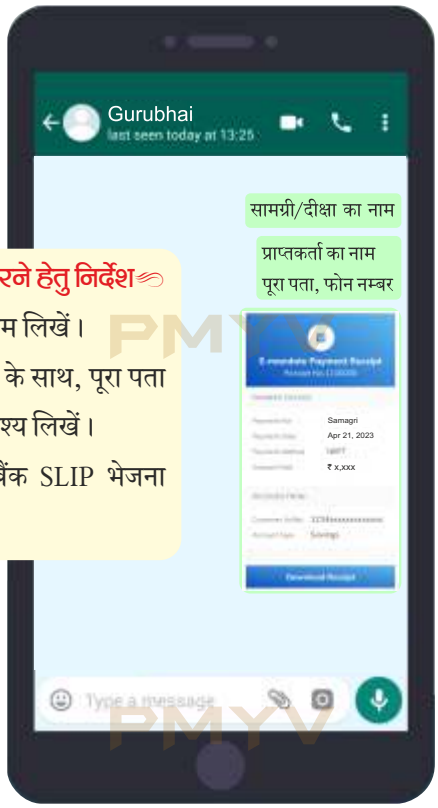
तीन वर्षीय पत्रिका सदस्यता न्यौछावर ₹ 1800

उक्त राशि भेजने पर फोटो दीक्षा, माला व दीक्षा प्राप्त साधक को अगले तीन वर्षों तक निरन्तर पत्रिका भेजी जाती रहेगी।



दीक्षा ग्रहण करने हेतु निर्देश

- दीक्षा हेतु नवीन फोटो भेजें।
- दीक्षार्थी की फोटो पर कुछ न लिखें।
- दीक्षार्थी का नाम व दीक्षा का नाम अवश्य लिखें।
- दीक्षा राशी की बैंक SLIP भेजना अनिवार्य है।



सामग्री प्राप्त करने हेतु निर्देश

- सामग्री का पूरा नाम लिखें।
- प्राप्तकर्ता के नाम के साथ, पूरा पता व फोन नम्बर अवश्य लिखें।
- दीक्षा राशी की बैंक SLIP भेजना अनिवार्य है।



श्रावण मास
शिव-शक्ति
पाशुपतास्त्रेय साधना

शिव से शक्ति की भिन्नता नहीं है और यह बात अपने पूर्ण यौवन के साथ चरित्रार्थ होती है, श्रावण मास में जब प्रकृति जो शक्ति रूपा है अपने पूर्ण सौन्दर्य के साथ खिल उठती है और शिव आह्लाद मुद्रा में प्रतीत होते हैं। क्या सम्बन्ध है शिव और शक्ति में और कैसे उतारा जाये शिव और शक्ति को जीवन में?

उपनिषदों के प्रारम्भ में ब्रह्म के सम्बन्ध में जिज्ञासा प्रकट करते हुये प्रश्न पूछा गया कि 'किं कारणं ब्रह्म' अर्थात जगत का कारण जो ब्रह्म है, वह कौन है? आगे चलकर ब्रह्म के स्थान पर रूद्र और शिव शब्द का प्रयोग किया गया है। 'एकोहि रूद्रः सः शिव' अर्थात जो जगत पर शासन करते हैं वे रूद्र भगवान एक ही है, वे प्रत्येक जीवन के भीतर स्थित हैं, समस्त जीवों का निर्माण कर पालन करते हैं और प्रलय में सबको समेट लेते हैं। अर्थात यह जगत पूर्ण रूप से रूद्र स्वरूप ही है, एक ही रूद्र से अणु परमाणु रूप में जीवन आत्मारूप में कोटि-कोटि रूद्र उत्पन्न हुये जो रूद्र में ही विलीन हो जाते हैं।

नारायण उपनिषद में भगवान शिव को अनेक नामों से प्रणाम किया गया है-

शिवाय नमः, शिवलिंगाय नमः, भवाय नमः, भवलिंगाय नमः, शर्वाय नमः, सर्वलिंगाय नमः, बलाय नमः। बलप्रथनाय नमः इत्यादि एवं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रूद्ररूपेभ्यो। ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति र्ब्रह्मणोऽधिपति र्ब्रह्म शिवो में अस्तु सदा शिवोम्। नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतये उमापतये पशुपतये नमो नमः।

इसीलिये भगवान रूद्र के सम्बन्ध में कहा गया है कि भगवान शिव ही इन्द्र इत्यादि देवताओं की उत्पति हेतु, वृद्धि हेतु अधिपति और सवर्ग्य हैं, वे परमदेव सबको सद्बुद्धि से संयुक्त करें।

इस संसार में कर्म फल देने के लियें ही सृष्टि होती है। व्यक्ति अपने जीवन में नाना प्रकार के सुख और दुःख भोगता हुआ अन्ततः पूर्ण सृष्टि में विलीन हो जाता है। इसलिये भगवान शिव को प्रलय का देव कहा गया है जो व्यक्ति के जीवन में सब दुःखों को हर लेते हैं, इसीलिये वे हर हैं और प्रार्थना में भी कहा जाता है - हर हर महादेव अर्थात जो हरण करने वाले हैं, वे ही तो महादेव हैं।

अव्यक्त और व्यक्त दोनों ही रूपों में शिव को जाना जाता है, इसीलिये शिव सगुण भी हैं और निर्गुण भी हैं। निर्गुण रूप में वे लिंगाकार रूप में और सगुण रूप में विभिन्न रूपों में सर्वपूज्य हैं।

शिव भक्ति के अधीन शिव को त्रिनेत्र, त्रिशूल, मुण्डमाला धारी एवं दिगम्बर, श्मशान वासी, अर्धनारीश्वर, भस्मधारी माना है। वास्तविक रूप में शिव के त्रिनेत्र त्रिकाल अर्थात भूत, भविष्य और वर्तमान ज्ञान के

बोधक हैं।

शिव के त्रिनेत्र सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि स्वरूप है।

शिव की मुण्डमाला प्रत्येक व्यक्ति को **मृत्यु का स्मरण** कराती रहती है, जिससे वे **दुष्कर्मों** से विरक्त रहने का प्रयास करते हैं।

शिव दिगम्बर होते हुये भी भक्तों के ऐश्वर्य को बढ़ाने वाले और मुक्त हस्त में दान करने वाले हैं। श्मशानवासी होते हुये भी तीनों लोकों के स्वामी हैं अर्धनारीश्वर होते हुये भी योगाधिराज हैं, मदनजित अर्थात काम को जीतने वाले होकर भी सदा महाशक्ति भगवती उमा के साथ हैं, भस्मधारी होते हुये भी अनेक रत्नराशियों के अधिपति हैं, वही शिव अजन्मा और अनेक रूपों में विभूषित हैं, व्यक्त भी हैं और अव्यक्त भी।

भगवान शिव के महादेव, भव, दिव्य, शंकर, शम्भु, उमाकांत, हर, मुण्ड, नीलकंठ, ईश, ईशान, महेश, महेश्वर, परमेश्वर, सर्व, रूद्र, महारूद्र, कालरूद्र, त्रिलोचन, विरूपाक्ष, विश्वरूप, कामदेव, काल, महाकाल, कालविकरण, पशुपति इत्यादि अनेक नाम हैं।

शिव शब्द का अर्थ है कल्याण, शिव ही शंकर हैं, शं का अर्थ है कल्याण, क का अर्थ है करने वाला अर्थात शंकर ही कल्याणकारी देव हैं, ब्रह्म ही शिव है, सृष्टि की उत्पति और पूर्णता शिव में ही है।

जिस प्रकार पुष्प में सुगंध, चन्द्र में शीतलता, सूर्य में प्रभा सिद्ध है, उसी प्रकार शिव में शक्ति भी सिद्ध है, शक्ति को किसी भी रूप में भी कहा जाये उमा, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, ब्रह्माणी, इन्द्राणी, महाकाली सब शिव के साथ ही निहित है।

शिव पुरूष रूप में है तो उमा स्त्री स्वरूप, शिव ब्रह्म है तो उमा सरस्वती, शिव विष्णु और उमा लक्ष्मी, शिव सूर्य तो उमा छाया, शिव चन्द्र हैं तो उमा तारा, शिव यज्ञ हैं तो उमा वेदी, शिव अग्नि है तो उमा स्वाहा इसीलिये शिव और शक्ति दोनों की संयुक्त रूप से ही आराधना की जाती हैं। लिंगाकार रूप में भी शिव और शक्ति का समन्वित रूप लिंग और वेदी के रूप में प्रकट होता है।

प्रणव अक्षर 'ऊँ' शिव का गान कहा गया है अर्थात संसार की प्रथम ध्वनि 'ऊँ' ही थी, ओंकार की ध्वनि अर्थात प्राण से सम्बन्ध में कहा गया है, कि यह सर्वव्यापी है, यह तारक मंत्र है, ब्रह्म विद्या है, यह सकल मंत्रों का मूल है, इसीलिये प्रत्येक मंत्र के पहले प्राण मंत्र अर्थात ऊँ बोला ही जाता है।

सदाशिव को मृत्युंजय कहा गया है, उन्हें त्र्यंबक कहा गया है, सांसारिक प्राणी सदैव **यम** अर्थात मृत्यु से बचने का प्रयत्न करता है और केवल शिव को ही महाकाल, मृत्युंजय और अमृतेश्वर कहा गया है, शिव ही काल से ऊपर **महाकाल** हैं, मृत्यु को जीतने वाले हैं, इसीलिये मृत्युंजय हैं, जीवन में बार-बार मृत्यु से बचाकर अमृत दिलाने में समर्थ है।

भौतिक युग और शिव

भगवान शिव आध्यात्मिकता के देव हैं तो भौतिकता के भी देव है, भौतिक जगत में व्यक्ति को जीवन में परिवार, पुत्र, आनन्द, विद्या, ज्ञान, भयहीनता सब कुछ तो चाहिये और ऐसा ही तो भगवान शिव का स्वरूप है, शक्ति स्वरूपा उमा पार्वती सदैव साथ हैं, देव अग्रणी गजानन्द पुत्र हैं, वहीं शौर्य देव कार्तिकेय दूसरे पुत्र हैं, ऋद्धि सिद्धि पुत्र वधूये हैं, सब कुछ होते हुये भी आनन्द से युक्त होकर, भस्म धारण कर हिमालय वासी हैं अर्थात सब गुणों को रखते हुये भी मोह से परे हैं, जहां शिव हैं वहां भगवती है, जहां शिव हैं वहां गणपति हैं, जहां शिव हैं वहां शौर्यपति कार्तिकेय हैं, जहां शिव हैं वहां ऋद्धि और सिद्धि हैं। जहां शिव हैं, वहां जल है क्योंकि शिव की जटाओं में जल धारण करने की क्षमता है और जहां जल है वहीं जीवन भी है।

कुण्डलिनी शक्ति जागरण में ज्योति स्वरूप शिवलिंग का पूजन शिव और शक्ति का समन्वित पूजन है, यह पृथ्वी रूपी इष्ट और आकाश रूपी लिंग का मिलन है। शिव साधना, शिव सिद्धि, शिव कृपा बिना शिवलिंग पूजन सम्भव ही नहीं और निरन्तर बहती जल धारा जीवन के जल तत्व को अभिव्यक्त करती है, यदि **मनुष्य की देह** से जल तत्व हटा दिया जाये तो जीवन समाप्त हो जाता है, इसीलिये जीवन के प्रतीक शिवलिंग का सदैव अभिषेक किया जाता है। अभिषेक का तात्पर्य है अर्पण, अभिषेक का तात्पर्य है ग्रहण करना, अभिषेक का तात्पर्य है निरन्तर प्रवाह होते रहना अर्थात जहां शिव हैं वहीं निरन्तर प्रवाह है। यह सृष्टि भी जल से उत्पन्न हुई है और जल में ही विलीन हो जाती है। इसीलिये कहा गया है जल के बिना जीवन की कल्पना व्यर्थ है।

रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून,
पानी गये न उबरे मोती मानस चून।

अर्थात मनुष्य में जल ही जीवन प्रदान करता है, जब तक जल है तब तक जीवन है, देह में भी रूधिर के रूप में जल तत्व ही तो विद्यमान है, इस शरीर में पंचतत्वों में आकाश, भूमि, जल, वायु, अग्नि में भी जल तत्व को प्रधान

माना गया है। नेत्रों की भाषा भी आनन्द स्वरूप, करूणा स्वरूप प्रेम अश्रु के रूप में ही प्रकट होती है, जीवन का निरन्तर क्रम भी जल तत्व वीर्य के माध्यम से प्रकट होता है, सत्व और रज ही तो सृष्टि का क्रम निर्विघ्न रूप से चलाते रहते हैं।

वर्षाऋतु-श्रावण मास

जल को देखते ही मन में प्रसन्नता उदय होती है क्योंकि शरीर के भीतर का जल बाह्य जल से अपने आप को जोड़ता है, देह को हजार विधियों से स्वच्छ रखा जा सकता है लेकिन देह के ऊपर जल डालकर स्नान करने से जो निर्मलता प्राप्त होती है वह और किसी अन्य माध्यम से प्राप्त नहीं हो सकती है। वर्षा में बरसते हुये जल को देखकर आत्मा भी प्रसन्न हो जाती है, मनुष्य हर ऋतु में अर्थात शीत, उष्ण ऋतु में अपने आप को संयोजित कर लेता है लेकिन वर्षा की न्यूनता में सब कुछ शुष्क हो जाता है, वर्षा तो भगवान शिव का वरदान है जो आकाश मार्ग से पृथ्वी को तृप्ति करने के लिये आती है और जब तक मनुष्य के जीवन में तृप्ति नहीं आती तब तक वह शुष्क अनुभव करता है, इसीलिये भगवान शिव को रसेश्वर कहा गया है, रस का तात्पर्य है जल तत्व और जीवन में जितने जल तत्व है वे भगवान शिव से ही उत्पन्न माने गये हैं।

जो सत्य है वह शिव है, जो शिव है वह सुन्दर है, इसीलिये जो शिव है वह सत्य है, जो शिव है वह आनन्द है और यही है – सत्यम शिवम् सुन्दरम्!

पाशुपतास्त्रेय साधना

महाभारत के युद्ध से पूर्व श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सलाह दी थी, कि वह महाभारत में विजयी होना चाहता है, वह यदि कौरवों की असंख्य सेना पर सफलता पाना चाहता है, वह मृत्यु को जीतना चाहता है और वह यदि जीवन में पूर्ण सफलता के साथ भाग्योदय चाहता है, तो भवगान शिव की पाशुपतास्त्रेय साधना के अलावा और कोई ऐसी साधना नहीं है, जो कि जीवन में पूर्णता दे सके।

पाशुपतास्त्रेय साधना के विषय में विश्वामित्र जैसे दुर्धर्ष ऋषि ने एक स्वर में स्पष्ट किया है, कि पाशुपतास्त्रेय साधना प्राप्त करना ही जीवन का सौभाग्य है। भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिये, उनसे समस्त साधनाओं में सिद्धि और सफलता प्राप्त करने का वरदान प्राप्त करने के लिये यह प्रयोग श्रेष्ठ और श्रेयस्कर है।

1- ग्रह संयोगों एवं स्वयं के **कर्म दोषों** से साधनाओं में सिद्धि मिलते-मिलते रह जाती है, उन सभी का प्रभाव भगवान पशुपति की कृपा से समाप्त हो जाता है और अगले वर्ष भर के लिये कर्म दोषों व ग्रह नक्षत्रों का विपरीत प्रभाव लगभग नगण्य हो जाता है, जिससे किसी भी साधना में सफलता असन्दिग्ध हो जाती है।

2- भगवान शिव मोक्ष प्रदायक देवता हैं, इस साधना के प्रभाव से साधक का परलोक सुधर जाता है।

3- साधक को जीवन में कहीं पर भी **असफलता, अपमान** या **पराजय** नहीं देखनी पड़ती।

4- भगवान शिव भाग्य के अधिपति देवता हैं। जिनका भाग्योदय नहीं हो रहा हो या जिनका भाग्य कमजोर हो अथवा जीवन में कार्य भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो रहे हों, उन्हें अवश्य भगवान शिव की साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

5-इस साधना को यदि पूर्ण श्रद्धा और भक्ति के साथ सम्पन्न किया जाये, तो भगवान शिव के अत्यन्त भव्य दर्शन भी साधक को प्राप्त होते हैं, जिससे साधक के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।

इस साधना में बाण लिंग की मुख्य रूप से आवश्यकता होती है। बाण लिंग को बेल पत्र का आसन देकर किसी पात्र में स्थापित कर निम्न ध्यान मंत्र करें-

ऊँ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजत गिरि निभं चारू चन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशु मृग वराभीति हस्तं प्रसन्नं।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममर गणैर्व्याघ्र कृतिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्व वन्द्यं निखिल भय हरं पंच वक्त्रं त्रिनेत्रं।।

अब अपने सिर पर एक पुष्प रखें तथा नर्मदेश्वर शिवलिंग के सामने भी एक पुष्प रखकर अपने और शिव के परस्पर प्राण सम्बन्ध स्थापित करते हुये निम्न उच्चारण करें।

पिनाक-धृक् इहावह इहावह, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह इह सन्निधेहि इस सन्निधेहि, इह सन्निधत्स्व,
यावत् पूजां करोम्यहं। स्थानीयं पशुपतये नमः।

इसके बाद रूद्रयामल तंत्र के अनुसार रूद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की 05 माला मंत्र जप करें-

।। ऊँ हर, महेश्वर, शूलपाणि, पिनाक धृक्,
पशुपति, शिव महादेव ईशान नमः शिवाय।।

यह सम्पूर्ण प्रकार की सफलता देने वाला मंत्र है और इसके माध्यम से पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है। शास्त्रों में इसे अष्टाष्ट मंत्र या अष्ट शिव मंत्र कहते हैं, जो अपने आप में अद्वितीय है। प्रयोग समाप्ति के बाद आरती करें। बाद में रूद्राक्ष माला व बाण लिंग को पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

पाशुपतास्त्रेय साधना सामग्री व शिव गौरी लक्ष्मी गणपति महामृत्युंजय दीक्षा न्यौ ₹ 2700/-



एक साधक के रूंधे कंठ से अपने भाव व्यक्त किये हैं शिष्यत्व समर्पण पर्व पर वैसे सद्गुरूदेव घट-घट में विराजमान हैं पर यह दिन आते ही हृदय करूण क्रन्दन करने लगता है। नेत्रों से अश्रुओं की अविरल धारा बहने लगती है-

किसकी गोद में सिर छिपाऊँ

एक रोज कहा था मुझको, तुम मेरे हो। मेरा भी दिल बोला तुमको, तुम मेरे हो।।

फिर याद तेरी मुझको आई, आँखें मेरी छलक पड़ी। दिल इतना बैचेन हुआ, रोकर तेरे चरणों में झुका।।

मेरे सद्गुरू, आपने हमें इस पृथ्वी पर तपते मरूस्थल में छोड़कर सिद्धाश्रम में पच्चीस वर्ष बिता दिये हैं। सद्गुरूदेव निखिल आप हमारे साथ जब पृथ्वी लोक पर थे तो हम चिन्ता मुक्त होकर आनन्द रस का भोग कर रहे थे। आपके हमारे साथ निरन्तर रहने से, आपको प्रेम से आपूरित आँखों से देखकर मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझता था। मेरा ध्यान रखते हुये अपने ममत्व, प्रेमत्व के आँचल में रखकर गुरू रूप में अपनी तपस्या का अमृत पिलाया, समाज के द्वारा दिये कष्टों को जिस प्रकार आपने दूर कर जिस ढंग से रक्षा की, हे सद्गुरूदेव निखिल उन क्षणों को, उन दिनों की याद करके एवं आपके जाने के बाद अपनी स्थिति को देखकर मैं निरन्तर व्यथित ही रहता हूँ।

हे सद्गुरूदेव निखिल संसार ने मुझे अनेक प्रकार से अनेक रूपों में जहर पिलाया, परन्तु आपने मेरे सिर पर अपनत्व, प्रेम से अपना हाथ मेरे सिर पर रखते हुये मुझे अमृत पिलाया, उस सबको याद करके वर्तमान में अपनी हालत को देखकर सद्गुरू निखिल मेरी पुकार सुनों। मैं इस समय 'चकोर की भांति सिद्धाश्रम की ओर देखता हुआ' की तरह आपके श्री चरणों में निवेदन करता हूं कि-

तेरी याद जब भी आती है, आँखों से नीर बहा ले जाती है। न तुझसे दूर हो पाता हूँ, न तूझे ढूंढ पाता हूँ।।

सद्गुरूदेव निखिल। आपके जाने के बाद संसार में समाज में परिजनों के बीच रहते हुये भी ऐसा लगता है कि कुछ ऐसा तत्व है, जिसके बिना हम अधूरे हैं। तब इस शरीर के प्राण मन स्वतः ही आपके चित्र की ओर खिंच जाते हैं, तब ऐसी भावना उदित होती है, सद्गुरूदेव निखिल हम आपके बिना अधूरे हैं।

आपके बिना हमारे लिये संसार में रहना कष्टप्रद हो गया है। आपके बिना हमें अपने जीवन की कोई गति दिखाई नहीं दे रही है।

इस जग का कोई प्राणी, मुझ जैसा बेबस, लाचार नहीं। तेरे जैसा अपना मुझे, इस जग में कोई मिला नहीं। अब तो कृपा करो।

सद्गुरूदेव निखिल। आपकी याद आते ही आँखें शून्य से कुछ निहारने लग जाती है, शरीर के अंग प्रत्यंग भी पूर्व की तरह अब पुलकित नहीं होते हैं, मस्तिष्क भी 'किं कर्तव्य विमूढ़' हो गया है। आँखें स्वतः नीर बहाने लगती है, प्राण कॉपने लग जाते है। शरीर का रोम-रोम खड़ा हो जाता है। गला सुखने लगता है। आपके साथ बिताये हुये क्षण सब याद आते हैं तो दिल पर चोट लगती है। आपका प्रेम से मिलना,

आपका निहारना, आपका साहस, हिम्मत बंधाना, आपका अपलक तिरछी निगाह से देखना आदि स्मरण होते ही आँसू आंखों से प्रवाहित होने लगते हैं। ऐसा लगता है, आपकी चुम्बकीय शक्ति, प्रेम शक्ति ने मेरे दिल को अपने अधिकार में लेकर मुझे ऐसा नशा दे दिया है कि आपके बिना यह संसार सूना-सूना लगता है। आप जब थे, तो एक मस्ती थी, होंठों पर मुस्कराहट थी, दिल में उमंग जोश था।

दिल तुमको ढूंढता है मेरे गुरूवर, कहां खो गये तुम। उसी राह पर अब भी खड़ा हूं, जहां छोड़ गये थे तुम।।

सद्गुरूदेव निखिल। आपके सिद्धाश्रम गमन करने के पश्चात् मुझे आपकी उपस्थिति का महत्व समझ में आया।

आपने न जाने ऐसा क्या कर दिया,
मैं न जी पाता हूं न मर पाता हूं।
तेरे साथ रहकर क्या हो गया
हमदम दर्द साथ लिये जाता हूं।।

मेरे सद्गुरूदेव निखिल। हमारी **अज्ञानता, अबोधता** को क्षमा करें। हम आपके करूणामय स्वरूप को समझ न सके। आप बच्चों के संग बच्चे, वृद्ध बनकर, जिस प्रकार अपने हृदय के बल से, प्रेम के प्रभाव से शाश्वत पथ की ओर स्वयं **विषपान** करते हुये हमें अग्रसर करने के लिये निरन्तर सचेष्ट रहे। हम आपके बाह्य सौन्दर्य, माधुर्य, चातुर्य स्वरूप को देखकर ही मोहित, मुग्ध होते रहे। आप हमें बार-बार समझाते रहे, आप हमारे लिये अनेकों **कष्ट पीड़ा**, समाज की **आलोचनाओं** का जहर पीते रहे, परन्तु हम आपके मूल चिन्तन, भाव को न समझ सके।

मेरे सद्गुरूदेव निखिल। आप हमें क्षमा करें, हमें नहीं पता कि आपने पृथ्वी लोक पर हमारे साथ रहकर कितने **कष्ट**, कितनी **पीडाये** भोगते हुये, हमारे लिये जहर पिया। समाज की ओर से हमारे लिये कितने प्रहार सहन कर अपने शरीर पर जख्म बना लिये।

लोग तुम्हें जहर देते रहे, जहर पीकर तुम मुस्कराते रहे।
तुम हमें बुलाते रहे, हम तुम्हें अजमाते रहे।।

मेरे सद्गुरूदेव निखिल। आप जिस विराट चिन्तन के कारण अपने शिष्यों को साधना, सिद्धियों के क्षेत्र में अन्यतम ऊँचाई पर ले जाना चाहते थे। उस विराट चिंतन को हम शिष्य समझ नहीं पाये। मेरे सद्गुरूदेव निखिल। आपका बाह्य शारीरिक सौन्दर्य ही इतना मन मोहक था कि हम आपके प्रेम के धागे में बंधकर सब कुछ भुला बैठे। हमें आपसे प्रेम करने के अलावा कुछ समझ ही नहीं, हमें आपके नेत्रों व शरीर के रोम-रोम से निकलती प्रेम रश्मियों से भीगने में जो आनन्द, तृप्ति, अमृत अनुभव हो रहा था, उसके सामने हमारे लिये साधना एवं सिद्धियां गौण हो गई। हमने प्रेम का आदान प्रदान ही अपने जीवन का सौभाग्य समझा। आपसे हमें जिस प्रकार से प्रेम मिला है, वहीं हमारे जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है।

कुछ लोग मुहब्बत करके, हो जाते है बर्बाद। कुछ लोग मुहब्बत करके, कर देते हैं बर्बाद।।
जिसने भी तुम्हें अपनी मुहब्बत का, रंग चढ़ा दिया।
समझों उसे दुनिया ने, सूली पर चढ़ा दिया।।

मेरे सद्गुरूदेव निखिल। आपके सिद्धाश्रम गमन करने के बाद हमारा किसी भी कार्य में मन नहीं लग रहा है, हमें कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है, इस संसार के स्वार्थ स्वरूप को देखकर एवं आपके अपनत्व को जानकर यह दिल रो पड़ता।

दिल पर गहरा जख्म लगा है, तेरी जुदाई का।
बेचैन होकर तड़प रहा हूं, जैसे राही रेगिस्तान का।

मेरे सद्गुरूदेव निखिल। आपके साथ रहकर हमारे अन्दर की सारी फिजा ही बदल गई। हमारी आँखों का नूर ही बदल गया, लोगों से बात करने का ढंग ही बदल गया। लोग हमें एकटक होकर देखने लग जाते हैं, तब हमें यही याद आता है।

तुम्हारा नूर है जो, छिपा है मेरे अन्दर।
वरना कौन देखत, आज के जमाने में सुन्दर।।

मेरे सद्गुरूदेव निखिल। मैं अपने जीवन के अंतिम क्षण तक अपने वायदे के अनुसार 'तुम मेरे हो' इस संसार की विषैली आग में जलता हुआ, तड़पता हुआ, आपके प्रेम में भीगता हुआ, आपकी सुगन्ध से समाज को सुरक्षित करता ही रहूंगा आपसे एक यही विनती है कि-

जनाजा मेरा निकले, कंधा अपना लगा देना।
कोई पूछे कैसे मरा, मुहब्बत की मजबूरी बता देना।।

मेरे सद्गुरूदेव निखिल। कहीं ऐसा न हो कि मौत की शैया पर भी मेरा यह दिल बैचेन रहे, तुम्हारे आने के इंतजार में तड़पता रहे और यह शरीर जलने से पूर्व तक आओ ही नहीं और मेरा दिल यूं रो पड़े-

जनाजा मेरा निकला, जनाजे के पीछे जमाना निकला। मगर वो नहीं निकले, जिनके पीछे मेरा जनाजा निकला।।

महामाया शिव शक्ति अटूट कुबेर लक्ष्मी
प्राप्ति गुरू पूर्णिमा साधना महोत्सव
शिष्यत्व समर्पण पर्व
01-02-03 जुलाई रायपुर (छ.ग.)
शिविर स्थल: अग्रसेन धाम, सिटी मॉल के पास,
G E Road-फूडहर मार्ग, रायपुर (छ.ग.)

तुम प्यार से पुकारो तो सही



तुम प्यार से पुकारो तो सही
मैं धड़कनो पर चलकर आऊंगा (गुरूदेव)
मैं तुम्हारी धड़कनों पर चलकर आऊंगा
और तुम्हारे दिल में समा जाऊंगा
दिल में जो समा जाऊंगा
तो फिर कभी दूर नहीं जा पाऊंगा
स्थान की दूरी फिर मायने नहीं रहेगी
तेरे-मेरे बीच में प्रेम की डोरी जो रहेगी
दूर होकर भी मैं तुझे तेरे पास नजर आऊंगा
दिल में जो समा जाऊंगा तो
तो कहाँ मैं तुझसे अलग रह जाऊंगा
तेरी हँसी में ही झलकेगी मेरी हँसी
तेरी आँखों में मेरी ही आँखों की होगी नमी
अलग होकर भी मैं अलग नहीं रह जाऊंगा
तेरे लबो पर होगी मेरी कई बातें अनकही
तेरे ही होठों से मैं अपने मन के गीत गाऊंगा
तुम प्यार से पुकारो तो सही
मैं तुम्हारी धड़कनों पर चलकर आऊंगा
फिर नहीं होंगे कभी कि मैं कहीं और तू कहीं
तेरा और मेरा फिर एकाकार हो जाएगा
तुम प्यार से पुकारो तो सही
मैं तुम्हारी धड़कनों पर चलकर आऊंगा
तुम्हारे जीवन के मरूस्थल में
मैं सुगन्धित पुष्प खिलाऊंगा
फिर न होगे तुम उदास कभी
क्योंकि तुम मे मैं हर क्षण खिलखिलाऊंगा
तुम्हारे ही माध्यम से तो मैं
खुद को व्यक्त कर पाऊंगा
तुम्हारे ही रूप में तो मैं
जीवित ग्रन्थ लिए पाऊंगा
तुम प्यार से पुकारो तो सही
मैं तुम्हारी धड़कनों पर चलकर आऊंगा

तुम्हारा सद्गुरूदेव



शिव-गौरी शिवोहम धनदा साधना

भगवान शिव की साधना गृहस्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है, क्योंकि भगवान शिव ही एक मात्र ऐसे देव हैं जो जीवन के समस्त बाधाओं का निराकरण करने में समर्थ हैं। पूर्णतः निर्लिप्त और निराकार होते हुये भी भगवान शिव पूर्ण गृहस्थ हैं, एक ओर जहां वे योगियों के इष्ट हैं, वहीं दूसरी ओर गृहस्थों के भी आराध्य देव हैं। भगवान शिव की आराधना प्रत्येक वर्ग के लोग करते हैं। गृहस्थ इस कामना के साथ कि उसे पूर्ण रूप से गृहस्थ सुख प्राप्त हो सके, स्त्रियां अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति के लिये, कुमारियां श्रेष्ठ पति की प्राप्ति के लिये, वहीं दूसरी ओर योगी शिवत्व प्राप्ति के लिये उनके ब्रह्मस्वरूप की आराधना करते हैं।

भगवान शिव अनेकों रूपों में मानव का कल्याण कर उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। वे एक ओर तो कुबेराधिपति हैं, वहीं महामृत्युंजय स्वरूप में विभिन्न रोगों के हर्त्ता हैं, औघढ़दानी बन कर रंक को राजा बनाने का सामर्थ्य रखते हैं, दूसरी ओर स्वयं श्मशान में रहते हुये, भस्म लपेटे हुये, उसी प्रकार से आनन्दित रहते हैं, जिस प्रकार वे कैलाश पर्वत पर भगवती पार्वती के साथ रहते हैं।

भगवान शिव को रसेश्वर भी कहा गया है, क्योंकि वे जीवन को प्रत्येक रस से सराबोर करने वाले हैं और जिस व्यक्ति के जीवन में रस ही ना हो तो उस व्यक्ति का जीवन व्यर्थ है। भगवान शंकर ने गंगा के तेज प्रवाह को अपनी जटाओं में धारण किया था और उनके जटाओं से प्रवाहित यह गंगा पूरे भारत वर्ष को प्रेम, करूणा, आनन्द, हास्य के रस से आप्लावित करती हुई निरन्तर गतिशील रहती है, यही गंगा कहीं नर्मदा, कहीं ब्रह्मपुत्र, तो कहीं हुगली, शिप्रा इस प्रकार विभिन्न धाराओं में बहती हुई समुद्र में विलीन हो जाती हैं, ठीक इसी प्रकार मनुष्य भी अपने जीवन में निरन्तर काम, अर्थ, मोक्ष के प्रवाह में गतिशील होते हुये श्रावण मास के दिव्यतम चेतना को आत्मसात कर पूर्णता की ओर अग्रसर होता है।

श्रावण मास वरूण देव का कल्प भी कहा गया है, इन्द्र देव का भी कल्प कहा गया है, जब इन्द्र और वरूण भगवान शिव के आदेश से इस धरती को जल से सिंचित करते हैं तो पूरी धरती पर हरियाली छा जाती है। क्योंकि ऐसे श्रावण मास में ही प्रकृति रूपी भूमि और ईश्वर रूपी महादेव का संयोग होता है तभी इस संयोग से पृथ्वी पर वृद्धि होती है, इसीलिये शास्त्रों में श्रावण मास का विशेष महत्व बताया गया है और यह मास भगवान शिव और महागौरी का मास है, जब वे अपनी लीला का प्रकाश फैलाते हुये धरती पर विचरण करते हैं।

भगवान शिव अपनी भक्तवत्सलता के कारण ही सभी के प्रिय देव हैं, तभी तो उन्हें देवाधिदेव महादेव कहा गया है। इसी कारण तो जहां प्रत्येक दैवीय शक्ति के लिये वर्ष में एक या दो दिन का निर्धारण किया गया है, वहीं भगवान शिव की आराधना के लिये पूरा एक मास ही निर्धारित है।

जिस माह में किसी भी उद्देश्य के लिये भगवान शिव की आराधना करने से निश्चित रूप से पूर्ण सफलता के साथ श्रेष्ठमय स्थितियों का निर्माण होता है।

इसी हेतु पूज्य सद्गुरूदेव जी ने अपने सभी मानस पुत्र-पुत्रियों के जीवन को शिव-गौरी की क्रियात्मक शक्ति को धारण कर प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण होने के लिये शिव-गौरी शिवोहम धनदा साधना पैकेट चैतन्य किया है। जिसे सम्पन्न कर निश्चिन्त रूप से सांसारिक जीवन की न्यूनताओं के समापन से साधक निरन्तर श्रेष्ठता और उच्चता की ओर बढ़ता है।

वास्तव में ही इस बार श्रावण महीने में जिस प्रकार के योग निर्मित हुये हैं, इन अवसर पर साधना सम्पन्न करना तो सौभाग्य ही होगा। जो सही अर्थों में साधक हैं, वे इसका पूर्णरूपेण लाभ उठाते ही हैं। सद्गुरूदेव की मनसा है कि इस वर्ष प्रत्येक साधक-साधिकायें इस श्रावण शिवरात्रि के विशेष दिवस पर यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करें।

साधना विधान

सर्व प्रथम पूजा स्थान को स्वच्छ कर शुद्धता पूर्वक लकड़ी का बाजोट रखें, उस पर सफेद वस्त्र बिछावें तथा निम्न सामग्री को एकत्र कर अपने पास रख लें, शुद्ध जल, गंगा जल, चन्दन, अक्षत, कुंकुम, पुष्प, बिल्वपत्र, पुष्प माला, पंचामृत, वस्त्र यज्ञोपवीत, अगरबत्ती, नैवेद्य विविध फल, सुपारी, घी का दीपक तथा शिव-गौरी शिवोहम धनदा साधना पैकेट।

स्नानदि से निवृत होकर पूर्व की ओर मुंह करके बैठ जायें और यदि सम्भव हो तो अपनी पत्नी को भी दाहिने हाथ की ओर बिठा दें। पवित्रीकरण, आचमन, शिखा बन्धन और न्यास आदि की क्रियायें सम्पन्न होने के बाद चावल की ढेरी पर जल का कलश स्थापित कर दें और उसके चारों ओर केशर या कुंकुम की चार बिंदिया लगा लें और उसमें निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुये जल भरें-

गंगे च यमुने चौव गोदावरी सरस्वति
नर्मदे सिन्धु कावेरी जले स्मिन सन्निधं कुरू
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्यास्सरितस्तथा
आगच्छन्तु पवित्राणि पूजाकाले सदा मम

फिर उसी कलश से जल लेकर अपनी मनोकामना बोलकर संकल्प लें।

लकड़ी के बाजोट पर शिवोहम शक्ति यंत्र को स्थापित कर यंत्र के समक्ष पांच चावल की ढेरी बनाकर प्रत्येक पर रूद्राक्ष कल्प स्थापित कर दें। तुलसी की माला और चार सोम शक्ति जीवट को भी एक ओर स्थापित कर सभी सामग्री का संक्षिप्त पूजन करें। ध्यान रखें प्रत्येक सोमवार को अलग-अलग सोम शक्ति जीवट प्रयोग में लें। फिर निम्न मंत्र का उच्चारण कर भगवान शंकर का आवाहन करें।

ऊँ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमरू भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोदभवाय नमो नमरू
ऊँ शिवाय नमरू आवाहनं समर्पयामि।।

ध्यान

नमस्ते निष्कल रूपाय नमो निष्कल तेजसे नमरू सकलनाथया नमस्ते सकलात्मने आत्मने ब्रह्मणे तुभ्यमनन्त गुण शक्त्ये सकलाकल रूपाय शम्भवे गुरूवे नमरू ऊँ शिवाय नमरू ध्यानं समर्पयामि।।

दो आचमनी जल चढ़ावें

पाद्यं समर्पयामि नमरू अर्घ्यं समर्पयामि,
आचमनीयं जलं समर्पयामि नमरू।

फिर धूप, दीप, अक्षत, कुंकुम, पुष्प से पूजन कर जो साधना सम्पन्न करनी हो उसका मंत्र जप करें तथा संकल्प भी उसी साधना का लें।

शिव-गौरी शिवोहम धनदा साधना

जीवन की श्रेयता तो तभी संभव है, जब व्यक्ति का समाज में एक वर्चस्व हो, जहां उसकी बातों को ध्यान पूर्वक सुना जाता हो, सम्मान पूर्वक ग्रहण किया जाता हो और धन, ऐश्वर्य से भी सम्पन्न हो, क्योंकि धन-सम्मान आदि आज के भौतिक जीवन में महत्वपूर्ण एवं आवश्यक बन गये हैं। भगवान शिव के कुबेराधिपति स्वरूप की साधना करने से साधक रावण के समान अतुलनीय धनवान, ऐश्वर्यवान और वैभवशाली होता है और लक्ष्मी अपने 'श्री' स्वरूप में भगवान शिव के साथ अखण्ड रूप से विद्यमान होती है और सांसारिक जीवन की भी आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ लक्ष्य प्राप्ति के लिये क्रियाशील बनाये रखती है।

निम्न मंत्र का 04 माला जप नित्य 11 दिनों तक सम्पन्न करें-

मंत्र

।। ऊँ श्रीं स्वर्ण वर्षा प्रदाये महाशिवाय शं ऊँ नमः।।

मंत्र जप सम्पन्न करने के बाद सभी सामग्री को पूजा स्थान में स्थापित कर नित्य इनके सामने सुबह शाम अगरबत्ती और दीपक जलाकर ''ऊँ शाम्भ् शिवाय नमः'' मंत्र का एक माला जप अवश्य करें। साधना समाप्ति के पश्चात् सोम शक्ति जीवट को किसी शिव मंदिर में अर्पित कर दें और अन्य सभी सामग्री को लाल कपड़े में बांधकर नदी अथवा तालाब में विसर्जित कर देना चाहिये।

साधना सामग्री न्यौ. ₹ 950/-

स्वंयभू शिवोहम गौरी धनदा दीक्षा न्यौ. ₹ 2100/-



ये हैं अष्ट सिद्धियां !

अष्टादश पुराणों में 'भगवतपुराण' का विशिष्ट स्थान है। इस पुराण में स्पष्ट उल्लेख है कि जब साधक इंद्रियो, प्राण और मन को अपने वश में करके अपना चित्त एकमात्र भगवान श्रीकृष्ण में लगाने और उनकी धारणा करने लगता है तो उस साधक के सामने बहुत-सी सिद्धियां उपस्थित हो जाती है।

धारणायोग के पारगामी योगियों ने अठारह प्रकार की सिद्धियां बतायी हैं। लेकिन, उनमें आठ प्रमुख सिद्धियां हैं जो प्रधान रूप से भगवान श्रीकृष्ण में रहती हैं और उन्हीं की कृपा से सिद्धियां साधक को प्राप्त होती हैं। अणिमा, लघिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशिता, वशिता और कामावसायिता- ये आठ प्रकार की सिद्धियां मानी गयी हैं। अणिमा, महिमा और लघिमा- ये तीनों शरीर की सिद्धियां हैं। प्राप्ति इंद्रियों की सिद्धि है। प्राकाम्य लौकिक और पारलौकिक पदार्थों का इच्छानुसार अनुभव कराने वाली सिद्धि है। माया और उसके कार्यों को इच्छानुसार संचालित ईशिता नामक सिद्धि करती है। विषयों में रह कर भी उनमें आसक्त न होना वशिता है तथा मनचाहे सुख पा लेना कामावसायिता नामक आठवीं सिद्धि है।

किस धारणा से कौन-सी सिद्धि प्राप्त होती है, इस बारे में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि 'अणिमा' नामक सिद्धि के प्राप्त होते ही साधक को चट्टान में प्रवेश करने की शक्ति मिल जाती है। यह सिद्धि श्रीकृष्ण जी के निरन्तर स्मरण से प्राप्त होती है। श्रीकृष्ण ने उद्धवजी से स्पष्ट कहा है कि जो साधक मेरे तन्मात्रात्मक शरीर के अतिरिक्त किसी और वस्तु का चिंतन नहीं करता उसे अणिमा नाम की सिद्धि मिल जाती है। ऐसा प्रतिपादन भगवतपुराण में मिलता है-

भूतसूक्ष्मात्मनि मयि तन्मात्रं धारयेन्मन:।
अणिमानमवाप्नोति तन्मात्रोपासको मम्।।

महत्व के रूप में भी श्रीकृष्ण ही प्रकाशित हो रहे हैं और वे उसी रूप में समस्त व्यावहारिक ज्ञानों का केन्द्र है। जो भी साधक उनके इस रूप का चिंतन करता है उसे 'महिमा' नामक सिद्धि प्राप्त होती है। इस सिद्धि में आकाशादि पंचमहाभूतों की महत्ता साधक को प्राप्त हो जाती है-

महत्यात्मन्मयि परे यथासंस्थं मनो दधत।
महिमानमवाप्नोति भूतानां च पृथक पृथक।।

परमाणुरूप सूक्ष्म वस्तु बनने की सामर्थ्य प्राप्त हो जाना 'लघिमा' नामक सिद्धि है। जो साधक भगवतपुराण में अपनी पूर्ण श्रद्धा एवं निष्ठा रखते हैं वे वस्तुत: श्रीकृष्ण के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं निष्ठा के भावों से सराबोर होते हैं। भगवतपुराण का कथन है कि जो योगी वायु आदि चार भूतों के परमाणुओं को श्रीकृष्ण का ही रूप समझ कर अपने चित्त को तदाकार कर लेते हैं उन्हें लघिमा नामक सिद्धि प्राप्त होती है-

परमाणुमये चित्तं भूतानां मयि रञ्जयन्।
कालसूक्ष्मार्थतां योगी लघिमानमवाप्नुयात्।।

सम्पूर्ण इन्द्रियों पर अधिकार हो जाना 'प्राप्ति' नामक सिद्धि है। जो योगी सात्विक अहंकार को श्रीकृष्ण का स्वरूप समझ कर उनके उसी रूप में अपने चित्त की धारणा करता है वह समस्त इन्द्रियों का अधिष्ठाता हो जाता है। श्रीकृष्ण का चिंतन करने वाला भक्त सहज ही प्राप्ति नामक दुर्लभ सिद्धि प्राप्त कर लेता है-

धारयन्मय्यहंतत्त्वे मनो वैकारिकेऽखिलम्।
सर्वेंद्रियाणामात्मत्वं प्राप्तिं प्राप्नोति मन्मना:।।

साधक के इच्छानुसार सभी भोगों का प्राप्त हो जाना 'प्राकाम्य' नामक सिद्धि कही गयी है। जो पुरूष महतत्वाभिमानी सूत्रात्मा श्रीकृष्ण में अपना चित्त स्थिर करता है उसे प्राकाम्य नामक सिद्धि प्राप्त होती है-

महत्यात्मनि य: सूत्रे धारयेन्मयि मानसम्।।
प्राकाम्यं पारमेष्ठयं मे विंदतेऽव्यक्तजन्मन:।

शरीरों और जीवों को अपने इच्छानुसार प्रेरित करने की सामर्थ्य 'ईशिता' नामक सिद्धि है। भागवतपुराण में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने उद्धव से कहा कि जो त्रिगुणमयी माया के स्वामी मेरे काल स्वरूप विश्वरूप की धारणा करता है वह ईशित्व नामक सिद्धि प्राप्त कर लेता है-

विष्णौ त्र्यधीश्वरे चित्तं धारयेत कालविग्रहे।
स ईशित्वमवाप्नोति क्षेत्र क्षेत्रज्ञचोदनाम्।

सब को अपने वश में कर लेने की शक्ति का नाम है- 'वशिता'। जो योगी श्रीकृष्ण के नारायण स्वरूप में, जिसे भगवान भी कहते हैं, मन लगा देता है उसमें श्रीकृष्ण के स्वाभाविक गुण प्रकट होने लगते हैं और उसे वशिता नामक सिद्धि प्राप्त हो जाती है-

नारायणे तुरीयाख्ये भगवच्छब्दशब्दिते।
मनो मय्यादधद् योगी मद्धर्मा वशितामियात्।।

'कामावसायिता' नामक सिद्धि प्राप्त होने पर साधक की सारी कामनाये पूर्ण हो जाती हैं। मन की कोई कामना शेष रह जाती। जो साधक अपना निर्मल मन निर्गुण ब्रह्म स्वरूप श्रीकृष्ण में स्थित कर लेता है उसे परमानंद स्वरूपिणी कामावसायिता नामक सिद्धि प्राप्त होती है-

निर्गुणे ब्रह्मणि मयि धारयन् विशदं मन:।
परमानंदमाप्नोति यत्र कामोऽवसीयते।।

इन आठ सिद्धियों को सारी सिद्धियों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। साधारण शब्दों में हम इन सिद्धियों को इस तरह समझ सकते हैं कि 'अणिमा' नामक सिद्धि प्राप्त होने पर साधक किसी को दिखायी नहीं पड़ता और कठिन-से-कठिन पदार्थ में प्रवेश कर जाता है। 'महिमा' नामक सिद्धि प्राप्त होने पर योगी अपने आपको विशाल बना सकता है। 'लघिमा' नामक सिद्धि साधक को मन के अनुसार हल्का बना देती है। इच्छित पदार्थों की प्राप्ति हो जाना 'प्राप्ति' नामक सिद्धि है। 'प्राकाम्य' नामक सिद्धि प्राप्त होने पर साधक पृथ्वी में समा सकता है और आकाश में भी उड़ सकता है। सब पर शासन की सामर्थ्य 'ईशिता' नामक सिद्धि में है तथा दूसरों को वश में करने की सामर्थ्य 'वशिता' नामक सिद्धि में। सारी कामनाओं को पूरा करने की सामर्थ्य 'कामावसायिता' नामक सिद्धि में है।

इन प्रमुख आठ सिद्धियों के अलावा दूरश्रवण, दूरदर्शन, मनोजव आदि सिद्धियां भी श्रीकृष्ण के निरन्तर स्मरण एवं ध्यान से प्राप्त होती है। जो विचारशील पुरूष श्रीकृष्ण की उपासना करते हैं और योगधारणा के द्वारा उनका चिंतन करते है, उन्हें सभी सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं-

उपासकस्य मामेवं योगधारणया मुने:।
सिद्धय: पूर्वकथिता उपतिष्ठन्त्यशेषत:।।

भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं उद्धवजी से कहा है कि हे उद्धव! जिसने अपने प्राण, मन और इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली है, जो संयमी है और मेरे ही स्वरूप को धारण कर रहा है उसके लिये कोई भी सिद्धि दुर्लभ नहीं है-

जितेंद्रियस्य दांतस्य जितश्वासात्मनो मुने:।
मद्धारणां धारयत: का सा सिद्धि: सुदुर्लभा।।



जगतगुरु-तुम्हीं हो हमारा जीवनसार

गुरू और शिष्य का संबंध और किस प्रकार शिष्य गुरूत्व में लीन हो कर आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है, इसके साथ ही अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को आत्मश्चेतना जाग्रत करने में व्यतीत कर पूर्णता प्राप्त कर सकता है, इन्हीं सब विषयों के संबंध में सद्गुरू की ओजस्वी वाणी यह महान प्रवचन -

गुरूर्चिन्यं रूपं अहेतुं प्रमेयं ध्यानं विचिन्त्यं परमेव पाद् यं
गराह्मा सतां पूर्णामि दैव तुल्यं निर्वेद रूपम परं गुरूवै सहेतुम्

यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कथन है ऋषि का, एक महत्वपूर्ण चिन्तन है आर्ष का, महर्षि का, क्योंकि जीवन तब तक **निस्सार** है, **व्यर्थ** है जब तक जीवन का कोई प्रयोजन न हो।

यदि जीवन का कोई लक्ष्य ही नहीं है, जीवन का कोई प्रयोजन ही नहीं है, जीवन का कोई चिन्तन ही नहीं है, फिर जीवन क्या है? किसे हम जीवन कहे।

- क्या सांस लेने की क्रिया को हम जीवन कह सकते है?
- क्या जिन्दा रहने की कल्पना को जीवन कह सकते है?
- क्या सन्तान उत्पन्न करने की भावना को जीवन कह सकते है?

यह सब तो जीवन नही है, इन तत्वों के माध्यम से तो जीवन का निर्माण नहीं हो सकता और जब जीवन का मूल्य ओर महत्व ही ज्ञात नहीं है, जब जीवन का अर्थ और जीवन का मकसद ही हमें पता नहीं है, तो फिर हम वैसे ही **पशु** है जो डोलते रहते है, एक अज्ञात नकेल डाले हुये, उनको स्वयं को ज्ञान नहीं, कि वे किस तरफ जा रहे है, उनको खुद को पता नहीं कि वे कौन से रास्ते पर खडे है? उनको खुद को यह ज्ञान नहीं कि उनकी मंजिल कहा समाप्त होगी? जिस रास्ते का प्रारम्भ पता नहीं है, जिस रास्ते का अंत पता नहीं है, उस रास्ते पर चलना तो अंधे की तरह से चलना होता है, जिसका सूत्र हमारे हाथ में नहीं है, जिसका चिन्तन और ज्ञान हमारे हाथ में नहीं है, तो हम किन शब्दों में उसे जीवन कह सकते है?

हम तो केवल अपनी लाश को कन्धों पर उठाये हुये श्मशान की ओर बढ़ते चले जाते है, एक क्षण रूक कर सोचने की जरूरत है..... कि क्या हमारा जीवन **पशु जीवन** से उपर उठा है? क्या हमने अपने जीवन के मकसद को समझा है? .....

क्या हम जानते है कि हमे जीवन में कहां तक पहुंचना है? ..... क्या हमने कभी निर्णय लिया है कि जीवन के किस भाग पर हम खड़े है? हमने कभी सोचा ही नहीं, हमने तो **भोग-विलास** को ही जीवन मान लिया, हमने तो **सांस लेने की क्रिया** को ही जीवन मान लिया, हमने तो **जिन्दा रहने की कल्पना** को ही जीवन मान लिया..... यह कितनी छोटी सी बात है। **कपड़े पहिनना, कपड़े छोड़ देना, सांस लेना, सांस छोड़ देना, भोजन करना, पानी पीना, अपने जीवन के अन्य क्रियाकलाप करना** ये तो जीवन के प्रकार है.....जीवन तो नहीं है। जीवन तो किसी और ताने- बाने से बुना होता है।

जीवन तो वह होता है, जिसका **सूत्र** हमारे हाथ में होता है। जीवन तो वह होता है, जिसका मर्म हमें ज्ञात होता है। हम जिन्दा तो है..... **सामाजिक** और **वैज्ञानिक** परिभाषा में हम जीवित है, मगर **शास्त्रीय पद्धति** में हम **मृत** है, क्योंकि विज्ञान तो यह कहता कि जिसमें चेतना नहीं है, जिसमें इस बात का होश नहीं है कि मैं क्या हूँ? कहा जा रहा हूँ? कहा पहुंचना है? वह **मृत** है।

हम **एक क्षण** अगर रूक कर के सोचें तो हमें ज्ञात ही नहीं कि हमें कहां पहुंचना है? हमने तो **चांदी के चंद टुकड़ो** को इकट्ठा करने की क्रिया को ही जीवन मान लिया दो-चार मकान बना लेने की **जीवन पद्धति** को ही जीवन मान लिया। यह तो जीवन का एक प्रकार है, **भौतिक दृष्टि में,** चाहे **निर्धनता** में जीये, चाहे अमीर में जीये वैभव में जीये। जब तक जीवन के इस मूल चिन्तन को नहीं समझेंगे तब तक सही अर्थो में जीवित भी नहीं हो पायेंगे, तो फिर जीवन की परिभाषा को समझायेगा कौन?

कौन बतायेगा कि हमारे जीवन का मकसद क्या है?

कौन बतायेगा कि यह जीवन व्यर्थ है ?

कौन समझायेगा कि यह जीवन प्रामाणिक है ?

कौन समझायेगा कि जीवन को किस तरीके से जीना चाहिये?

क्या आपाधापी में भागते रहने को जीवन कहते है?

क्या हड़बड़ाट में चलते रहने को जीवन कहते है?

क्या हर समय व्यस्त रहने और तनाव में से गुजरने की क्रिया को ही जीवन कहते है?

क्या वृद्धता और जर्जरता, बीमारी, अशिक्षा, अभाव, कष्ट और पीड़ा को जीवन कहते है?

क्या कफन औढ़ कर श्मशान में सो जाने को जीवन कहते है?



शास्त्रों में तो इसको जीवन नहीं कहा जाता है। शास्त्रों में इस क्रिया को मृत्यु कहा जाता है, और हम सही अर्थो में जीवत मुर्दे है, जो चलते है, मगर होश नहीं है, जो खाते -पीते तो है, मगर उसका कोई अर्थ नहीं है, क्योंकि हमने कभी इन रहस्यों को, उस चिन्तन को सोचा-समझा ही नहीं ..... और नहीं सोचा-समझा तो उसका आनन्द भी नहीं लिया जा सकता। जीवन का आनन्द तो वह लेते है, जो जीवन को समझते है। जो कभी मानसरोवर के किनारे गया ही नहीं, वह मानसरोवर के आनन्द को समझ ही नहीं सकता। जो छोटी-छोटी तलैयाओं के किनारे बैठा रहा हो, वह क्या जाने कि मानसरोवर में क्या आनन्द है, कितनी विस्तृत झील है, कितना अतल जल है, कितना स्वच्छ निर्मल पानी है, वह उसके वैभव को, वह उसकी सम्पदा को, वह उस झील की विशालता को नहीं समझ सकता, वह उस तलैया को ही जीवन मान बैठा है।

मेंढ़क जब कुएं के एक किनारे से चलना शुरू कर के और पूरा चक्कर लगा कर फिर उसी स्थान पर आ जाये ओर कहे- यही पूरा विश्व है, तो उसके हिसाब से तो यही विश्व है, क्योंकि उसने पूरा चक्कर काटा है..... मगर यदि कभी मेंढ़क को तालाब में डाल दिया जाये तो उतने अथाह जल को देखकर वह आश्चर्य में पड़ जायेगा -अरे मैंने तो कुछ नहीं देखा था, दुनिया तो कुछ और है, संसार तो कुछ और है ..... और यदि वह भूल से भी उस तालाब का पूरा चक्कर ला दे और यह मन में प्रसन्नता व्यक्त कर ले, कि अब मैनें पूरा विश्व देख लिया है, पूरा जीवन देख लिया है, अब इससे बड़ा तालाब , इससे बड़े जल की राशि, इससे बड़ा जलाशय क्या हो सकता है? यह तो बहुत लम्बा चौड़ा तालाब है, और यदि वह समुद्र में गिर जाये और समुद्र के अथाह जल को देखे तो उसे और अधिक आश्चर्यचकित हो जाना पड़ेगा, कि वह तो एक छोटा सा हिस्सा था, वह जीवन था ही नहीं।

तुम्हारी भी स्थिति उस **कुएं के मेंढ़क की तरह** है, तुमने भी एक सीमित दायरें में घूमने की क्रिया को ही जीवन मान लिया है। पत्नी है, एक दो पुत्र है, थोड़ा सा धन है, मकान है, समाज में सम्पदा है, सम्मान है और इसी को तुमने जीवन मान लिया है, क्योंकि इससे बाहर निकलने का तुमको ज्ञान ही नहीं रहा, कभी बाहर गये ही नहीं, कभी देखा ही नहीं कि इससे बड़ा भी एक समाज है, स्थान है ..... और जब तुम वहां जाओंगे, तो तुम देखोंगे कि तुम जो जीवन जी रहे थे , तुम जिस घेरे में आबद्ध थे, वह तो एक बहुत छोटा सा हिस्सा है, जिसमें कोई आनन्द नहीं है, वह तो एक विवशता है, एक **मजबूरी** है। समाज में जिन्दा रहना तुम्हारी मजबूरी है। परिवार का पालन-पोषण करना तुम्हारी मजबूरी है। समाज तुम्हारे साथ या परिवार तुम्हारे साथ नहीं चल सकता, परिवार का सहयोग तुम्हें जीवन में नहीं मिलेगा।

जब वाल्मिकी डाकू थे..... ऋषि तो बहुत बाद में बने..... उन्होंने रामायण की रचना तो बहुत बाद में की, पहले तो वह **भयानक डाकू** थे, जिनके नाम से पूरा आर्यावर्त घबराता था, थर- थर कांपता था, उस रास्ते से कोई राहगीर जा ही नहीं सकता था..... **लूटना** ..... **खसोटना** ..... **मारना** ..... छीन लेना ही उसका कार्य था एक बार नारद उसके हाथ में पड़ गये नारद तो वीणा बजाते हुये नारायण -नारायण करते चले जा रहे थे और डाकू वाल्मिकी ने उन्हें पकड़, सुबह से कोई शिकार मिला ही नहीं, बड़ी मुश्किल से यह आदमी नजर आया, उसने उनकी वीणा छीन ली। नारद ने कहा- अरे! तुम एक साधु को लूट रहो हो, तुम ये क्या कर रहे हो?

उसने कहा- कोई दूसरा मिला ही नहीं, और जब तक मैं लूट-खसोट नहीं कर लूं , तब तक मैं भोजन करता ही नहीं, कोई कार्य करता हूँ..... तो भोजन करता हूँ, तुम पहले ही व्यक्ति मिले, दोपहर हो गई, यह वीणा बेच कर कुछ तो धन मिल ही जायेगा, और तुम्हारे कपड़े भी खोल लूं, ये कपड़े भी बाजार में बेच दूंगा।



नारद ने कहा- यह तो **पाप** है, यह तो **अधर्म** है ..... किसी साधु को, किसी संन्यासी को, किसी सामाजिक व्यक्ति को इस प्रकार से पकड़ और उसका सामान छीन लेना क्या उचित है।

उसने कहा-उचित तो नही ..... मगर मैं यह करूंगा जरूर।

वाल्मिकी ने कहा- **जरूर ! यह पाप कर्म है, किसी की हत्या कर देना पाप है**

किसी को छल से लूट लेना पाप है .... मै जानता हूँ कि पाप है, मगर मैं अकेला ही तो पाप नहीं कर रहा हूं, अपने परिवार के लिये कर रहा हूं, परिवार मेरा साथ देगा ही।

नारद ने कहा- पहले तुम अपने परिवार वालों से पूछ लो।

वाल्मिकी ने एक रस्सी से नारद को पेड़ से बांध दिया और घर गये।

बुड्ढी मां को पूछा - तू मुझे बता, कि मैं जो छीना- झपटी, लूट-खसोट, हत्याये कर रहा हूं, यह पाप तो है ही।

मां ने कहा- बेटा जरूर पाप है।

वाल्मिकी ने कहा- मैं इससे तुम लोगों को रोटी खिला रहा हूं, अन्न दे रहा हूं, आवास दे रहा हूं, तो तुम भी पाप में भागीदार हो।

मां ने कहा- मैं तो पाप में भागीदार नहीं होती, यह तुम्हारा कर्तव्य है कि मां को रोटी खिलाओं, तू कैसे कमा कर लाता है यह तू जाने ..... पाप करेगा तो पाप का फल तू ही भुगतेगा, मैं तो भुगतंगी नहीं .....और मैंने पाप के लिये तुझे कहा भी नहीं, मैं इसमें भागीदार नहीं हो सकती।

वाल्मिकी पत्नी के पास गये, पत्नी को कहा - देख मैं डाकू हूं और सैकड़ो लोगो की **हत्याये** की है, **लूटा** है, **खसोटा** है, **मारा** है, औरतों के गहने छीने है और तुझे दिये है, तुझे पहनाये है, क्या छीनना, झपटना, लूटना, मारना पाप है?

पत्नी ने कहा- नि:संदेह पाप है।

वाल्मिकी ने पूछा - यह तुम्हारे लिये कर रहा हूं, क्योंकि ऐसा करने पर ही तो मैं तुम्हें अन्न दे सकता हूं भोजन दे सकता हूं, आवास दे सकता हूं, गहने दे सकता हूं और तुम्हारे लिये तो कर रहा हूं, तो तुम भी तो पाप में भागीदार हो।

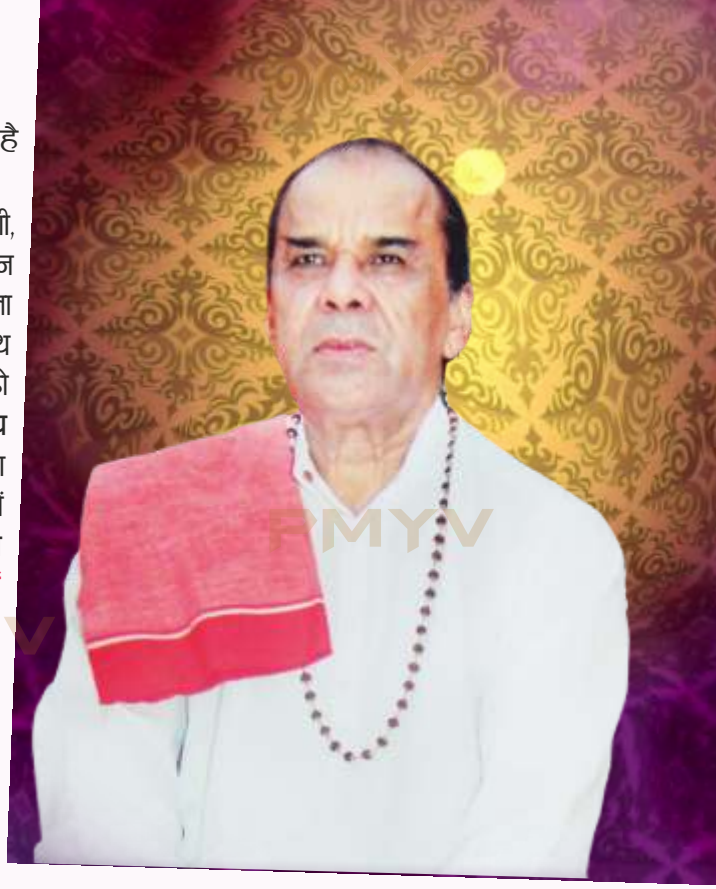
पत्नी ने कहा- मैं तो पाप में भागीदार नहीं हूं, मैं तो हूं ही नहीं, एक पति का कर्तव्य है, धर्म है, कि वह पत्नी का भरण पोषण करे, तुम मेरा भरण - पोषण करो ..... कैसे करते हो, यह तुम्हारी जिम्मेदारी है, यह तुम्हारा धर्म है, पाप का फल तुम्हें भोगना पड़ेगा।

वाल्मिकी वापस आ गये, नारद को पेड़ से खोला और छोड़ दिया, उसी क्षण उन्होंने डाकू का कार्य छोड़ कर के, छीना झपटी का कार्य छोड़ साधु जीवन प्रारम्भ कर दिया ..... क्या तुम भी वाल्मिकी डाकू से कुछ कम हो?..... क्या तुम **छीना - झपटी** नहीं कर रहे?..... **छल** नहीं कर रहे?.... **झूठ** , **कपट** और असत्य नहीं कर रहे?.....और यह सब तुम परिवार वालो के लिए कर रहे हो, और तुम्हें यह गलतफहमी है, कि ऐसा करने पर परिवार वाले तुम्हारा साथ देंगे, पाप में भागीदार होंगे। पाप में भागीदार तो वे नहीं होंगे, **असत्य** और **अधर्म** के वे भागीदार नहीं बनेंगे। तुम्हें अकेले ही यह पाप भोगना पड़ेगा, तुम खुद ही इसके जिम्मेदार हो -

- फिर तुम कब इस चेतना को, इस जीवन को समझ सकोगे?
- कब तुम्हें नारद मिलेंगे?
- कब तुम्हें वे ऋषि मिलेंगे?
- कब तुम्हें समझा सकेंगे कि यह जीवन नहीं है, जो तुम कर रहो हो?
- तुम अपने लिये क्या कर रहे हो?



और जब तक तुम ऐसा करोगे तब तक जीवन में तुम्हें कुछ मिलेगा ही नहीं, तब तक जीवन का तुम अर्थ समझोगे ही नहीं, जरूरत तो तुम्हें यह है कि कोई ऋषि मिले, कोई नारद मिले, कोई गुरू मिले जो तुम्हें समझा सके, जो तुम्हें चेतना दे सके, जो तुम्हारे हृदय पर प्रहार कर सके, जो तुम्हें ज्ञान दे सके ..... यह सब बेकार है, जिस रास्ते पर तुम चल रहे हो उस रास्ते से तो श्मशान की यात्रा ही सम्भव हो सकेगी, यह तो कफन ओढ़ कर श्मशान में सोने की साधना है, प्रयोग है, जीवन है, इसमें कुछ पाना है ही नहीं, खोना ही खोना है, और तुम प्राप्त नहीं कर रहे हो ..... जो कुछ तुम प्राप्त कर रहे हो यह **मकान**, यह **धन**, ये **चांदी के चंद टुकड़े**, ये कागज के **चंद नोट**, यह **पत्नी**, यह **पुत्र**..... यह तो मत्यु के साथ पीछे खड़े रहे जायेंगे ,



यह तुम्हारे साथ- साथ चलेगा ही नहीं, तुम्हारे साथ उनकी यात्रा नहीं है और जो तुम्हारे साथ नहीं है, वे तुम्हारे सहयोगी नहीं है।

साथ तो तुम्हारे जीवन चलेगा, तुम्हारी **प्राणश्चेतना** चलेगी, तुम्हारी **भावनाये** चलेगी। यदि तुम ऐसा चिन्तन करते हो, यदि तुम्हारे मन में ऐसा **विचार** है, तो तुम जीवन का पहला सबक सीख सकते हो, पहला **अध्याय पढ़** सकते हो, मगर उसके लिये जरूरत है, दमखम के साथ कहने वाले **गुरू** की, जो तुम्हें समझा सके, कि तुम जो कुछ कर रहो हो वह तुम खुद कर रहे हो, उसके लिये कोई **सहयोगी** नहीं है। तुम्हारे **पाप कार्य** में कोई **भागीदार** नहीं है, तुम जो **झूठ** और **छल** कर रहे हो उसका फल भी तुम्हें ही भोगना पड़ेगा .....और जिन्होंने भी अपने जीवन में **झूठ, छल, कपट** और **असत्य** का आचरण किया, उनका **बुढ़ापा** अत्यन्त **दुःखदायी** अवस्था में व्यतीत हुआ..... **रोगों से जर्जर, अभावों से पीड़ित, असत्य, परेशान, दुःखी, अतृप्त**। जब बेटे उनको पूछते ही नही, जब बहुये उनका साथ देती ही नहीं और समाज उन्हें **धिक्कारता** है कि इसने जीवन भर छल- कपट किया है।

क्या तुम ऐसा जीवन चाहते हो?

क्या तुम ऐसा बुढ़ापा चाहते हो?

क्या तुम ऐसा चाहते हो कि मृत्यु तुम्हारा गला पकड़ ले और तुम छटपटाओं?

क्या तुम ऐसा चाहते हो कि मरते समय तुम्हारी आंखों में से आंसू ढुलके, और कोई हमदर्दी दिखाने वाला न हो?

क्या तुम ऐसा जीवन चाहते हो कि मृत्यु के बाद सब लोग धिक्कारे, और कोई तुम्हारे प्रति कृतज्ञता ज्ञापित नहीं करे?

किसी की आंख नही भीगे, किसी के मन में रूलाई नहीं फूटे, क्या तुम ऐसा जीवन चाहते हो?

ऐसा तुम्हारा जीवन किस काम आयेगा, क्या प्रयोजन है इस जीवन का? क्योंकि इस जीवन को लाश की तरह उठा कर के तो तुम इस जीवन में कुछ प्राप्त है नहीं कर सकते, और इसीलिये नहीं कर सकते कि **यह सब जीवन है ही नहीं**। जो जीवन है, वह तो पत्थरों के ढ़ेर को उठाकर चलने की क्रिया है जो **झूठ के पत्थर** है, **कपट के पत्थर** है, **असत्य** और **व्यभिचार के पत्थर** है और उन्हें प्राप्त होता है **दुःख**, परेशानियां, **अड़चने, बाधाये, रोग, जर्जरता, बुढ़ापा** और **मृत्यु** ..... यही तुम्हारे सामने है। दो-चार कदम चलने पर ही इनका सामना करना पड़ेगा, फिर तुम चाहे कितनी कुछ भी करो, बेकार है..... फिर कोई तुम्हारा साथ नहीं देगा, **घर वाले भी नहीं, पत्नी भी नहीं, पुत्र भी नहीं, बन्धु-बान्धव भी नहीं, समाज भी नहीं।**

क्योंकि तुमने अपने जीवन में ऐसा **दर्शक ढूंढा** ही नहीं जो तुम्हे **ज्ञान** दे सके, झकझोर सके, **चेतना दे** सके, **दमखम के साथ तुम्हारे साथ खड़ा हो सके**, तुम्हें कह सके कि यह सब गलत है, तुम्हें कह सके कि तुम गलत रास्ते पर हो, तुम्हें कह सके कि यह रास्ता श्मशान की ओर जाता है..... **अमृत** की ओर नहीं, **सुख** और **सौभाग्य** की ओर नहीं, आनन्द की ओर नहीं।

- यदि आनन्द की यात्रा नहीं है, सौभाग्य की यात्रा नहीं है तो **वह जीवन नहीं है**। ऐसे तो तुम्हारे बाप-दादा, परदादा हजारों लोग जाकर श्मशान में मृत्यु को प्राप्त हो गये, और आज उनका नाम लने वाला भी कोई नहीं है। तुम भी उसी तरीके से **मृत्यु को प्राप्त हो जाओगें** .....और तुम्हें कोई पूछने वाला नहीं होगा, कोई तुम्हारे लिये विचार करने वाला भी नहीं होगा, कोई अहसास करने वाला भी नहीं होगा, कि तुमने कितना प्रेम किया है।

-और इसीलिये जीवन में **गुरू की जरूरत** होती है..... जीवन के मध्य में। उस गुरू को प्राप्त करने की क्रिया भी तुम्हें ही करनी पड़ेगी, गुरू स्वयं तुम्हारे पास आकर के खड़ा नहीं होगा, तुम्हें ढूंढना पड़ेगा। **नदी को खुद गंगोत्री से चलकर समुद्र की ओर जाना होगा, समुद्र उठकर गंगोत्री के पास नहीं पहुँचेगा। तुम्हें खुद उठ कर उन पतों के पास, पुष्पों के पास पहुंचना पड़ेगा, जहां सुगंधित हवा है, जहां आनन्द की हिलोर है** ..... वे खिलखिताते, झूमते पुष्प तुम्हारे पास आकर के खड़े नहीं हो जायेंगे। यात्रा तो तुम्हें स्वयं को करनी होगी, तुम्हें स्वयं को खोजना होगा। जिस प्रकार से तुम धन खोजते हो, पुत्र खोजते हो, उसी प्रकार से गुरू की खोज करना भी तुम्हारे लिये अनिवार्य है, आवश्यक है- ऐसा गुरू, जो सशक्त हो- जो समर्थ- हो जो **योग्य** हो- जो प्रहार करने वाला हो- जो हाथ पकड़ के समझाने वाला हो- जो तुम्हें चेतना देने वाला हो।

इस यात्रा में तुम्हारे अन्दर कई प्रकार की **भ्रांतिया** आयेगी, क्योंकि तुमने इन भ्रांतियों को ही पाल रखा है तुमने अपने अंदर

शक, संदेह, कपट और **व्याभिचार** पाल रखा है, और वे सब तुम्हारे सामने तन के खड़े हो जायेंगे, तुम्हारे मार्ग को पथ भ्रष्ट करेंगे तुम्हें **कुमार्ग** पर गतिशील करेंगे, वे कहेंगे- गुरू की खोज व्यर्थ है, तुम्हें यह कहेंगे- यह समय बर्बाद करना है। तुमने अपने जीवन में छल को प्रश्रय दिया है। तुमने अपने जीवन में **कपट** का साथ दिया है, तो वे इस समय तुम्हारें सामने खड़े रहेंगे, क्योंकि इससे उनका **स्वार्थ** समाप्त होता है।

कायर और **बुजदिल** हताश हो जाते है, **निराश** हो जाते है, खोज बंद कर देते है, मगर जो हिम्मती है, दृढ़ निश्चयी है, जो एक क्षण में जल उठने वाले है, जो निश्चय कर लेते है कि मुझे कुछ करना है, खोज करनी है, मुझे घिसा- पिटा जीवन नहीं जीना है, मुझे अपने जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेना है, जो **जीवन का आनन्द** है, जो **जीवन का ऐश्वर्य है,** जो **मृत्यु** से **अमृत्यु** की ओर जाने वाला है, जो आनन्द प्रदान करने वाला है, ऐश्वर्य प्रदान करने वाला है, जो सही अर्थो में पूंजी देने वाला है, धनवान बनाने वाला है, और उसकी खोज में जो पहला कदम बढ़ा देता है, वह **साधक** है, वह **शिष्य** है।

जो निश्चय करके यह प्रयत्न करता है कि मुझे **गुरू** को प्राप्त करना ही है, वह **सन्यासी** है, वह **योगी** है। दूसरा, जो इस रास्ते पर **गतिशील** होने की क्रिया करता है, वह **योगी** है। दूसरा, जो इस रास्ते पर गतिशील होने की क्रिया करता है, वह सही अर्थो में **तपस्वी** है। **जंगलों में खाक छानने वाले को तपस्वी नहीं कहते, चारों तरफ आग लगा कर बीच में बैठने वाले को योगी नहीं कहते, जो जीवन के मर्म को समझने की कोशिश करते है, वे योगी और सन्यासी है, जो गुरू की खोज में आगे बढ़ते है, वे साधु है, जो गुरू को प्राप्त करके ही रहते है वे शिष्य है** .....और जो प्राप्त कर लेता है उसे जीवन में एक रास्ता मिल जाता है, उसे जीवन में एक चेतना मिल जाती है, वह निश्चय ही उस **जीवन- पथ** पर **तेजी के साथ अग्रसर** हो जाता है।

शिष्य किसी हाड़ मांस के पिण्ड को नहीं कहते।

-शिष्य तो भाव है।

-शिष्य तो चेतना है।

-शिष्य तो समर्पण का एक प्रकार है।

- जिसमें समर्पण नहीं, वह शिष्य हो ही नहीं सकता।

किसी आँख, नाक, कान, हाथ, पैर वाले को शिष्य नहीं कहते। चलने फिरने वाले व्यक्ति को शिष्य नहीं कहते, **शिष्य तो उसे कहते है, जिसमें श्रद्धा और समर्पण है, जो इन दोनों से निर्मित होता है वह शिष्य कहलाता है**.....और अगर वह शिष्य बनता है, तो उसे रास्ते का **ज्ञान** होता है, भान होता है वह जीवन के रास्ते पर गतिशील हो सकता है।

मात्र दीक्षा लेने वाले को शिष्य नहीं कहते, सिर मुंड़ाने वाले को भी शिष्य नहीं कहते, हरिद्वार में स्नान करने वाले को भी शिष्य नहीं कहते, और गुरू के पैर दबाने वाले को भी शिष्य नहीं कहते, यह तो सब उसके प्रकार है।

शिष्य का तात्पर्य है कि- **नजदीक होना। गुरू के बहुत अधिक नजदीक हो जाना और इतना अधिक नजदीक हो जाना कि गुरू और शिष्य में कोई अंतर ही नहीं रहे अगर अन्तर रह गया तो वह शिष्य बना ही नहीं, फिर वह अपने - आप को शिष्य नहीं कह सकता। गुरू और शिष्य में इतना भी गैप नहीं रहना चाहिये, इतना भी अन्तर नहीं रहना चाहिये कि बीच में से हवा भी निकल सके..... उसके जीवन का सारा चिन्तन, सारा क्रियाकलाप गुरूमय ही हो जाता है..... गुरू ही उसका ओढ़ना ..... गुरू ही उसका बिछौना ..... गुरू ही उसका भोजन .....और गुरू ही उसका खाना ..... गुरू की ही वाणी बोलना ..... और गुरू के शब्दों का श्रवण करना ..... और गुरू की सेवा करना .....गुरूमय हो जाना ..... और उसकी आंखों में गुरू का भाव तैरने लगता है।**

इस जीवन मार्ग पर केवल **शिष्य** चल सकता है, साधक तो बहुत छोटी सी चीज है, शिष्य के सामने साधक की कोई औकात नहीं होती **योगी, तपस्वी** उसके सामने कहीं ठहर नहीं पातें, उसके सामने **यक्ष , गन्धर्व, किन्नर** और **देवता** अपने आप में कोई मूल्य नहीं रखते, क्योंकि **शिष्य एक चेतना पूंज होता है, एक दीपक होता है, वह अपने आप में श्रद्धा का एक पूर्ण स्वरूप होता है। समर्पण की साकार प्रतिमा होता है जो गुरू के जागने से पहले जागता है, गुरू के सोने के बाद सोता है।**

जो केवल इस बात का ही चिन्तन करता है कि गुरू की कैसे सेवा की जाये? हम गुरू के किस प्रकार से हाथ पैर बने, नाक बने, आंख बने, सिर बने, विचार बने, भावना बने, धारण बने, किस प्रकार से बने? किस युक्ति से बने ? **जो केवल इतना और केवल इतना ही चिन्तन करता है, वही सही अर्थो में शिष्य कहलाता है ..... और सच्चा शिष्य सही अर्थो में बना हुआ सच्चा शिष्य ही अपने आप उस रास्ते पर खड़ा हो जाता है, जो पूर्णता का रास्ता है।** इसीलिये शिष्य की समान्ता तो देवता, यक्ष , गन्धर्व कर ही नहीं सकतें, तपस्वी और साधु तो बहुत छोटी सी बात है।

शिष्य में कोई अलग तथ्य होता ही नहीं, वह **गुरू** का ही एक भाग होता है । गुरू की आंख को गुरू से अलग करके नहीं देखा जा सकता गुरू के हाथ को गुरू से अलग करके देखा नहीं जा सकता, ठीक उसी प्रकार से **शिष्य को गुरू से अलग करके**

नहीं देखा जा सकता जो केवल सम्पूर्ण दृष्टि से गुरूमय हो जाता है वह शिष्य बन जाता है, ओर वही शिष्य बहुत बड़ा कार्य करता है, संसार का अद्वितीय कार्य। ऐसा ही शिष्य अपनी सेवा द्वारा गुरू को एक अवसर प्रदान करता है कि वह अपने ज्ञान को संसार के सामने रख सके।

यदि गुरू छोटे- छोटें कार्यो में ही व्यस्त हो जायेंगे तो ज्ञान किस समय देंगे ? चेतना किस समय देंगे ? जीवन के मूल्यवान कार्य किस समय करेंगे ? इन छोटी - छोटी चीजों को शिष्य अपने उपर लेकर गुरू को अवसर प्रदान करता है, कि वह ज्ञान की नदी प्रवाहित करे, उनके कार्यो और तनावों को वह अपने ऊपर लेकर के, उनको यह अवसर प्रदान करता है कि वह ज्ञान का मानसरोवर विश्व के सामने जाग्रत करे, चैतन्य करे जिसमें हजारों- लाखों लोग स्नान कर पवित्र हो सकें, जिसमें शिष्य अवगाहन कर सकें यह गुरू की सबसे बड़ी सेवा है, यही शिष्य का सबसे बड़ा कर्तव्य है।

धन देकर गुरू की सेवा नहीं की जा सकती, मिठाई खिलाकर भी गुरू की सेवा नहीं की जा सकती। वह तो गुरू को एक अवसर प्रदान करता है, उनकी व्यस्तता को वह अपने ऊपर झेल लेता है ..... और गुरू को मुक्त कर देता है, जिससे कि अन्य अत्यन्त महत्पूर्ण कार्य सम्पन्न किया जा सके। एक नए ग्रन्थ की रचना की जा सके। एक उपासना का मार्ग खोजा जा सके।

प्राचीन ऋषियों के उन मूर्त वाक्यों को नये सिरे से जाग्रत और चैतन्य किया जा सके। एक नए सिरे से समुद्र का अवगाहन किया जा सके और एक नई गंगा बनाई जा सके..... एक नया गंगोत्री का स्थान बनाया जा सके.....और यदि ऐसा होता है तो शिष्य सामान्य नहीं रहता, फिर उसका कद अपने - आप में बहुत ऊँचाई पर उठ जाता है ..... फिर विश्व उसे श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से दिखाने लग जाता है।



आप यदि शिष्य बनें तो जनक और राम , कृष्ण और महावीर जैसे, बुद्ध और चेतना पुरूष जैसे योग्तम शिष्य बने, जिन्होंने शिष्यता के उन मापदण्डों को छुआ, जो अपने आप में भारतीय संस्कृति के लिये एक चेतना पुंज है। यदि शिष्य इस श्रद्धा और सम्मान को लेकर के, इस समर्पण को लेकर के आगे बढ़ता है, तो फिर उसे ध्यान करने की जरूरत होती ही नहीं, क्योंकि वह तो हर क्षण खोया रहता है, तो अपने गुरू चरणों में। उसे गुरू के चरण दिखाई नहीं देते, वहां हरिद्वार दिखाई देता है। वह उन चरणों को स्पर्श करता है तो उसे ऐसा लगता है, कि जैसे उसने काशी का चरण स्पर्श किया। जब गुरू- चरणामृत का पान किया तो ऐसा लगता है, कि जैसे उसने गंगा, यमुना सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी में अवगाहन कर लिया। वह उन चरणों में काबा देखता है, काशी देखता है, वह इन चरणों मक्का देखता है। वह इन चरणों में अपने सम्पूर्ण देवताओं के दर्शन करता है, फिर उसे अन्य साधनाये तो अपने- आप में गौण हो जाती है।

गुरू का शरीर अपने आप- में ही एक जीवत- जाग्रत मंदिर है, चलता- फिरता मंदिर, ज्ञान का साकार पुंज ..... जब उस साकार पुंज को अपने में समेटे हुये शिष्य आगे बढ़ता है तब शिष्य की आंख बदल जाती है। वह उन सामान्य गृहस्थ लोगो की तरह से गुरू को देखता ही नहीं, उसे गुरू के रूप में ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र, इन्द्र, वरूण, यम, कुबेर, दिग्पाल अपने सामने साकार दिखाई देते है। जब वह भक्ति भाव से गुरू को प्रणाम करता है तो उसे लगता है कि सामने चारों वेद खड़े है, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वेद। गुरू का प्रत्येक शब्द अपने आप' में मंत्रमय हो जाता है, वेद वाक्य बन जाता है, ब्रह्म की दृष्टि होती है, जिसे पाकर वह अपने- आप को धन्य और गौरवशाली अनुभव करने लगता है। ध्यान- प्रक्रिया, तो अपने आप में खो जाने की प्रक्रिया है, अपने- आप को अतल गहराइयों में डूबा देने की प्रक्रिया है। ध्यान का तात्पर्य तो इतना ही है कि उसे अपने शरीर का ध्यान नहीं, ध्यान की प्रक्रिया का तात्पर्य यह है कि मानसरोवर में बहुत गहराई में डुबकी लगाई हो। ध्यान की प्रक्रिया का तात्पर्य तो यह है कि बाहर संसार, बाहरी क्रिया - कलापों का कोई अस्तित्व कोई भान उसे जीवन पर नहीं है ..... ओर जब वह शिष्य बनता है, तब वह उच्चकोटि के ध्यान में संलग्न हो जाता है जो गतिशील ध्यान है, जड़ ध्यान है। जड़ ध्यान तो आंखों बंद करके पालथी मार कर अपने अन्दर उतरने की क्रिया है। वह तो बहुत सामान्य है, और आंख खोलकर ध्यान करने की प्रकिया तो अपने आप में ब्रह्म की प्रक्रिया है। यह ब्रह्म साधना है, गतिशील होते हुये ध्यान करते रहने की पूर्णतया की साधना माना गया है।

'पूर्णमदः पूर्णमिद पूर्णात् दमुच्येते' गतिशील है और पूर्ण बनता जा रहा है..... गतिशील है और पूर्ण बनता जा रहा

है..... गतिशील है और पूर्ण बनता जा रहा है..... गतिशील है और ध्यान करता जा रहा है, क्योंकि गतिशील होते हुये भी उसकी आंख में गुरू का ही बिम्ब रहता है..... हर क्षण .... हर पल... प्रतिपल।

उसके जीवन का कण-कण, रोम- रोम गुरूमय होता जा रहा है, लीन होता जा रहा है, उसका खुद का कोई अस्तित्व होता ही नहीं, उसको अपने शरीर का कुछ भान ही नहीं होता, उसे सुख-दुःख व्याप्त होता ही नहीं, उसे थकावट लगती ही नहीं। वह अहसास ही नहीं करता कि मुझे विश्राम की जरूरत है, उसे तो एक ही चिन्तन रहता है कि मैं गुरू के चरणों में किस प्रकार से रहुं? किस प्रकार से ज्यादा से ज्यादा उनके कार्यो में सहयोग बनूं? किस प्रकार से उनके ध्यान में डूबा रहूं? रात्रि को वह अगर सोता भी है तो उसके मुंह से ही नहीं, उसके रोम-रोम से गुरू शब्द उच्चारित होता रहता है, गुरू मंत्र उच्चारित होता रहता है। उसका प्रारंभ, उसका सूर्योदय गुरू मंत्र से ही होता है, और उसकी निद्रा अवस्था, उसका सूर्यादय गुरू मंत्र से ही होता है, और उसकी निद्रा अवस्था गुरू से ही सम्पन्न होती है। यह गतिशील ध्यान है, यह अपने आप में 'समाधिद' की क्रिया है।

जमीन में गड़ने को समाधि नहीं कहते, वहां तो मुर्दे समाधिगत होते है, गड़ जाते है। जिसे अपने - आप का भान रहता ही नहीं, जो सम्पूर्ण चेतना के साथ गुरू के ज्ञान को, गुरू के कार्य को, गुरू की भावनाओं को, गुरू के आदर को, उनके सम्मान को, उनके शरीर को, उनके सौष्ठव को, अपने आप में पूर्णता देने का प्रयास करता है..... वह समाधि है। जब उसमें कोई दूसरा बिम्ब होता ही नहीं, जब कोई दूसरी चेतना ही नहीं होती, जब कोई दूसरा कार्य होता ही नहीं तब वह समाधि है और यह गतिशील समाधि है, और इसको 'पूर्णत्व समाधि' कहा गया है। जीवन के सम्पूर्ण आयामों में पूर्णता प्राप्त करने हेतु, ब्रह्म्य होने में दो ही तो मुख्य प्रकार है, दो ही तो आधारभूत सत्य है- 'ध्यान' और 'समाधि'।

जहां अपना भान नहीं रहता है वह 'ध्यान' है..... और शिष्य को अपना भान होता ही नहीं, उसका खुद का कोई विचार ही नहीं होता उसकी खुद की कोई क्रिया ही नहीं होती, वह तो खो जाता है, वह अपने- आप में डूब जाता है, निमग्न हो जाता है। गुरू उसे मानसरोवर में छलांग लगाने को कहते है। वह कहते है कि- इस किनारे पर खड़े मत रहो, किनारे पर पड़े घोंघे और पत्थरों को मत उठाओं इन घोंघो से, इन पत्थरों से जीवन का मूल्य नहीं बन सकता।

इन छोटी- मोटी साधनाओं से तुम्हारे जीवन में पूर्णता नहीं आ सकती तुम दो- चार साधनाये कर लोगे तो ठीक वैसा ही होगा, जैसे तुम ने दो चार कंकर, दो- चार कंकर पत्थरों से जीवन का सत्य, जीवन की पूर्णता का आभास नहीं हो सकता। यदि तुम्हें वास्तविक पूर्णतव के दर्शन करने है, यदि तुम्हें ब्रह्मय बनना है, तो तुम्हें किनारे का मोह छोड़ना पड़ेगा, फिर तुम्हें बीच मानसरोवर में छलांग लगानी पड़ेगी, बिना किसी के साथ उस खतरे को उठाते हुये अपने आप को चैलेंज देते हुये, अपने आप को फना करते हुये।

और जो बीच धार में छलांग लगा लेता है, उसके हाथ मोतियों से भरे होते है। बाहर निकलते समय उसके सारे शरीर पर, हाथों में मोती ही मोती होते है, उसकी आंखों में चमक होती है, उसके ललाट में एक प्रशस्तता होती है, उसका भाल हिमालय से भी ऊंचा होता है, उसका सारा शरीर दैदीप्यमान हो उठता है.....और यह जीवन का सत्य है, डूब जाना अपने- आप में जीवन की पूर्णता है, क्योंकि वह सही अर्थो में पहली बार अपने समान के बंधन को तोड़ कर पंख फड़फड़ाने लगता है, पंख फड़फड़ाना सीखता है।

तुम पिंजरे में बंधे हुये राजहंस पक्षी हो, मगर तुम्हें अपने कुल और गौत्र का ज्ञान ही नहीं रहा, तुम्हें भान ही नहीं रहा कि पिंजरे के बाहर भी मेरा जीवन है। तुम हर समय भयभीत रहे कि कोई भी झपट्टा मार सकता है, कोई भी तुम्हारे पंख नोच सकता है। हर समय तुम भय से आकांत रहे कि कभी भी, कोई भी हमला कर देगा, और तुम्हारे जीवन को समाप्त कर देगा..... यह जीवन तो पिंजरे में पड़े- पड़े भी समाप्त हो जायेगा..... मृत्यु तो पिंजरे के अन्दर भी तुम पर झपट्टा मार देगी.....उस समय तुम्हारे पास कोई चेतना नहीं होगी..... कोई सहायक नहीं होगा..... मृत्यु को धकेलने की तुम्हारे पास कोई क्रिया नहीं होगी।

गुरू तुम्हें पहली बार पिंजरे से बाहर निकालता है, समाज के बन्धनों से बाहर निकालता है, एक चेतना है, एक विस्तार देता है, तुम्हारे पंखों में ताकत देता है। जब तुम शिष्य बनते हो, जब तुम्हारी आंखों में गुरू भाव होता है, तो गुरू तुम्हें सही अर्थो में राजहंसो की पंक्ति में खड़ा करता है। तुम्हें अहसास करवाता है कि तुम बगुले नहीं हो, तुम्हें अहसास करवाता है कि तुम मामूली पक्षी नहीं हो, राजहंस बनाकर आकाश में उड़ने की क्रिया सिखाता है .....और तुम निभर्य आकाश में अपनी पूर्ण क्षमता और गति के साथ उड़ते ही चले जाते हो, अनन्त की ओर ब्रह्म तत्व की ओर, पूर्णत्व की ओर.... और तुम सही अर्थो में उस आनन्द की प्राप्त कर लेते हो, जिसे ब्रह्मानन्द कहा है। यही तो जीवन है, और इसके लिये अपने- आप को खो देने की क्रिया होनी चाहिये। मैं खो गया हूं। तुम्हें भी खो जाना है। क्योंकि गुरू भी पहले खोया है।

गुरू भी पहले अपने आप में बीज रूप में था, एक छोटा सा बीज, एक चुटकी में आने लायक बीज, यदि उस बीज रूपी गुरू ने अपने आप- आप को मिट्टी में मिलाया, तो कुछ समय बाद वही बीज अत्यन्त विशाल बरगद का पेड़ बना, विशाल वृक्ष बना, छायादार वृक्ष, जिसके नीचे हजारों- लाखों लोगों ने विश्राम किया, आनन्द लिया, क्योंकि उन्होंने खो देने की प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त किया, चैलेंज लिया कि मुझे खो देना है अपने आप को, अपने आपको समाप्त कर देना है।

जो अपने- आप में समाप्त होने की क्रिया जानता है, वह अपने-आप में पूर्णता प्राप्त करने की क्रिया भी जानता है। जो डूब सकता है,

वह निकल सकता है। **भयभीत, कायर, बुजदिल** और **नामर्द** अपने जीवन में कुछ भी नहीं सकते। जो जीवन में चैलेंज लेते है, वे मृत्यु के गाल पर थप्पड़ ली लगा सकते है। जो जीवन में शिष्य बनने का भाव पैदा करते है, वे काल के भाल पर अपना नाम अंकित कर लेते है। आने वाली पीढ़िया उनका नाम गौरव और मर्यादा के साथ लेती है, उनके जीवन में एक चेतना होती है, उनके जीवन में एक पूर्णता होती है। जो आज मिटते है, आज खो जाते है, जैसे बीज खो गया और गुरू के रूप में विशाल वटवृक्ष बना। यदि शिष्य भी अपने बीज को समाप्त कर लेता है, मिटा देता है खो जाता है, चेतना युक्त बना जाता है, तो कल वह भी हजार- हजार बीजों के रूप में, हजार- हजार पौधों और पेड़ो के रूप में, विशाल वटवृक्षों के रूप में अवतरित होता है ..... और लाखों - करोड़ो लोगों को संताप से मुक्त कर सकता है, सांत्वना दे सकता है। यह खो लेने का भाव, यह अपने- आप में चेतना शून्य बना लेने का भाव शिष्यता है।

दीक्षा लेने की क्रिया को भी शिष्यता नहीं कहा जाता है।

हाथ जोड़ लेने की क्रिया को भी शिष्यतता नहीं कहा जाता।

केवल होठों से गुरू मंत्र उच्चारण करने को भी शिष्यता नहीं कहा जाता।

शिष्यता तो इससे बहुत ऊंची वस्तु है, तथ्य है। शिष्य वही बन सकता है जो खो सकता है, अपने आप को मिटा सकता है, जो बीच समुद्र में कूदने की क्रिया को कर सकता है, जो सुगन्धित पवन बनकर पुरे विश्व में फैल सकता है, जो सेवा का साकार पूंज होता है, जो श्रद्धा का आधार होता है, जो समर्पण का मूर्तिमान स्वरूप होता है।

शिष्य के माध्यम से ही समझा जा सकता है कि समपर्ण क्या है ? उसके द्वारा ही जाना जा सकता है कि सेवा क्या कही जा सकती है ? किसे कहते है ? यह देवी- देवताओं की सेवा, पूजा और घंटे-घड़ियाल बजाना अपने- आप में ढ़ोग है, पाखण्ड है, यह तो अपने आप में भुलाने की एक क्रिया है।

यदि चैतन्य देवता, तुम्हें लाभ नहीं प्रदान कर सकते, तो फिर वे मूर्तिया तुम्हें क्या लाभ पहुंचा सकती है ? वह तुम्हें क्या लाभ दें पायेंगे ? जो प्राणवान शिष्य है, चेतना युक्त शिष्य है, जो मूर्तियों के पीछे भटकने की उपेक्षा उस जीवत जाग्रत देवता की, उस चैतन्य स्वरूप की पूजा, अर्चना, साधना, आराधना करता है। उसके लिये कोई गंगा नहीं होती, कोई यमुना नहीं होती, उसके लिये गुरू के चरणों का जल ही गंगा होती है, उसमें स्नान कर वह अपने आप को धन्य महसूस करने लगता है। उसके लिये किसी प्रकार के तीर्थ और पाठ नहीं होते है, गुरू के शब्द उसके लिये वेद होते है, गुरू की कृपा दृष्टि उसके लिये अमृत वर्षा होती है, जिसमें भीग कर वह अपने आप को पूर्णता की ओर अग्रसर कर सकता है।

गुरू के शब्द ही वेद, शास्त्र , उपनिषद और मीमांसाये होती है, जो शिष्य में सीधे उतर जाती है। पुस्तकों के अध्ययन के माध्यम से और पठन के माध्यम से ज्ञान नहीं प्राप्त हो सकता चिल्लाने और सीखने से वेद सामने प्रत्यक्ष नहीं हो सकते है। गुरू-कृपा से वह शिष्य तो स्वयं श्रद्धा का एक स्वरूप गुरू की सितार से जोड़ चेतना से जोड़ देता है जब उसे पालथी मारकर लेने की क्रिया सामने



वेदमय बन जाता है, शास्त्रमय बन जाता है, क्योंकि वह अपने' आप में सही अर्थो में होता है, समर्पण का एक भाव होता है। इसके माध्यम से ही वह अपनी सितार को, देता है, अपने प्राणों को गुरू के प्राणों से जोड़ देता है, अपनी चेतना को गुरू की और सही अर्थो में वह गुरूमय बन जाता है।

गुरूमय बन जाता है, तो अपने आप ध्यान की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है, फिर ध्यान लगाने की जरूरत नहीं होती है। फिर उसे भूमि में गड़कर समाधि की आवश्यकता नहीं होती, फिर उसे किसी देवी- देवताओं के मिनती नहीं मांगनी पड़ती, फिर उसे हाथ जोड़ने नहीं पड़ते, गिड़गिड़ाना नहीं पड़ता , देवताओं के सामने खड़ा नहीं होना पड़ता, क्योंकि वह स्वयं अपने अन्दर गुरू को समाहित कर पूरी तरह से खो जाता है, गुरूमय बन जाता है ..... और फिर वह दूसरों को खोने की भावना दे सकता है।

ऐसा ही भाव तुम्हारें जीवन में बने, मैं आशीर्वाद दे रहा हूं-

परम् पूज्य सद्गुरु

कैलाश श्रीमाली जी



श्री नरसिंह अवतार

भगवान नृसिंह, श्री विष्णु के उग्र एवं शक्तिशाली अवतार माने जाते हैं। भगवान इस अवतार में वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि के दिन प्रकट हुये थे और हिरण्यकश्यप का अंत किया था।

ऋषि कश्यप व उनकी दैत्य पत्नी दिति जिनकी दो जुड़वां संताने थी, उनमें से हिरण्याक्ष का भगवान विष्णु ने वराह अवतार में अंत किया था। अपने भाई के वध से दु:खी और क्रोधित हिरण्यकश्यप ने भाई की मृत्यु का बदला लेने के लिए अजेय होने का संकल्प कर हजारों वर्षों तक भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए घोर तप किया। तपस्या से खुश होकर ब्रह्माजी प्रकट हुये। हिरण्यकश्यप ने भगवान ब्रह्मा से वरदान प्राप्त किया कि उसे कोई देवता, देवी, नर, नारी, असुर, यक्ष या कोई अन्य जीव, न दिन में, न रात में, न दोपहर में, न घर में, न बाहर, न आकाश में और न ही पाताल में, न ही अस्त्र से और न ही शस्त्र से मार पाए। ऐसा वरदान प्राप्त कर हिरण्यकश्यप स्वयं को तीनों लोका का स्वामी समझने लगा। वह इतना अहंकारी हो गया कि उसने अपनी प्रजा से खुद को भगवान की भांति पूजने का आदेश दे दिया और ऐसा न करने वालों को वह कठोर सजा देने लगा। उसके अत्याचारों की कोई सीमा ही नहीं रही। इसी हिरण्यकश्यप का एक पुत्र था, प्रहलाद जो भगवान विष्णु का परम भक्त था। हिरण्यकश्यप को जब इस बात का पता लगा तो उसने अपने पुत्र को समझाया कि उसका पिता ही ईश्वर है और वह उसी की भक्ति करे। लेकिन प्रहलाद को यह सही नहीं लगा और वह भगवान विष्णु की भक्ति में लगा रहा, इसी में उसे आनन्द की अनुभूति होती



थी। हिरण्यकश्यप को यह बिल्कुल पसंद नहीं था, प्रहलाद द्वारा श्री विष्णु की भक्ति करना उसे **स्वयं का अपमान** लगता था। जिसके चलते उसने कई बार अपने पुत्र का वध करने की कोशिश की लेकिन भगवान विष्णु की कृपा से वह भक्त प्रहलाद का कुछ भी बिगाड़ नहीं पाता था। एक बार हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका को प्रहलाद को मारने का आदेश दिया कि वह जलती अग्नि में प्रहलाद को लेकर बैठ जाये क्योंकि होलिका को वरदान था कि अग्नि उसे जला नहीं सकती थी। लेकिन जब होलिका विष्णु भक्त प्रहलाद को गोद में लेकर आग में बैठी तो भगवान की कृपा ऐसी हुई कि उनके भक्त **प्रहलाद का प्रचण्ड** अग्नि में बैठने के बावजूद बाल भी बांका नहीं हो पाया, वहीं होलिका खुद उस आग में जल गयी। हिरण्यकश्यप यह देखकर अचंभित था और प्रहलाद के प्रति उसका क्रोध बढ़ता ही जा रहा था, वह उसे कई तरह की यातनाये देता रहा। एक दिन उसने पुत्र प्रहलाद को दरबार में बुलाकर विष्णु भक्ति छोड़ देने को कहा लेकिन इस बार भी प्रहलाद ने नम्रतापूर्वक ऐसा करने से मना कर दिया। इस बात से हिरण्यकश्यप अत्यन्त क्रोधित हो गया और प्रहलाद का वध करने के लिये उसे खंबे से बांध दिया और तलवार उठा ली, वह बोला **'मैं आज तेरा अंत करने जा रहा हूँ, बता तेरा भगवान कहां हैं?** भक्त प्रहलाद ने शांत भाव से कहा कि वे हर जगह पर है, वे इस खम्बे में भी है। **क्रोध** व **अहंकार** में अंधे हिरण्यकश्यप ने जैसे ही उस खम्बे पर तलवार से वार किया, वैसे ही खंभा फटा और उसमें से नृरसिंह भगवान प्रकट हुये। उनका रूप विकराल एवं क्रुद्ध अवस्था में था जिसे देख हिरण्यकश्यप डर से कांप उठा। भगवान नृसिंह ना पूरे पशु थे और न पूरे मनुष्य, उनका मुख विशाल सिंह का था और आधा शरीर मानव का, उन्होंने हिरण्यकश्यप का वध अस्त्रों या शस्त्रों से नहीं बल्कि अपनी जांघ पर लेटा कर, अपने बड़े-बड़े नाखूनों से उसकी छाती चीर कर किया था, उस समय न सुबह थी न रात, वह गोधूलि वेला थी, नृसिंह भगवान ने उसे उसके महल की देहलीज पर ले जाकर मारा जो न अंदर था न बाहर। हिरण्यकश्यप का संहार करने के बाद भी नृसिंह भगवान का क्रोध शांत नहीं हुआ, वे हिरण्यकश्यप के सिंहासन पर बैठ गये। उनके इस क्रोध को शांत करने के लिए भक्त प्रहलाद उनके चरणों में बैठकर उनकी स्तुति करने लगा। यह देख नृसिंह भगवान ने उसे अपनी गोद में बैठा लिया, उनका क्रोध अब शांत हो चुका था, उन्होंने प्रहलाद को अपना परम भक्त माना और आशीर्वाद दिया कि उनके भक्तों में उसका नाम सदा सर्वप्रथम लिया जायेगा। उन्होंने आशीर्वाद दिया जो भी भक्त वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को उनका स्मरण करेगा उसके सभी प्रकार के कष्ट एवं दुःख दूर हो जायेंगे।

नृसिंह चतुर्दशी के दिन भगवान विष्णु के नृसिंह रूप में साधना, व्रत, पूजन करने से भक्तों की हर प्रकार के **संकट** एवं **दुर्घटना** से रक्षा होती है एवं अभय वर की प्राप्ति होती है।

निधि श्रीमाली

पूर्णमदः पूर्णमिदं गुरू आत्म शक्ति दीक्षा

।। ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाव शिष्यते ।।

पूर्ण शब्द से गुरू पूर्णिमा का उद्भव हुआ है। पूर्णिमा अर्थात् पूर्ण होने की क्रिया, पूर्ण होने का पर्व जिसमें शिष्य अपने पूर्णत्व बोध को साक्षात करने के लिये गुरू चरणों में पहुंचता है। पूर्णता तो शिष्य को प्राप्त होती है, इसलिये सद्गुरूदेव ने इस पर्व को गुरू पूर्णिमा न कहते हुये शिष्य पूर्णिमा कहा है।

संसार में सब कुछ पूर्ण ही है, क्योंकि पूर्ण से पूर्ण की ही उत्पत्ति होती है एवं पूर्ण से पूर्णत्व प्राप्त कर लेने पर भी पूर्ण ही रहता है। किसी भी मनुष्य को जन्म देते समय परमात्मा ने उसे अपूर्ण बनाया नहीं, वरन् अज्ञानता वश उसे अपनी पूर्णता का बोध विस्मृत हो गया, जिससे उसके जीवन में निराशा, उत्साहहीनता और दैन्य की स्थिति व्याप्त हो गई।

सद्गुरू अपने शिष्य को अपने आत्म शक्ति के माध्यम से यही एहसास कराने का प्रयत्न करते हैं कि तुम सर्व सक्षम हो, सर्व शक्तिमान हो, तुम असहाय नहीं हो, दीन-हीन नहीं हो, पशुवत स्वरूप नहीं हो, कमजोर नहीं हो, तुममें क्षमता है, तुममें पौरूष है क्योंकि सद्गुरू ने स्वयं अपने प्राणों से शिष्यों के खून को ऊर्जित किया है। गुरू सागर में शिष्य रूपी नदी विलीन होकर ही अपने आप को पूर्ण अनुभव करती है।

साधक जीवन रहते ही सिद्धाश्रम के दर्शन कर सके, सिद्धाश्रम के योगियों के दर्शन कर सके, भगवान शिव से साक्षात्कार कर सके और भौतिक जीवन व्यतीत करते हुये भी पूर्ण शिवमय रह सके, आनन्दमय रह सके, यही जीवन की पूर्णता है, जो गुरू की आत्म शक्ति के पूर्ण स्थापन से ही संभव है।

अतः अपने शिष्य को पूर्णता अहसास कराने के लिये सद्गुरूदेव यह दीक्षा प्रदान करते हैं। जिससे शिष्य पूर्णता को साक्षीभूत कर सदगुरूमय बन सके और जब शिष्य अपने पूर्णत्व से साक्षात्कार कर लेता है तो फिर उसे समस्या, बाधायें, रूकावटें, तनाव कुछ भी उद्वेलित नहीं कर सकते। इस प्रकार का पूर्णत्व प्राप्त करने के उपरांत शिष्य संसार में अजेय बन जाता है, उसके ज्ञान और चेतना के समक्ष युग नतमस्तक होता है, हर जगह उसे सम्मान प्राप्त होता है। पूर्णत्व का अनुभव होना यानि जीवन को ब्रह्ममय बनाकर पूरे ब्रह्माण्ड में अपना सर्वस्व विस्तारित करने की चेतना से युक्त हो जाता है क्योंकि वह साक्षात परब्रह्म शक्ति को आत्मसात करने की प्रक्रिया से सरोबार होता है।

पूर्णमदः पूर्णमिदं गुरू आत्म शक्ति दीक्षा न्यौछावर ₹ 2100/-

दो वर्षीय तीन पत्रिका सदस्य बनाने पर यह दीक्षा उपहार स्वरूप प्रदान की जायेगी।

इच्छुक दीक्षा प्राप्त करने वाले साधक का नाम एवं पता

नाम.....

.....

अपनी फोटो व तीन पत्रिका सदस्य का पूर्ण पता न्यौछावर राशि के साथ कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर भेजें।



मेष

01 से 06 जून तक-यह समय मेहनत से **लाभ** उठाने का सही समय है। **आय, पद, प्रतिष्ठा** आदि में **वृद्धि** होगी। आप विचारों के **आदान-प्रदान, अध्यात्म चिंतन अध्ययन** आदि में व्यस्त रहेंगे। आप इस समय मानसिक और शारीरिक रूप से **सुकून** और **तनाव मुक्त** महसूस करेंगे।

07 से 13 जून तक-कुछ बड़े फैसले लेने में आप दुविधा महसूस करेंगे। आप किसी **रहस्यपूर्ण** या एकान्त स्थान पर जा सकते है। माता-पिता, बॉस से बेहतर सहयोग प्राप्त होगा। **आर्थिक** रूप से भी आपको कोई दिक्कत या परेशानी नहीं आयेगी।

14 से 20 जून तक-आपको कुछ बड़े फैसले लेने में गम्भीरता दिखानी होगी, क्योंकि इससे आपका जीवन पूरी तरह बदल सकता है। इस समय आपको दिल से नहीं बल्कि **दिमाग से निर्णय** लेने की जरूरत है। यदि आपको जीवन में सफलता हासिल करनी है, तो लोगों से सम्पर्क करने की कला को बेहतर बनाये। आप अपनी अन्तर्निहित **शक्तियों की तलाश** में बहुत व्याकुल होंगे। अपनी क्षमता पर भरोसा रखें, आप **चार्तुमासीय देवत्व शक्ति प्राप्ति दीक्षा** ग्रहण करें। जिससे आपमें सोचने-समझने और क्रिया करने की नयी चेतना जाग्रत होगी। **न्यौछावर ₹2100**

21 से 30 जून तक- आपके **पारिवारिक जीवन** में कोई दिक्कत पेश आने की संभावना है। अभी पैसों का निवेश कहीं नहीं करे, अन्यथा नुकसान होगा। आप कोई गुप्त गतिविधियों में भाग ले सकते है, आप इस समय अपने **कार्य लक्ष्य** को प्राथमिकता देंगे। आप खरीदना-बेचना, सम्पति को बढ़ाने या नये कार्य की रूप रेखा बनाने जैसे कार्य कर सकते हैं।

शुभ तिथियाँ 14,19,23,24



वृष

01 से 06 जून तक-मास का प्रारम्भ बहुत अधिक **शुभ फलप्रद** नहीं है। कार्यो में **रूकावटें** व **विघ्न** बिना बात के ही उत्पन्न होते रहेंगे। **क्रोध** व **उद्विग्नता** से कई बार बना बनाया काम बिगड़ सकता है। धन हानि के योग बन रहे है। पूर्व में जो ऋण आपने ले रखा है, उसे चुकाने में भी समस्यायें आयेंगी। कुछ कटु, सच्चाई आपके सामने आयेगी, जिससे परिस्थितियां डांबाडोल होंगी। धन की **सुदृढ़ता** व **आर्थिक** मजबूत हेतु **शत्रु संहारिणी त्रिपिण्ड माता वैष्णों धनदा वृद्धि दीक्षा** ग्रहण करें, जिससे धन में वृद्धि होगी।

न्यौछावर ₹2100

07 से 13 जून तक- आप इस समय अपने व्यवसाय से जुड़ी बैठकें, सम्मेलन आदि में भाग लेंगे। व्यापारिक **समस्याओं** को सुलझाते हुये धन भी कमायेंगे। नौकरी में आपको सचेत रहने की आवश्यकता है। अजनबी व अपरिचित व्यक्तियों से दूर रहें। अधिकारी काम में **रोड़ा** अटका सकते हैं।

14 से 20 जून तक- इस समय आपका **स्वार्थ चरम** पर होगा, जिससे आपकी प्रतिष्ठा व छवि दोनों धूमिल हो सकती है। कार्यो में देरी के कारण मन कुछ उदासीन रहेगा। दूसरो के झगड़ों में अपनी टांग नहीं अड़ाये, अन्यथा मुसीबत हो सकती है। नौकरी में अड़चने आयेंगी।

21 से 30 जून तक-दफ्तर व कार्यक्षेत्र में आपका **दबदबा, रूतबा निरंतर** बढ़ेगा। इस समय जमीन-जायदाद सम्बन्धी मामले उलझ सकते है। बुरी आदतें, बुरे लोग व बुरी सोहबत आपको परेशानी में डाल सकती है, रिश्तेदार या मित्र के साथ कोई अनहोनी हो सकती है। **पारिवारिक सहयोग** भरपूर मिलेगा, संतान पत्नी व परिवार के साथ समय व्यतीत होगा।

शुभ तिथियां 16,18,21,25



मिथुन

01 से 06 जून तक-इस सप्ताह कहीं से कोई **अप्रिय समाचार** मिलेंगे। बनता हुआ काम अंतिम समय पर जाकर रूक जायेगा। परिवार में वातावरण **तनावपूर्ण** रहेगा। आर्थिक मामलों में सावधानी आवश्यक है। इस समय किसी को उधार नहीं दे, अन्यथा वापस आने की संभावना कम ही है। बड़े-बुर्जुगों के स्वास्थ्य की भी चिंता सतायेगी।

07 से 13 जून तक- इस समय आपका पूरा ध्यान अपने लक्ष्य की ओर रहेगा। आय से **आजीविका** के नये स्त्रोत उत्पन्न होंगे। आप किसी **साजिश** या **षड़यंत्र** के शिकार हो सकते है। अजनबी व अपरिचित व्यक्तियों पर भरोसा बिलकुल नहीं करें। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव रहेगा। मौसमी बीमारियों व **उदर विकार** की स्थिति बन सकती है। इस दिन लम्बे समय से चले आ रहे विवाद किसी की मध्यस्थता से हल होने की संभावाना है। आपके लिये आवश्यक है कि **शत्रु संहारिणी त्रिपिण्ड माता वैष्णों धनदा वृद्धि दीक्षा** ग्रहण करें। **न्यौछावर ₹2100**

14 से 20 जून तक- सप्ताह के अंत में आप जमकर **मेहनत** करेंगे, **रूपया-पैसा** आयेगा, उतनी ही तीव्रता से पैसा चला भी जायेगा। विद्यार्थी अपनी पढ़ाई पर फोक्स कर पायेंगे, जिससे उनकी बुद्धि में **कुशाग्रता** आयेगी।

21 से 30 जून तक-आप किसी षड़यंत्र में उलझ सकते है। आपके अपने लोग ही आपके साथ विश्वासघात करेंगे। किसी जगह पर आपका पेमेन्ट फंस सकता है, शत्रु व विरोधी हावी होंगे। मित्रों व सहयोगी से अच्छा सामंजस्य बनाये, जिससे विरोधी परास्त हो सके।

शुभ तिथियां 11,13,18,21



कर्क



सिंह



कन्या

01 से 06 जून तक- इस समय **व्यापार से सम्बन्धित** सभी काम तीव्रता से होंगे। घर के छोटे-छोटे कामों पर भी आपका ध्यान रहेगा। संतान के **अध्ययन, कैरियर, विवाह** आदि को लेकर कुछ चिंता रहेगी। **बुरी आदतें, बुरी सोहबत** व **बुरे लोगों** से दूर रहें। काम में बॉस की डांट-फटकार सुननी पड़ सकती है।

07 से 13 जून तक- मध्यम फलकारी समय है। खुशी के साथ गम, शुभ के साथ अशुभ, मित्र के साथ शत्रु का साथ रहेगा। **पार्टनरशिप के व्यापार में आपको फायदा होगा।** आपका खर्च बेतहाशा बढ़ जायेगा, आर्थिक स्थितियां डांबाडोल होंगी। काम में की गई **लापरवाही** भारी पड़ सकती है। स्वास्थ्य में परेशानी के संकेत मिल रहे है।

14 से 20 जून तक- पैसा तो पास में आयेगा, परंतु आने से पहले खर्चा भी उतना ही होगा। आय से अधिक खर्च की स्थिति रहेगी। लोग आपकी आलोचना व निंदा करेंगे, पति-पत्नी में किसी बात लेकर खासा **तनाव** हो सकता है। सप्ताह के अन्त में रूपयों-पैसो की आवक में बाधा आयेंगी, पैसा पास में आता-आता रूक जायेगा। **लक्ष्मी बंधन निवृति धनदा प्राप्ति दीक्षा** ग्रहण करें। **न्यौ. ₹ 1500**

21 से 30 जून तक- राजकीय व सरकारी क्षेत्र में अटके हुये कामकाज गति पकड़ेंगे। कामकाज में आपको अतिरिक्त जिम्मेदारी प्राप्त होगी। जिससे **आय** भी बढ़ेगी। स्वयं की आदतों, व्यवहार व वाणी में **सकारात्मक बदलाव** लाना आवश्यक है, अन्यथा बिना बात के विवाद हो सकता है। किसी रिश्तेदार या परिचित से सम्बन्धित **अशुभ समाचार** मिलेगा, जिसमें मन खिन्न होगा।

शुभ तिथियाँ 04,09,11,15

01 से 06 जून तक-उत्तम समय है, आय-व्यय का मिश्रित परिणाम रहेगा, इस सप्ताह व्यापारिक बदलाव की संभावनाओं को बल मिलेगा। **जीवन साथी** की बात को नजर अंदाज ना करें, अन्यथा गम्भीर मतभेद, कलह की स्थितियां उत्पन्न हो सकती है। संतान पक्ष विशेषकर **कन्या** के विवाह की चिंता से तनाव में रहेंगे।

07 से 13 जून तक- समय सामान्य **फलदायी** रहेगा। व्यवसाय में **तरक्की** होगी। छोटी-मोटी यात्रा के भी योग बन रहे है, बेकार की उलझने समाप्त होंगी। **ऋण संबंधी** समस्या आ सकती है। नया कोई भी कार्य प्रारम्भ ना करें, इसके लिये समय अनुकूल नहीं है, थोड़ा चिंतित व भयभीत भी रह सकते हैं।

14 से 20 जून तक- इस सप्ताह **विदेश** जाने वाले जातकों के लिये वीजा संबंधी समस्यायें दूर होगी। विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम बेहतर होने की संभावना है। काम-काजी महिलाओं के लिये यह समय थोड़ा उठा-पटक वाला होगा, होटल इंडस्ट्री से जुड़े लोगों को धन हानि हो सकती है। सप्ताह के अन्त में सिर दर्द ओर ब्लड़ प्रेशर की **समस्या** बढ़ सकती है।

21 से 30 जून तक-नया निवेश करने से बचें। आप मानसिक, शारीरिक, आर्थिक शोषण के शिकार हो सकते है। धन-सम्पति के मामलों में किसी प्रकार का जोखिम न ले, संयम सावधानी पूर्वक योजना को मूर्त रूप दे। सहयोगियों पर बहुत अधिक निर्भर ना रहें, स्वयं को **सशक्त** और **दृढ़, ओजस्वी सम्मोहन वशीकरण** से आपूरित करने हेतु आप **सर्व आकर्षण आज्ञापालन चेतना दीक्षा** ग्रहण करें। **दीक्षा न्यौ. ₹ 1500** जिससे आपके सभी कार्य **सरलता** से पूर्ण होंगे।

शुभ तिथियां 02,21,26,30

01 से 06 जून तक-आपको छोटी-छोटी बातों पर **गुस्सा** व **क्रोध** आयेगा, जिससे कलह, वाद-विवाद व लड़ाई-झगड़े होने की संभावना है। **वाणी व क्रोध पर नियंत्रण रखे,** अन्यथा गंभीर समस्याओं का सामना और सामाजिक अपयश भी झेलना पड़ सकता है। फिजूलखर्ची पर नियंत्रण रखें, **बुद्धिमता** व **विवेक** से आप अपने शत्रु को भी परास्त कर पायेंगे। **जीवनसाथी** का पूरा सहयोग व **भावनात्मक सम्बलता** मिलेगा।

07 से 13 जून तक-लापरवाही से आर्थिक नुकसान तगड़ा हो सकता है। दाम्पत्य सम्बन्धों में **गलत फहमियों** के कारण दूरियां बढ़ेगी। व्यापार में किया गया निर्णय गलत साबित होगा, जिससे आपको नुकसान होगा। शेयर्स में पैसा नहीं लगाये अन्यथा आपका पैसा फंस सकता है। धन की निरंतरता बनाने के लिये कड़े परिश्रम से भी उचित **लाभ** प्राप्त नहीं हो पायेगा व संतान के **कैरियर सम्बन्धित समस्यायें** आपकी उलझने और अधिक बढ़ायेगी। अपनी आर्थिक स्थिति को अधिक सुदृढ़ करने के लिये **सर्व सुफल प्राप्ति दीक्षा** ग्रहण करें। **दीक्षा न्यौ. ₹ 1500**

14 से 20 जून तक- पैसा आयेगा, परंतु पास में टिक नहीं पायेगा। घरेलू जीवन व व्यापारिक जीवन में कुछ बदलाव हो सकता है तनाव इस कदर हावी होगा कि सामने पड़ा काम नजर नहीं आयेगा।

21 से 30 जून तक-चिंताओं से राहत तो महसूस करेंगे, पर पूर्ण अनुकूल स्थितियां नहीं बन पायेंगी। विद्यार्थियों को पढ़ाई में रूकावटों का सामना करना पड़ेगा, साथ नये सत्र में प्रवेश में भी समस्यायें आयेंगी। संयम व शांत भाव से कार्य करने के प्रयास करे, सफलता मिलेगी।

शुभ तिथियां 09,14,16,21



तुला

01 से 06 जून तक-माह का प्रथम सप्ताह बहुत ही **शानदार** व्यतीत होगा। आपके व्यापार में तरक्की होगी। नौकरी में वेतन वृद्धि हो सकती है। इस समय कैरियर व व्यवसाय में जबर्दस्त, उछाल आयेगा। मानसिक रूप से सुख-शांति अनुभव करेंगे। आर्थिक लाभ के आसार हैं।

07 से 13 जून तक-आप ख्याली पुलाव पर रोक लगायें अन्यथा काम अधूरे रह जायेंगे। इस समय आर्थिक नुकसान के योग बन रहे है। मन में **उथल-पूथल** व खलबली मची रहेगी। **मानसिक तनाव** का सामना करना पडेगा।

14 से 20 जून तक-समय अशुभता से भरा रहेगा। लाभ के स्थान पर हानि की संभावनायें अधिक है। बड़े-बुजुर्ग रोग ग्रस्त रहेंगे जिससे अस्पताल के चक्कर काटने पड़ सकते है। **समस्यायें, परेशानियों** का सैलाब उमड़ेगा, रिस्की सौदे ना करें हानि होगी। खरीदारी आदि से बचे, लम्बित पड़े कार्यो को बिल्कुल ना करें, उलझने बढ़ सकती है। सभी कार्यो में कुशलता व विपरीत परिस्थितियों से बचने के **मानसिक चिंता हरण दीक्षा** ग्रहण करें।

न्यौछावर ₹1500

21 से 30 जून तक-काम के दबाव को मन के ऊपर हावी नहीं होने दे, अपने लक्ष्य पर पूरी नजर रखें। कोई बड़ा करार या अनुबंधन आपका हो सकता है। हालांकि आरम्भ में इसका कोई खास लाभ तो नहीं हो पायेगा, परंतु **दृढ़ निश्चय, लगन** व **ईश्वरीय कृपा** से सफलता प्राप्त करने में सफल हो सकते है, वरिष्ठ आपके द्वारा किये गये कार्यो से संतुष्ट रहेंगे, फलत: आपको आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे। धन हानि के भी संकेत है, सावधान रहें।

शुभ तिथियाँ 02,06,08,26



वृश्चिक

01 से 06 जून तक-यह सप्ताह ज्ञान वर्द्धक है, आप नई जानकारियां, पुस्तक, लेखन आदि में व्यस्त रहेंगे। सुख-सुविधा पूर्ण जीवन शैली पर धन व्यय होगा, जिससे थोड़ी तंगी भी महसूस होगी। सामाजिक मुद्दों तथा **जन-कल्याणकारी कार्यो** को पूरी सहानुभूति व जिम्मेदारी से निभायेंगे। इस बीच आपका सामाजिक दायरा बढ़ेगा। आप अपने प्रतिद्वन्दी को पीछे छोड़ने में सफल हो सकते हैं।

07 से 13 जून तक-इस समय स्वास्थ्य थोड़ा ढ़ीला रहेगा, दवा सेवन, रूटीन चेकअप आदि समय से कराये। पति-पत्नी में वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है धन अर्जित करने में अनेक अड़चनों रूकावटों का सामना करना पड़ेगा। खरीद-फरोख्त में हानि हो सकती है। विद्यार्थियों को मनपंसद स्कूल-कॉलेज में प्रवेश के लिये कड़ी मेहनत करनी होगी।

14 से 20 जून तक- घर-परिवार के लोग किसी मुद्दे पर आपके खिलाफ होंगे, सहयोगियों, मित्रों से कोई सहायता नहीं मिलेगी। अनावश्यक तर्क-वितर्क से बचे, अन्यथा कानूनी पचड़े में पड़ सकते है। **कलह** और **अशांति** से आप तनाव में पड़ सकते है, बेहतर होगा स्वयं को शांत रखे, आप **कलह अशांति निवारण शत्रुहंता दीक्षा** ग्रहण करे। **न्यौछावर ₹1500**

21 से 30 जून तक-अप्रिय या कटु सम्बोधन से बचें। कठिन परिश्रम से परेशान हो उठेंगे। आर्थिक मसले हावी रहेंगे। महत्वपूर्ण यात्रायें, परियोजनायें तथा इंटरव्यू में सफलता मिलेगी। देरी और बाधाओं के कारण परेशानी तो आयेगी, लेकिन आप सकारात्मक व्यवहार और उदारवादी स्वभाव के साथ ऊर्जावान व्यक्तित्व से सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

शुभ तिथियां 01,05,09,25



धनु

01 से 06 जून तक-मास का आरम्भ सामान्य है। मानसिक रूप से **शांति** का अनुभव करेंगे। अवरोधित काम एक बार आगे बढ़ेंगे, बीच में समय **कलहकारी** है। किसी से झगड़ा हो सकता है। कोई बड़ा ऑर्डर या अनुबन्ध आपके हाथो से निकल सकता है। आपके अपने ही आपके साथ धोखा करेंगे। अवरोधों के निवारण और सर्व मंगल हेतु आप **शीघ्र कार्य सफलता प्राप्ति दीक्षा** ग्रहण करें। **न्यौ. ₹1500**

07 से 13 जून तक- **ज्ञानवर्द्धक** दिवस है। नैतिक मूल्यों व अध्यात्म की ओर झुकाव रहेगा। बहुत ही शांतिदायक तरीके से आप अपने घर व दफ्तर का काम करेंगे, साथ ही कहीं बाहरी यात्रा का कार्यक्रम भी बना सकते हैं।

14 से 20 जून तक-सरकारी कामकाज गति पकड़ेंगे। कुछ घरेलू जिम्मेदारियों का निर्वाह कर आप घरवालों की शिकायत समाप्त करने में सफल होंगे। इस समय आपके पास प्रचुर मात्रा में धन की उपलब्धता होगी, उसका सही उपयोग ही बुद्धिमानी का परिचय है। यह समय नया उद्यम प्रारम्भ करने का सही समय है। थोड़ा बहुत स्वास्थ्य गड़बड़ रह सकता है।

21 से 30 जून तक- आप असमंजस की स्थिति में रहेंगे। पति-पत्नी के मध्य झगड़ा हो सकता है। आपका समय व्यर्थ के काम में व्यतीत होगा। अपनी लोकप्रियता, साख में वृद्धि करने और एक नई उज्ज्वल छवि बनाने के लिये आपको स्वयं में बदलाव करने की आवश्यकता है। आप काम और व्यक्तिगत सम्बन्धों में प्रगति करेंगे। धन सम्बन्धी मामले मुख्य विषय होंगे। समय के अनुसार परिस्थितियां आपके अनुकूल बनेंगी।

शुभ तिथियां 02,08,13,27



मकर

01 से 06 जून तक- मास का आरम्भ **सुखद घटनाओं** से होगा। दाम्पत्य जीवन में **मधुरता** आयेगी। संतान सम्बन्धित इच्छा अनुरूप समाचार प्राप्त होंगे। रूपयों-पैसो का नुकसान हो सकता है, हाथ में आता-जाता रूपया रूक जायेगा। आपकी छोटी-सी लापरवाही नुकसानदायक हो सकती है, सावधानी बरतें। किसी प्रिय व्यक्ति से झगड़ा या मन-मुटाव हो सकता है। **कलह अशांति निवारण दीक्षा** ग्रहण करें। **न्यौछावर ₹1500**

07 से 13 जून तक-प्रेम-प्रसंगों में सफलता तो मिलेगी, परंतु सावधान, प्रेम सम्बन्धों के उजागर होने का भी खतरा बना हुआ हे। यात्रायें निरर्थक साबित होंगी। गर्मी सम्बन्धी बीमारियों से परेशानी बढ़ेगी, एकत्रित धन खर्च होगा। छोटी-सी गलती से आपकी मेहनत पर पानी फिर सकता है। आर्थिक कशमकश बनी रहेगी। चापलूसों, चाटुकारों से सावधान रहें।

14 से 20 जून तक- इस सप्ताह आर्थिक दृष्टि से स्थितियां **अनुकूल** हैं, परन्तु आपके साथ अप्रिय घटना घटित हो सकती है, जिससे बहुत व्यथित व परेशान हो जायेंगे। ब्लैक मार्केटिंग से दूर रहें व प्रेमिका के जाल में ना फंसे प्रत्येक कार्य को सोच-समझकर करें, इस हेतु आप **अनहोनी बाधा निवारण दीक्षा** ग्रहण करें। **दीक्षा न्यौ. ₹1500**

21 से 31 जून तक- इस राशि से जुड़े बच्चों का **परीक्षा परिणाम** शानदार आयेगा। **कला, विज्ञान** व **मशीनरी** से जुड़े व्यवसायी **सफलता** प्राप्त कर पायेंगे, खर्च की अधिकता रहेगी, कोई पुराना **घातक रोग** उभर सकता है, शीघ्र इलाज करायें।

शुभ तिथियाँ 01,21,23,27



कुंभ

01 से 06 जून तक-यह सप्ताह बहुत ही **शानदार** व्यतीत होगा। आपको घर और बाहर दोनों जगह सहयोग मिलेगा। आपको जीवन के हर स्तर, हर मोर्चे पर सुधार दिखाई देगा। आपको कुछ **प्रतिस्पर्द्धा** तथा **द्वेष** का सामना करना पड़ेगा, लेकिन इसका विपरीत असर नहीं पड़ेगा।

07 से 13 जून तक-इस समय आपके साथ कोई **अर्नगल क्रिया** से मन अशांत व तनावमय बना रहेगा। आपको शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। **मानसिक** व **शारीरिक** रूप से आप किसी बन्धन में नहीं रहना चाहेंगे और विद्रोह की स्थिति से परिणाम घातक होगा। अनुचित व्यवहार बिल्कुल ना करें, साथ ही आप अप्रिय स्थितियों के निवारणार्थ आप आषाढ़ी नवरात्रि में **मातंगी महाविद्या दीक्षा** ग्रहण करें, जिससे बाधाओं और विषमताओं का शमन होगा। **न्यौ. ₹1500**

14 से 20 जून तक-इस सप्ताह भी ग्रह राशियां आपके अनुकूल नहीं है, किसी **कानूनी पचड़े** या **मुकदमेबाजी** में फंसने का भय है। सगाई सम्बन्धों में सावधानी रखें, अन्यथा टूटने या रिश्तों में खटास आने की संभावना है, जिसके कारण **भावनात्मक पीड़ा** अनुभव करेंगे, संतान की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

21 से 31 जून तक-इस सप्ताह आप **ईर्ष्या, जलन** और **विरोध** करने वालों को परास्त करने में सफल रहेंगे। प्रियजन या आपकी भलाई चाहनेवालों की नाराजगी से बचें। चिन्ताओं की व्यक्तिगत **समस्याओं** को दूर करने की जरूरत है। आप ऊपर दियें गये उपाय को क्रियात्मक रूप दें।

शुभ तिथियां 03,05,24,29



मीन

01 से 06 जून तक-इस सप्ताह जोखिम भरे व **अनुचित कार्यों** को फिलहाल टालें। प्रतिद्वन्द्वी व व्यावसायिक प्रतिस्पर्द्धी कड़ी टक्कर देंगे। संतान के **कैरियर, अध्ययन विवाह** आदि समस्याओं का हल निकलने की संभावना है, आर्थिक स्थिति को बेहतर करने, परिवार की जिम्मेदारियों का सही रूप में निर्वहन करने के लिये आवश्यक है कि आप धन प्रदाता **कच्छप श्री यंत्र** युक्त **अविरल धन प्राप्ति दीक्षा** ग्रहण करें। **दीक्षा सामग्री न्यौछावर ₹ 2400**

07 से 13 जून तक-मान-सम्मान, प्रतिष्ठा वर्द्धक समय है, आप अपनी बुद्धि चातुर्य से अपना सारा काम निकाल लेंगे, इस समय आप काम के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे साथ ही इसका पूर्ण लाभ आपको मिलेगा। मध्य में थोड़ा समय खराब है, वाहन सावधानी पूर्वक चलायें, दुर्घटना घटित हो सकती है। स्वास्थ्य भी नरम रह सकता है।

14 से 20 जून तक-इस सप्ताह यात्रा का योग बन रहा है, आप कहीं घूमने जा सकते है। आपको यह अहसास होगा कि तनाव के कारण पारिवारिक स्थितियां कलह पूर्ण बनती जा रहीं है। आपको **मनोरंजन** के लिये वक्त निकालना जरूरी है। दूसरों की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास ना करें, बेमतलब में नई उलझन उत्पन्न हो सकती है। सामाजिक कार्यो में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे मान-सम्मान, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

21 से 30 जून तक-अनुकूल समय का जमकर लाभ उठायें। **धन प्राप्ति** के योग बन रहा है। वरिष्ठ आपके द्वारा किये गये कार्यो से संतुष्ट रहेंगे, फलत: आपको आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे।

शुभ तिथियां 02,18,25,26



सद्गुरु वाणी

- आप जिस प्रकार के है उसी कारण से है कि आप ऐसे ही होना चाहते है। यदि आप वास्तव में अलग बनना चाहते है तो आज से ही परिवर्तन की क्रिया प्रारंभ कर दीजिये।
- साधक का मन कलपतरू है मन के समुद्र में उठती हुई भावनाये आत्मिक शक्ति में परिवर्तन हो जाती है। यदि साधक का मन पूर्ण विश्वास, निर्भय , आशा और कल्याण कारी भावों से भरा होता है तो उसे अनंत वरदान मिलते है। यदि वह विपरीत स्थितियों से भयभीत हो जाता है और अमूल्य विश्वास को खो बैठता है तो वह स्वयं को ही खो देता है तथा सदा के लिये नष्ट हो जाता है।
- वस्तुओं के त्याग में भक्ति नहीं है। वह तो व्यक्ति की बहुमुखी प्रतिभा की अभिव्यक्ति है। धर्म कभी भी मनुष्य को दैनिक कार्यो का त्याग करने को नहीं कहता, वह अर्थात् धर्म उसे केवल मानसिक असंतुलन, नैतिक बुराईयो तथा आत्मिक अज्ञान से छुटकारा पाने को कहता है।
- साधना तो सुबह से रात्री तक अथक परिश्रम की एक दिनचर्या है। केवल होठों से मंत्र बुद-बुदाने से साधना नहीं होती।
- साधक से अधिक संसार में कोई भी सुखी-व्यक्ति नहीं है। क्योंकि सामान्य व्यक्ति अविद्या से ग्रस्त होता है। अविद्या से अहंकार उत्पन्न होता है। अहंकार से भय उत्पन्न होता है। भय से संशय उत्पन्न होता है। संशय किसी विषय से होता है विषय से भोग की कामना होती है। और, कामना से भोग उत्पन्न होता है। भोग से संस्कार बनते है। संस्कारों से ही जन्म मृत्यु और पुनर्जन्म तीन स्थितियां मनुष्य के भीतर दुःख और अशांति लाते है।
- वास्तव में सुखी रहने के लिये अविद्या, संशय और अहंकार की जड़ों को गुरू द्वारा बतलाये गये साधनात्मक मार्ग से पूर्ण रूप से काटना आवश्यक है।
- प्रार्थना और मन की भाव अभिव्यक्ति, ऐसी स्वच्छ कर देने वाली औषधि है, जो हमारे मन की गंदी, एकत्रित और सड़ी हुई वस्तुओं को साफ कर देती है।
- इसका तात्पर्य है सद्गरू रूपी प्रभु से कोई भी बात मत छिपाओं उनसे सब कुछ कह दो यद्यपि सद्गुरू सब कुछ जानते है। फिर भी तुम्हें अपने मन की गंदगी निकाल डालने के लिए सब कुछ कहना ही पड़ेगा। उनके सामने अपने सब कार्य और दोष कह डालो अर्थात् गुरू के सामने बिल्कुल शून्य ओर अवधूत बनकर जाओं।
- तुम कही भी रहो जब तक तुम्हारा मन श्रेष्ठ चिन्तन साधना और उसके साथ गुरू कार्य में लगा है तो तुम मेरे शिष्य हो।





शिष्य धर्म

- शिष्य के जीवन में चरित्र ही सफलता और **असफलता** का द्योतक है चरित्र सफल है तो जीवन सफलता की ओर बढ़ेगा किन्तु चरित्र असफलता की ओर अग्रसर है तो जीवन अवश्य **पतन** की ओर उन्मुख होगा।
- शिष्य को समाज की अपूर्णता के विषय में नहीं अपनी अपूर्णता के विषय में विचार करना चाहिये अपनी अपूर्णता दूर करने वाला समाज की अपूर्णता भी दूर कर सकता है।
- शिष्य का महत्व इसमें नहीं है कि वह कितने वर्ष तक जीवित रहता है। अपितु महत्व तो इसका है कि तुम किस प्रकार से जीवित रहे।
- सत्ता शिष्य गुरू के किसी बाहरी काम पर लक्ष्य नहीं करता वह तो केवल गुरू की आज्ञा को ही शीश नवाकर पालन करता है।
- यदि तुम्हारी साधना करने की तीव्र उत्कंठा है तो भगवान उसके पास सद्गुरू भेज देते है। सद्गुरू के लिये साधकों को चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।
- सच्चा और वीर शिष्य तो इस संचार का बोझा उठाकर भी सद्गुरू की ओर प्रसन्न भाव से निहारता है।
- मनुष्य तभी तक अध्यात्म के विषय में तर्क-वितर्क करता है जब तक उसे अध्यात्म का स्वाद नहीं मिलता जिस दिन तुम्हें यह स्वाद प्राप्त हो जाता है उस दिन चुप-चाप साधना करने लगता है।
- जैसे दर्पण को स्वच्छ करने पर उसमें मुंह दिखलायी देने लगता है उसी प्रकार हृदय के स्वच्छ होते ही उसमें सद्गुरू का रूप दिखलायी देने लगता है।
- साधना की राह में कई बार गिरना होता है। परन्तु प्रयत्न करने पर सब साधक ठीक हो जाते है।
- शिष्य के लिये प्रायश्चित की तीन सीढ़िया है आत्म ग्लानी, दूसरी बार पाप न करने का निश्चय और आत्म शुद्धि।
- अगर तुम दुनिया की परवाह करोगे तो दुनिया तुम पर चढ़ बैठेगी, उससे विमुख हो जाओंगे तभी दुनिया पर चढ़ सकते हो।



मखाना
(Makhana)

सूखे मेवे में शामिल होने वाले मखाना को भारत के साथ-साथ पूरी दुनिया में इस्तेमाल में लिया जाता है। प्राचीन काल से मखाना को धार्मिक पर्वों में उपवास के समय खाया जाता है। बहुत से लोग इसे भून कर खाना पसंद करते हैं। वहीं, कई लोग इसे फ्राई कर इस्तेमाल में लाते हैं। कुछ ऐसे भी हैं, जो इसकी खीर बनाकर इसका सेवन करते हैं। इन तीनों ही तरीकों से, इसके भिन्न-भिन्न स्वाद का लुत्फ उठाया जा सकता है। वहीं, आपको यह जानकर हैरानी होगी कि स्वाद के साथ ही यह सेहत के लिये भी अत्यधिक लाभकारी है। मखाना पौष्टिकता से भरपूर होता है, क्योंकि इसमें मैग्ननेशियम, पोटाशियम, फाइबर, आयरन, जिंक आदि भरपूर मात्रा में होता है।

मखाना क्या है?

मखाना, कमल के बीज को कहा जाता है। यह एक स्वादिष्ट और पौष्टिक खाद्य पदार्थ है। इसे कई नामों से जाना जाता है, जैसे फॉक्स नट, फूल-मखाना, लोटस सीड और गोर्गन नट। वहीं, इसके बीजों को भूनने के बाद इसका उपयोग कई प्रकार की खाद्य सामग्री में किया जाता है। इसके अलावा, यह कई प्रकार के पोषक तत्वों से भरपूर होता है, जो सेहत के लिये फायदेमंद होते हैं।

मखाना के औषधीय गुण

मखाना में कई प्रकार के औषधीय गुण पाये जाते हैं, जो स्वास्थ के लिये फायदेमंद हो सकते हैं। मखाने में एंटीऑक्सीडेंट, एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी ट्यूमर प्रभाव पाये जाते हैं। इसके अलावा, इसका सेवन बुखार, पाचन तंत्र सुधारने में और दस्त के लिये भी किया जा सकता है। इसके अलावा, यह कई खास एल्कलॉइड से भी समृद्ध होता है। आयुर्वेद में मखाना सेहत के लिये कमाल का फूड बताया गया है। मखाना एक शानदार कैल्शियम फूड है, जिसमें कैलोरी बहुत कम होती है। मखाना खाने से फैट के बिना प्रोटीन, फाइबर, आयरन, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस भी मिलता है। इसे खाकर महिलाये हड्डियों को कमजोर होने से बचा सकती हैं। ये सभी गुण और प्रभाव मखाने को स्वास्थ्य के लिये उपयोगी बनाने का काम करते हैं।

1. वजन कम करने में लाभ

वजन घटाने में मखाने का उपयोग मोटापे की समस्या से छुटकारा दिलाने में मददगार साबित हो सकता है। कमल के बीज (मखाना) का एथेनॉल अर्क शरीर में फैट सेल्स को



नियंत्रित करने में मददगार साबित होता है। साथ ही यह फैट सेल्स के वजन को भी कम कर सकता है। इसलिये, इसका उपयोग वजन को कम करने के लिये किया जा सकता है।

2. ब्लड प्रेशर में लाभदायक

ब्लड प्रेशर में मखाने के नियमित इस्तेमाल से इस **गंभीर समस्या** से काफी हद तक राहत पाई जा सकती है। कारण यह है कि इसमें पाया जाने वाला **एल्कलॉइड हाइपरटेंशन** यानी **हाई ब्लड प्रेशर की समस्या** को नियंत्रित करने का काम करने में सक्षम है। इसलिये, **बीपी की समस्या** को नियंत्रित करने के लिए मखाने का सेवन करना उचित रहता है।

3. हृदय के लिए गुणकारी

मखाने का सेवन **उच्च रक्तचाप** को नियंत्रित करने का काम करता है। इसके अलावा, यह **मधुमेह** और बढ़ते वजन को भी नियंत्रित करता है। वहीं, **उच्च रक्तचाप, मधुमेह** और **मोटापे** को हृदय रोग का जोखिम कारक माना जाता है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि मखाने का सेवन इन **समस्याओं** से बचाव कर इनसे होने वाले **हृदय रोग** के जोखिम को कम कर सकता है। साथ ही कमल का बीज यानी **मखाना कार्डियोवस्कुलर रोग (हृदय संबंधी)** से बचाव का काम करता है।

4. प्रोटीन का अच्छा स्रोत

मखाने में प्रोटीन की अच्छी मात्रा पाई जाती है। **100 ग्राम मखाने में लगभग 10.71 ग्राम प्रोटीन पाया जाता है ।** इसलिये, नियमित रूप से मखाना खाने से प्रोटीन की कमी को पूरा किया जा सकता है। जिससे शरीर को आवश्यक मात्रा में प्रोटीन की पूर्ति की जा सकती है। प्रोटीन की कमी से होने वाली कई **समस्याओं** से भी आराम मिल सकता है।

5. गर्भावस्था में फायदे

गर्भावस्था में मखाना का सेवन करना फायदेमंद होता है। गर्भावस्था में महिलाओं के लिये मखाने का उपयोग कई प्रकार के पकवानों में मिलाकर किया जाता है। **मखाने का उपयोग गर्भावस्था के दौरान और प्रसव के बाद की होने वाली कमजोरियों को दूर करने के लिए किया जाता है।** इसके अलावा, इसमें कई प्रकार के **पोषक तत्व** जैसे की **आयरन, प्रोटीन, मैग्नीशियम** और **पोटेशियम** जैसे **पोषक तत्व** होते हैं, जो गर्भावस्था के दौरान महिला को स्वस्थ रखने में मदद करता हैं।

6. कान दर्द में आराम

कई कारणों से **कान के दर्द की समस्या** हो जाती है। ये बीमारी बच्चों में ज्यादातर देखा जाता है। कान के दर्द से राहत पाने के लिये मखाना के बीज का प्रयोग कर सकते हैं। मखाना के बीजों को पानी में उबालकर काढ़ा जैसा बना लें। इस काढ़ा को एक या दो बूंद कान में डालें। इससे कान दर्द कम होता है।

7. गठिया के दर्द से राहत

गठिया आज एक आम बीमारी बन गई है। गठिया के कारण शरीर के जोड़ों, जैसे- पैर और हाथ आदि अंगों में बहुत दर्द होता है। **मखाना के गुण से आप लाभ ले सकते हैं।** इसके लिये मखाना पेड़ के पत्तों को पीसकर दर्द वाले जगह पर लगाये। इससे आराम मिलता है।

सूखे मेवे सेहत के लिये उतने ही जरूरी हैं जितने की अन्य **खाद्य पदार्थ** होते हैं। इसलिये जब भी किसी की सेहत थोड़ी सी भी गड़बड़ होती है तो लोग **फल** और **हरी सब्जियों** के अलावा **ड्राई फ्रूट्स** भी खाते हैं, रिकवरी के लिये। हम सब यह जानते है कि ड्राई फ्रूट्स का नियमित सेवन हमारे स्वास्थ्य के लिये लाभदायक होता है। **माखने का सेवन सभी उम्र, वर्ग के व्यक्तियों के लिये फायदेमंद होता है।** मखाने से जुड़े यह सारे **महत्वपूर्ण** व **लाभकारी** तथ्य जाने के बाद , क्यों न हम मखाने को अपने आहार में शामिल करें और अपना **जीवन स्वस्थ** और **आनन्द** युक्त बनाये।

इस मास में विशेष: साधना दीक्षा



कुण्डलिनी षटचक्र जागरण साधना

29 जून, देवशयनी एकादशी

कुण्डलिनी जागरण ही समस्त **सिद्धियों का सार** है। **मूलाधार** से लगाकर **सहस्त्रार** तक एक-एक कर चक्र जब जाग्रत होते हैं, तो साधक को अनेकों **दिव्यानुभूतियां** होती है। सामने वाले व्यक्ति के मन की बातें जान लेना, दूर कहीं घट रही घटना को बैठे-बैठे देख लेना, **अदृश्य शक्तियों** से **वार्तालाप करना** और **मानसिक तरंगों** द्वारा दूरस्थ बैठे व्यक्ति से **सम्पर्क करना**- ऐसी अनेकों **अतीन्द्रीय शक्तियों** का प्रादुर्भाव **कुण्डलिनी के चक्रों के जागरण** से होता है।



गुरू आत्म वार्तालाप प्रयोग

03 जुलाई, सद्गुरूदेव महाप्रयाण दिवस

इस साधना को सम्पन्न करने पर **साधक** को **ध्यानावस्था** में **पूज्य सद्गुरूदेव जी** से मानसिक रूप से वार्तालाप होने की स्थिति निर्मित होती है। साधक अपने प्रश्नों को गुरूदेव के समक्ष रखकर उनका निदान पा सकता है। कई बार संकट आने के पूर्व ही इस साधना से सम्पन्न साधक को सद्गुरूदेव आभास करा देते हैं और **संकट की घड़ी** के पूर्व ही उससे बचने का प्रावधान भी कर देते हैं। ऐसे **विशिष्ट पर्व** पर इस साधना के माध्यम से साधक सद्गुरूदेव जी से वार्तालाप कर अपने **जीवन की न्यूनताओं** को समाप्त कर **पूर्णता** प्राप्त कर सकता है।



रोग मुक्तिदायक रूद्र प्रयोग

17 जुलाई, हरियाली अमावस्या

किसी भी रोग का होना **दुर्भाग्य** का सूचक है, यह दुर्भाग्य कभी भी व्यक्ति पर प्रभावी हो सकता है। रोग इस जन्मों के संस्कारों के फलस्वरूप भी हो सकता है और पिछले जन्मों के **दुष्कर्मों** के फलस्वरूप भी। यह प्रयोग सम्पन्न कर व्यक्ति अपने जीवन से रोगों को दूर कर चिर **स्वस्थ** बना रह सकता। **भगवान शिव** की इस साधना के फलस्वरूप साधक को **अरोग्यता** के साथ **शतायु जीवन** की **प्राप्ति** होती है।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।



क्यों जरूरी है बच्चों के लिये MEDITATION??

बच्चों के जीवन में न तो कुछ खास **TENSION** या कोई बहुत सोच-विचार करने कि बाते होती हैं, उनके जीवन के अधिकतर **DECISIONS** उनके **माता-पिता** ही लेते हैं, न ही बच्चों के जीवन में समाज-परिवार के दाव-पेच जैसी **समस्यायें** होती हैं या **RELATIONSHIP** की **TENSION** या **BURDEN** होता है, तो फिर क्यों इनके लिये **MEDITATION** अनिवार्य है!!?

बच्चों के लिये **MEDITATION** आज के युग में तो बहुत **अनिवार्य** है क्योंकि आज बच्चों के पास ध्यान भटकाने के कई साधन जैसे **MOBILE-TV-COMPUTER GAMES-REELS** आदि हैं और माता-पिता के पास समय और संयम कि कमी। इसी लिये बच्चों के सामान्य काम या **HOMEWORK** या **SCHOOL** का काम करवाने के लिये भी छोटे-छोटे बच्चों को अभिभावक **TUTION** रख रहे हैं या डाट-डरा कर पढ़ा रहे हैं। जो **SCHOOL** का काम कुछ नया **सिखना** व **मजा** खेल होता था वो **सजा** बन गया है। इसी लिये बच्चों के लिये दिन में 2-3 बार सिर्फ कुछ मिनटो के लिए ध्यान (**MEDITATION**) करना ही चाहिये और यह बहुत कठिन नहीं, सुबह **SCHOOL** जाने से पहले **पूजा स्थान** में **ॐ** कि ध्वनि या सिर्फ एक बार **गुरू मंत्र** या **गायत्री मंत्र** बच्चों के साथ गायें और यह **PRACTICE** शाम को आरती के समय व रात को सोने से पहले करें।

ऐसा करने से स्वतः ही बच्चों का मन शांत रहेगा व उनका (**CONCENTRATION**) **एकाग्रता** भी बढेगी साथ ही साथ वे कम **उग्र** होंगे और **ज्यादा** प्रसन्न रहेंगे। इसी के साथ बच्चों का अपने **माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी** से अधिक प्रेम व सम्मान बढेगा व हमारी **संस्कृति** व **ईश्वर** के प्रति सजग होंगे।

वराहमिहिर वचन

जून माह के प्रत्येक दिवस को अनुकूल व सफलता युक्त बनाने के उपाय.....!

02. देवत्व शक्ति प्राप्ति ज्येष्ठ पूर्णिमा साधना महोत्सव 02-03-04 जून कैलाश सिद्धाश्रम, 1-सी, पंचवटी कॉलोनी, जोधपुर में सम्पन्न होगा। सम्पर्क 9950809666

03. वट सावित्री पर्व पर गृहस्थ जीवन को अखण्ड सौभाग्य सुहागमय बनाने हेतु सत्यवान सावित्री सुहागवती दीक्षा ग्रहण करें। न्यौछावर ₹ 1800

05. विश्व पर्यावरण दिवस पर एक पौधा स्थापित कर निरन्तर 3 वर्ष तक देखभाल करने से सुफल की प्राप्ति होगी।

08. भगवान विश्वकर्मा, गौरी शंकर महामाया त्रि-शक्ति साधना महोत्सव सूरजपुर (छ.ग.) में 08-09 जून को सम्पन्न होगा।

09. पंच दिवसीय पंचक में नित्य पांच देवों को अष्ट गंध, कुंकुंम, चन्दन, चावल व पुष्प अर्पित करने से पुनः उक्त पूजन सामग्री के भावों की कोटी रूप में प्राप्ति होती है।

11. कुंभयोग युक्त आषाढ़ी अष्टमी दिवस पर आठ तरह के धान से मिश्रित भोजन बनाकर भगवान श्रीकृष्ण को अर्पित करे।

14- जीवन को योगमय कृष्ण स्वरूप बनाने हेतु योगीनी एकादशी पर्व पर ''क्लीं ऐं कृष्णाय दीक्षा'' ग्रहण करे। न्यौछावर ₹ 1800

15. सर्व दुष्चिंता निवारण आषाढ़ी सूर्य तेजस्विता शक्ति धनदा साधना दीक्षा महोत्सव 15-16-17-18 जून कैलाश नारायण धाम E-1077 सरस्वती विहार पीतमपुरा, दिल्ली में सम्पन्न होगा। सम्पर्क: 9013859760, 8750757042

18. पितृ अमावस्या पर जो भी घर में सात्विक प्रसाद बना है उसे दो रोटी के चार टुकड़ो पर रख कर पक्षियों को अर्पित करें।

19. आषाढ़ी शुक्ल पक्षीय चन्द्रवार युक्त नवरात्रि में आद्या शक्ति माँ दुर्गा के नव स्वरूपों का दस महाविद्याओं की अभ्यर्थना आराधना करने से आना वाला चर्तुमास गृहस्थ व साधनात्मक रूप से उच्चतम सुस्थितियों से युक्त हो सकेगा।

20. भगवान जगन्नाथ रथ यात्रा पर्व पर पूर्ण कलावतार विष्णु लक्ष्मी दीक्षा ग्रहण करने से श्री जगन्नाथमय सुस्थितियों की प्राप्ति होती है। दीक्षा न्यौछावर ₹ 2100

21. विश्व योग दिवस पर अपनी देह के रोम-प्रति रोम को चेतन्य जाग्रत करने हेतु नियमित रूप से योगा प्राणायाम की क्रियायें करने से शतायु जीवन की प्राप्ति होती है।

23. आषाढ़ी नवरात्रि की पंचमी पर्व पर हिरण्यगर्भा कमला दीक्षा ग्रहण करें। दीक्षा न्यौछावर ₹ 1800

26. दुर्गा अष्टमी पर्व पर आद्या शक्ति माँ दुर्गा के बत्तीस नामों का 11 बार उच्चारण कर दुर्गा आरती सम्पन्न करें।

27. आने वाले चार्तुमास में पूर्ण संकल्प भाव से उस भोज्य पदार्थ का परित्याग करे जो आपकी जिव्हा को रूचिमय लगती है। अर्थात जिस मिष्ठान अथवा नमकीन का अधिक उपयोग करते है उसका परित्याग करने से आत्मशक्ति की वृद्धि होती है।

29. देव शयनी महागौरी एकादशी पर्व पर पंच सती दीक्षा ग्रहण करने से अखण्ड सौभाग्य रूप में कुल परिवार वंश में सुवृद्धि होती है। दीक्षा न्यौछावर ₹ 1800

देव शयनी एकादशी से नित्य श्रीमद् भागवत का एक-एक अध्याय का पाठ करने से सांसारिक गृहस्थ जीवन सर्व देवत्व स्वरूप भागवत में बनता है।

01 जुलाई महामाया शिव शक्ति अटूट कुबेर लक्ष्मी प्राप्ति गुरू पूर्णिमा साधना महोत्सव 01-02-03 जुलाई को अग्रसेन धाम, सिटी मॉल के पास, G E Road-फूडहर मार्ग, रायपुर (छ.ग.)

काल निर्णय

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4:24 से 6:00 बजे तक ही रहता है।

दिवस	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
जून	18,25	19,26	20,27	14,21,28	15,22,29	16,23,30	17,24
जुलाई	02,09	03,10	04,11	05,12	06,13	07,14	01,08,15
श्रेष्ठ समय दिन	06:00 से 08:24 11:36 से 02:48 03:36 से 04:24	06:00 से 07:12 09:12 से 11:36	10:00 से 11:36 04:24 से 6:00	06:48 से 08:24 08:24 से 10:00 02:48 से 05:12	06:00 से 07:36 10:00 से 11:36 04:24 से 06:00	06:00 से 06:48 07:36 से 10:00 12:24 से 03:36	06:00 से 06:48 10:48 से 12:24
श्रेष्ठ समय रात	06:48 से 10:00 12:24 से 02:48 04:24 से 06:00	08:24 से 11:36 02:48 से 03:36	06:48 से 10:00 12:24 से 02:48 05:12 से 06:00	07:36 से 09:12 12:24 से 02:48	09:12 से 11:36 02:00 से 04:24	07:36 से 09:12 10:48 से 11:36 01:12 से 02:48	08:24 से 10:48 02:48 से 03:36 05:12 से 06:00

Ashadi Navratri

19th to 28th June



Pratyangira Sadhana

A powerful Sadhana to remove enemies and gaining hypnotic powers

Karotu Sa Nah Shubh Heturishwari ||
Shubhaani Bhadrani Bhiganru Chaapdah ||

O Mother Jagadamba! Please save me, be the nurture of my family, bring piousness into my life, bestow fortune on me and grant me fearlessness.

The Ashadha Gupta Navaratri is a very **religious** and **auspicious festival** during which one can appease **Mother Goddesses**. It is **a nine-day period** that falls during the waxing phase of the moon in the month of **Ashadha.** The Sadhaks worships Her as She **removes sorrows** and bestows benevolence on the people. All rituals and ceremonies performed during these days **protects** a person from **harm** and also grant **Siddhis** and **Riddhi.** Performing Sadhana and mantra chanting during these **divine days** provides the blessings of **prosperity, wealth** and **knowledge.** SadGurudev once told that these nine days are as **powerful** and **energized** as other Navratris.

Among the several forms of **Goddess Durga, Pratyangira** for holds **special significance.** ***Shakti Mimansa*** explicitly mentions that a **Sadhak** must perform this Sadhana in life. This Sadhana is beneficial in removing **fears** from **enemies, legal issues** as well as for gaining influential powers. The biggest **advantage** of this Sadhana is makes a person **highly hypnotic.** This Sadhana has been kept secret and very few texts talk about it. A person can easily win over his enemy in the way he wants after performing this Sadhana. **Navratri** is a great time to perform this Sadhana and get blessed by the **Goddess.**

In the current era, almost every person is tormented by **enemies** and **a fear** of legal issues always looms over us. As a result, the person has to face several **hurdles** in life and is unable to attain the growth with respect to the efforts the person puts into the task. Tantrik texts have agreed up on the fact that ***Pratyangira Sadhana*** is a boon for ***Kaluga*** and provides a quick result. The Sadhak starts to observe the results prior to the completion of the **Sadhana.**

The text, ***Shakti Mimansa,*** mentions that a person who has accomplished ***Pratyangira Sadhana*** never faces any **troubles** from his enemies in entire life. His enemies continue to get **weaken** day after day and he is even safeguarded from any legal issues. Once the person makes up his mind to complete the task, no hurdle can come in his path and the task gets completed with expected outcomes. A special shine emits from the eyes of such a person and any person who looks into his eyes is bound to get attracted. The texts also mentions that this Sadhana must be performed with full concentration and devotion. Also, the Sadhak must daily chant the mantra once the Sadhana is started.

If the **Sadhak** is suffering from any sort of problem or hurdle, if there is any blockage due to government officials, if any specific work is not getting done even after putting the best possible efforts then this Sadhana is a boon for such a person. This Sadhana instantly provides a **remedy** and **removes** all sorts of **troubles** and hurdles from the life of the Sadhak. Several Sadhaks have performed ***Pratyangira Sadhana*** when they had lost hope after putting into every possible effort and they were left astonished with the outcome of this Sadhana. This Sadhana is a boon for getting rid of fear, any sort of hurdles, victory over enemies and getting any work done from a person.

This Sadhana can be performed on any day during the year, however, **Navratris** can be used to perform this Sadhana as these days are the most favorable time to appease the Mother Goddess.

Sadhana Procedure

One needs ***Pratyangira Yantra*** & ***Rudraskh rosary*** for performing this Sadhana. The Sadhak must clean the **worship place** & **sprinkle Ganga water.** Take a bath and get into **fresh red clothes.** Sit on a red mat facing north and place a wooden plank before you. Cover the **wooden plank** with a fresh piece of red cloth. Place **a picture of Gurudev** and worship Him with **vermillion, rice grains, flower** etc. Chant one round of **Guru Mantra** and **seek** His blessings for the **success in Sadhana.**

Now take some rice dyed in red color and make **seven mounds,** one at the center, four



at the corners of the plank and one on right and left side of the center mound. Sadhak must place a big lamp at the center and this lamp must have eight wicks. These eight wicks are the symbols of the eight forms of **Goddess Durga.** Sadhak has to focus on this lamp only during the entire Sadhana procedure. Sadhak should use mustard oil in the lamp.

Next place a betelnut on each corner mound, they are the symbols of ***Mahaveer*** who are helpful in completing the tasks. Place two more betelnuts on the side mounds, they are the symbols of ***Lord Ganesha*** and ***Kshetrapal***. Now worship the lamp by making a mark with saffron-vermillion mixture chanting the below mantra

Om Namo Bhagwati Pratyangira Deep-Jyoti Trikon Sansthe Akhand Jyoti Akhand Trishatkoti Devata Malini-Nirmal, Ardha-Ratri, Nigamastute, Jwala Malini Deep Jyoti, Sarva Karva Siddhim Kuru Kuru Namah

Now perform ***Karnayas*** & ***Anganyas*** with the following mantra:

Om Ayiem Shreem Hreem Angusthaabyaam Namah//

Touch thumbs

Om Ayiem Shreem Hreem Tarjaneebhyaam Namah //

Touch index fingers

Om Ayiem Shreem Hreem Madhyamaabhyaam Namah//

Touch middle fingers

Om Ayiem Shreem Hreem Anamikaabhyaam Namah //

Touch ring fingers

Om Ayiem Shreem Hreem Kanishthakaabhyaam Namah //

Touch little fingers

Om Ayiem Shreem Hreem Karatal Kara Prishthaabhyaam Namah //

Touch palms and back side

Om Ayiem Shreem Hreem Hridayaaya Namah //

Touch heart

Om Ayiem Shreem Hreem Shirase Swaha //

Touch head

Om Ayiem Shreem Hreem Shikhaayai Vashat//

Touch back of head

Om Ayiem Shreem Hreem Netratrayaaya Vaushat//

Touch both eyes

Om Ayiem Shreem Hreem Ashtraaya Phat //

Touch entire body

Now dip the ***Pratyangira yatra*** in vermillion paste and place it between the center mound and yourself. Offer ***21 petals*** of red rose chanting the below mantra.

Om Namo Pratyangira SarvaKamana Siddhi Hraam Hreem Namah

Next worship all divine forms (symbolized by betelnuts) with **vermillion, rice grains, flower** etc. Now focus on the burning wick in front of you and meditate on the form of **Goddess Pratyangira.** One must ensure that entire focus remains towards the flame only and the concentration must not get diverted. Chant ***5 rounds*** of the below mantra keeping your gaze fixed on the lamp.

Mantra

|| Ayiem Kleem Hansau Pratyangira Mama Vashyam Kuru Kuru Hreem Samvaushata Swaha ||

|| ऐं क्लीं हंसौ प्रत्यंगिरा मम वश्यं कुरु कुरु ह्रीं सम्वौषट स्वाहा ||

This completes the Sadhana procedure. If you face any issue with your **enemies** in future, then light some fire and make ***108*** offerings of yellow mustard seeds into the fire chanting. **Sadhak** must face in another direction while making the offering and add ***Shatru Kshaya*** after the mantra. This will neutralize your enemy.

If someone is **troubled** by **evil spirits,** then take a copper tumbler and fill it with chant. Chant the above mantra ***21 times*** and sprinkle the water over the person. The evil spirit will immediately leave the body and person will get relieved from any **sufferings.**

If you want to make someone favorable, take black **sesame seeds** and offer them in fire chanting the above mantra ***11 times.*** The name of the person whom you want to make favorable must be chanted after the mantra.

Truly, this **Sadhana** is a blessing in the **current era** where there is cut throat competition, where are enemies at every step of life, where a person unknowingly falls into the traps of others. Performing this **Sadhana** can safeguard a person from all such nuances and make the life more fulfilling.

Sadhana Articles ***₹780/-***

Guru Poornima

3rd July



Every atom of my body has Guru Tatva!

The essence of this **universe** is none other than the Guru element. **Guru is not a mere human body but is the divine incarnation of the Brahma.** He is an ocean of divine consciousness as he resides on a higher spiritual plane, because His **Kundalini** is fully activated and so is His **Sahastrar.**

There is no need to eat or drink anything for such **great souls.** They might pretend to show that their existence is based on the food and drink just as any other ordinary person, they do so to keep the people around them under the veil of **Maya.** Such great souls can perform **Sadhanas** sitting six feet above the ground in air. There is no place on this earth where blood has not been shed out of hatred or jealousy and thus special **Sadhanas** can't be performed seated on the ground.

It is also a fact that everyone can't sit six feet above the ground and perform the Sadhanas. To accomplish this feat, one has to achieve **purity of mind, body** & **soul.** Without it, one can't live for thousands of years or reach the divine spiritual land known as **Siddhashram**. The type of life you are leading is nothing special. You are just heading towards the crematory where all your **ancestors** have ended and if you also need a similar ending, then you don't need a Guru.

Every time I warn you, every time I explain you that I will take you to the nirvana in this very life and that this is my **guarantee;** the clause of this guarantee is when you completely get rid of your **ego,** when you completely end yourself. What you are and how you look like is immaterial. However this life is beyond how you perceive it, to take a birth and then finally get cremated is not what you can call as life. It is said that the divine fragrance of **Ashtagandha** used to emanate from the body of **Lord Krishna, Lord Buddha** and other great **yogis** and **saints.** On the other hand your body starts stinking if you don't even take a bath for one day. Why can't such a fragrance emanate from your body? **Why can't you have a divine personality?**

Even God remains desirous to be born as **humans** because it is the only medium through which one can achieve highest level of spirituality. The method of doing this is by entering into the ***Praantatva*** or linking oneself to **the Guru element** that is within a human. The true knowledge will pour out on its own without you having to read ancient texts. There are thousands of Sadhanas and no human being can try all of them to rise spiritually. The question that arises here is there no Sadhana that can bestow all the boons - may it be spiritual or worldly?

The answer to this is ***Guru Hridayasth Sthaapan Sadhana***. Presented here is a **unique Sadhana** that cannot be found anywhere else and is very difficult to procure. It is the highest Sadhana that a person can try and so it has been kept secret over last thousands of years. It might appear too simple to believe; but one could get linked to the **Guru element**, to one's soul and its amazing infinite capabilities by the means of this sadhana.

Sadhana Procedure:

One needs ***Guru Hridayasth SthaapanYantra*** & ***Crystal rosary*** for this Sadhana. Get up early in the morning and have a bath. Get into fresh yellow clothes. Sit on a **yellow mat** facing **north.** Cover a wooden seat with **yellow cloth.** Place Take some petals of a yellow colored flower and place Guru **Hridayasth SthaapanYantra** over it. Light a ghee lamp and then speak out thus:

Deergho Sadaam, Vei Paripoorna Roopam, Gurutvam Sadeivam Bhagwat Prannamyam. Tvam Brahma Vishnu Rudra Swaroopam, Tvadeeyam Prannamyam, Tvadeeyam Prannamyam. Na Cheto Bhavaabdhe Ravi Netra Netram, Gangaa Sadeiva Paramam Cha Rudram. Vishnnorvataam Mevatmev Sindhum, Eko Hi Naamam Gurutvam Prannamyam. Aatmo Vataam Poorna Madeiv Nityam, Siddhashramoyam Bhagwat Swaroopam. Dheergho Vataam Nitya Sadevam Tureeyam, Tvadeeyam Sharanyam Tvadeeyam Sharanyam. Eko Hi Kaaryam, Eko Hi Naamam, Eko Hi Chintyam, Eko Vichintyam, Eko Hi Shabdam, Eko Hi Poorvam, Gurutvam Sharanyam, Gurutvam Sharanyam.

Offer **saffron, rice grains, flowers** & **sweet** made from milk on the **Yantra.** Then chant one round of the following mantra while standing on toes with heels kept above the ground.

Mantra

|| Om Hreem Nrim Mama Rakta Bindu Hridayasth Guru Sthaapitam Nrim Hreem Om ||

।। ॐ ह्रीं नृं मम रक्त बिन्दु हृदयस्थ गुरु स्थापितं नृं ह्रीं ॐ ।।

Do this regularly for **21 days.** Then drop the **Yantra** & the rosary in a river or pond. Guru element is established in each atom of one's body & one starts the journey towards spiritual **enlightenment** by the means of this **Sadhana.**

Sadhana Article ₹790/-

Shravan Month

4th July - 31st Aug



Shravan Month is bringing 8 boons in your life.

Om Tat Purushaya Vidhmahe Mahadevaya Dhimahi Tanno Rudra Prachodayat

We pray to Mahadev, the supreme of all Gods, for bestowing intellect upon us and liberating us from ignorance.

Lord Shiva is one among the **Trinity Gods** – ***Brahma, Vishnu*** & ***Mahesha*** & is associated with **death** which means liberation from the cycle of **birth** and **death.** With liberation, He in turn takes us out from the **illusionary** world and help us realize what is our real **purpose** in this **universe.** Thus, the destructive **power of Lord Shiva** in fact acts as great **purifying power** in this entire universe. As this entire universe is cyclic, the destruction leads to a new creation, a new opportunity for this illusion to unfold. Being ***Satyam, Shivam*** &

Sundram, He is the symbol of ***Truth, Goodness*** & ***Beauty.***

There are several forms of **Lord Shiva.** His first form was ***Aghora*** which means ***simple.*** Next form is ***Ishan*** which often appears as ***Shivalinga,*** the third one is ***Tat Purush*** in which He is meditating, then there is ***Varna Dev,*** the auspicious **Shiva,** then ***Sadyojat*** which is His wrathful form. Another form of the benevolent lord is ***Natraj,*** where He is dancing and depicting the construction and destruction of this entire universe. In His ***MahaMrityunjaya*** form, He is depicted as the great conqueror of **death** and provider of immortality. Another form of the lord, where He is worshiped along with **Goddess Parvati,** ***Ardhanarishwara.***

As a God of **anger,** He is popularly known as ***Rudra*** who is red in rage. As ***Kailashpati,*** He is the **lord of Kailash.** As ***Pashupatinath,*** He is the lord of all the beings. As ***Purush,*** He is the Lord Himself. On one hand where Lord Shiva taught ***Vedant,*** the transcendent knowledge to Goddess Parvati, She taught ***Sankhya,*** the cosmological knowledge to **Lord Shiva.** All these forms of the great Lord were just taken for the benefits of this universe. Thus, worshiping the various forms of the Lord during this **Shravan** month can bring a remarkable change in **our life.**

Normally, we just get 4 or at max 5 Mondays during this **divine month.** However, due to divine celestial alignment, the universe is blessed with two months of **Shravan month** & which is bringing ***8 divine Mondays*** for us. Thus, instead of just worshiping 4-5 forms of Lord Shiva, we can appease ***8 forms (we can actually get blessed with 8 different aspects boons)*** of Lord Shiva. All the devotees of Lord Shiva are sure to get all their wishes fulfilled this year. Presented below are two Sadhanas which must be performed during **the first two Mondays of Shravan month.**

First Monday (10-07-2023)

The first Monday should be used to gain **good health.** It's wisely said that the first pleasure of life is good health as only a person with good health can enjoy anything else in life.

Vyayamat Labhate Swasthyam
Deerghayushyam Balam Sukahm |
Arogyam Paramam Bhagyam
Swasthyam Sarvarthasadhanam ||

Health is the biggest wealth in one's life. It is the only thing with which all the other things can be achieved in life. With **exercise,** one can achieve **perfect health, happiness, longevity** and **strength.**

One form of **Lord Shiva** is also called ***Baidnath*** and hence worshiping the Lord in this form can help a person to get rid of **all sorts** of **diseases.** Not only this, a person can also obtain **a good personality, attraction** and **glow** on the face by the grace of **Lord Shiva.**

One needs ***"Baidnath Yantra"*** & ***"Kaamdev rosary"*** for this **Sadhana.** Get up early on the day & take a bath. Get into fresh white cloth and sit on a white mat facing north. Place a picture of revered **SadGurudev** & worship Him with **vermillion, rice grains, flowers** etc. Light **a ghee lamp** and an **incense stick.** Then chant one round of **Guru Mantra** with the ***Kaamdev rosary*** & pray to Gurudev for success in **Sadhana.**

Next place **a copper plate** in front of **Gurudev's picture** & put ***Baidnath Yantra*** on it & worship it with **vermillion, rice grains, flowers** & offer some sweet.

Now chant ***5 rounds*** of the mantra below.

Mantra

|| Om Vam Rati Priyaayai Mam
Rog Naashaaya Phat ||

|| ॐ वं रति प्रियाय मम
रोग नाशाय फट् ||

Offer all the **Sadhana articles** in a river or pond the next day. This completes the Sadhana procedure.

Sadhana Articles ₹750/-

Second Monday (17-07-2023)



Once after performing the **Sadhana** for **good health,** the person should utilize the second Monday for winning over the **enemies.** Our enemies are not only in human form, they can also be in the form of **poverty, struggles,** day to day challenges that come in our path which drains out our energy. Due to this reason only, Chanakya mentioned:

Nasti Buddhimataam Shatru

The above verse means that wise people have no enemy because they understand the negative side of having the **enemies in life.**

On one hand where **Lord Shiva** is a quick appeasing God, He is also a fearsome warrior. His various forms like **Bhairav**, **Veerbhadra** etc. are all capable of demolishing even the toughest opponents. Then how can our enemies stand before us if we are graced by the benevolent Lord.

One needs ***"Mahadev Yantra"*** & ***"Rudra rosary"*** for this Sadhana. This Sadhana can be performed in morning or at the night. Take a bath and get into fresh white cloth and sit on a white mat facing north. Place **a picture** of revered **SadGurudev** and worship Him with **vermillion, rice grains, flowers** etc. Light a ghee lamp and an incense stick. Then chant one round of **Guru Mantra** with the ***Rudra rosary*** & pray to Gurudev for **success in Sadhana.**

Next make a mound with **yellow dyed rice grains** & place ***Mahadev Yantra*** on it & worship it with **vermillion, rice grains, flowers** & offer some sweet. Now chant ***5 rounds*** of the mantra below.

Mantra

|| ***Om MahaaDevaaya Rudraaya Mam Shatrum Vinaashaaya Hum*** ||

|| ॐ महादेवाय रुद्राय मम शत्रुं विनाशाय हुं ||

Drop all the **Sadhana articles** in a river or pond the next day. This completes the Sadhana procedure.

Sadhana Articles ₹730/-



Gain Unlimited wealth via Swarn Khappar Diksha

Ravana was born to a great sage **Vishrava** and his wife, the **Asura princess Kaikeshi.** Ravana's grandfather on his father's side, the sage **Pulastya,** was one of the ten **Prajapatis** or mind-born sons of **Brahma** & one of the **Saptarishi (Seven Great Sages Rishi)**. Ravana was a **great personality** right from his childhood.

When he was just **5 years old,** one day his father, **Vishrava,** handed him a bowl and asked him to go to the nearby village and beg for his livelihood. Listening to the words of his father, Ravana refused by saying, **"Why shall I beg before others?"**

To this, Vishrava told him that they were **Brahmins** and Brahmins live their life on begging only. Ravana said bluntly, **"Brahmins beg only because they don't have pride. I am not going to beg before anyone."**

Listening to such arrogant words from his 5 years old son, Vishrava got infuriated and asked the little boy to get out of his hermitage saying that he will not feed Ravana just like that.

Ravana, being a child with high virtues, left the hermitage at once and straightaway went to his grandfather, **Pulatsya.** He touched Pulatsya's feet with tears in his eyes. The grandfather was delighted to see his grandson. However, the tears in the eyes of a small boy made him a little bit **uncomfortable.** He asked, **"My son, Ravana, what is the issue? Are you fine?"**

Ravana replied, "Today father asked me to beg and I refused and due to this reason he asked me to get out of the hermitage."

Pulatsya asked, "But why did you refuse to beg? All the Brahmins beg for their living."

Ravana replied, "I am never going to beg before anyone. My consciousness doesn't allow me to do that."

Pulatsya saw a spark in the eyes of the small child. He was able to make out that this

child is going to make a big impression for himself in the future.

Ravana then asked, "Grandfather! Isn't there a way by which I can become extremely rich in life? I don't want to beg before anyone, not even Goddess Lakshmi. You are among the greatest sages. I am here to seek your guidance."

Pulatsya took a deep look in the child's eye and said, **"Yes it is possible. However, you can't attain that knowledge from me as my grandson. You need to first become my disciple and serve me to get this knowledge."**

Ravana was more than pleased to hear that. At least, now he was sure that there is a way out by which **poverty** can be removed permanently from **life.** He then served his Guru for next several years and then came that great day when his Guru called him.

"Ravana, I am pleased with your service. I am going to tell the way by which you can attain unending wealth in life. However, for that you will have to do a great penance and appease **Lord Brahma.** I am sharing the mantra by which you can appease Lord Brahma.", said Pulatsya and gave him the divine mantra.

Ravana left for deep jungle and started his meditation. He meditated for several years and then Lord Brahma finally appeared before him.

"Open your eyes son! I am happy with your penance. Ask for any boon.", said Lord Brahma.

"O great Lord! Grant me this wish that I can become wealthy in life. Share me that secret Sadhana procedure using which I can imprison Goddess Lakshmi in my home. I want to get such a control over Lakshmi that She should remain bound to stay with me no matter how I treat Her.", said Ravana.

"O son! I can't grant you this boon as only Lord Shiva knows this secret Sadhana.", said Lord Brahma.

Hearing these words, Ravana got disheartened. He thought that all his penance went in vain. Reading Ravana's mind, Lord Brahma continued further, **"However, I can tell you that secret mantra by which you will be able to please Lord Shiva and get this boon."**

Then Lord Brahma gave the secret mantra and disappeared.

Ravana again started his penance with full vigor. And finally came that day when Lord Shiva was pleased with his penance and appeared before Ravana.

"Open your eyes Ravana! What is your desire, ask for any boon and I will fulfill it.", said Lord Shiva.

"O benevolent Lord, give me that secret Sadhana by which not only I can eradicate poverty from my life but can also gain enormous wealth in life. I want to become the wealthiest person ever in the world.", replied Ravana.

"I can't give you this boon. Ask for anything else.", said Lord Shiva.

"Fine, then give me death! I don't want to live a life by begging before others. Rather, I will prefer to die by your hands.", requested Ravana.

Lord Shiva thought for a moment and said, **"Fine I will share you that secret Sadhana however you will have to promise me that you will never share this Sadhana with anyone."**

"For sure I will share it. I will share it with my disciples & if I won't get any disciple, I will write down the details in a text so that no one in future is forced to beg like me. You can think once again and rather grant me death.", said Ravana.

Lord Shiva was moved by the determination of the child and granted him the boon. And we can look back in the history & confirm that no other king was ever wealthier that Ravana. Those kings had few gold coins, jewelry or at max a pillar of gold, however, Ravana was able to make his entire kingdom with gold. He had all sorts of luxuries in life, & it was all possible by the means of the divine secret Sadhana shared by Lord Shiva. This Sadhana is none other than ***Swarna Khappar Sadhana.***

The current era is governed by **wealth.** There is no worse situation than when a person is under huge loan and most of his time gets spent in the troublesome thought that how he would be able to repay the loan. Without any doubt, money is the prime factor of this era and is a must to live a contended life. And considering these facts only, **Gurudev** is going to grant this Diksha in the holy month of **Shraavan** so that His disciples too can get rid of **poverty** in this life.

Diksha Cost ₹2100/-

कैलाश सिद्धाश्रम साधनात्मक श्रृंखला.!

सर्व शत्रु संहारिणी धूमावती अभ्युदय युक्त श्रीकृष्ण योग भोग धनदा प्राप्ति साधना महो.

शिविर स्थल: स्वयंवर उत्सव लॉन, महाराजगंज रोड़, बछरावा, (रायबरेली) U.P. 28 मई

सम्पर्क: भरत उपाध्याय 7895727019, देवनारायण गुप्ता 9793687293, अखिलेश वर्मा 9450742182, डॉ. संजीव शर्मा 7388655165, डॉ. राकेश वर्मा 9145502591, बृज किशोर 9198801707, केदारनाथ वर्मा 9793618509, रमेश यादव 9190105404, दीपेंद्र पटेल 9628061910, माता प्रसाद चौरसिया 7526002336, शिव बोधन साहू, ज्ञानेन्द्र सिंह, गणेश प्रसाद मिश्रा, अभिषेक बाजपेयी, शिवनारायण विश्वकर्मा, संजय गुप्ता, रणविजय सिंह, डॉ. आशा शर्मा, धर्मराज ब्रह्मचारी, संदीप वर्मा, केदार, गोलू, धीरेंद्र सिंह, दिनेश, राजेश

देवत्व शक्ति प्राप्ति ज्येष्ठ पूर्णिमा साधना महोत्सव

02-03-04 जून

कैलाश सिद्धाश्रम, 1-सी, पंचवटी कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर

9950809666, 7568939648, 8769442398

गौरी शंकर महामाया ज्वलेश्वर लक्ष्मी साधना महोत्सव

08-09 जून सूरजपुर, अम्बिकापुर

शिविर स्थल: सेवा साधु राम कुंज, सूरजपुर (छ.ग)

सम्पर्क: शिवमंगल सिंह 8878240571, विजेन्द्र सिंह 774889098, भरत उपाध्याय 7895727019, रोहित साव 9753178475 महेश्वर सिंह 9977957301, रामशरण उइके 9770692016 गुलाब कमरो, मनजीत 7000770788, प्राण नाथ सिंह 9669104991, ठाकुर सिंह 7592869821, धुर साय सिंह 9406046221, बिहारी लाल कुलदीप 9424251044, नरेश्वर सिंह 6261587953, विजेन्द्र सिंह 774889098, रामेश्वर 7867463203, बैजू लाल सिदार 9302660718, सूरज त्रिपाठी 7999616254, हिरा लाल 8103448591, नोहर साय सम्पतिमा 9575569181, जितेन्द्र गुप्ता, कमलापति 7439128634, लोकनाथ सिंह 7592869821, तुलसी यादव 8319655737, महेन्द्र सिंह 9516869793, शिव मंगल 8878240571, महेश्वर सिंह 9977957501, मृत्युंजय पांडे, जयकुमार यादव 8435306187, विजय साहू, भंजन सिंह 9340876581, सोनम बंसल, विवेक अग्रवाल 8878020184, सतिशकुमार 6263244340, कुलदीप 934071348, अमृतलाल ताम्रकार 9343830315, जितारंग सिंह, सुरेन्द्र सिदार, मोहन सिंह, चन्द्रभान सिंह, विजय प्रताप, देवला, हेमकुमार, किती कुमार, खेल साय, अनिल सिंह, पनमेश्वर, धरमपाल सिंह, राम कुमार, लाल साय, गजानंद, देमुन दास, रमेश सिंह 6267793474, लवांग सिंह, प्रेम सिंह, जयमंगल सिंह, महेन्द्र सिंह, मोगेश्वर सिंह, धरभरन सिंह, रामशरण उयके 9770692016, मनोज सिंह, भाईयालाल 8120159132, राजेश जयसवाल, अरूण कुमार 7067233401, जनार्दन कुशवाहा 7554545483, संजय कुशवाहा 7000771629, सत्यनारायण जायसवाल 9981142331, विवेक श्रीवास्तव, अनील सोनवानी , देवदत्त साहू, आशीष दुर्बे, कृष्णा गोस्वामी 9826519569, कामेश्वर तिवारी 9406272790, जितम सिंह 9753933516, रेश्मा चेरवा 7987753950

सर्व दुश्चिंता निवारण आषाढ़ी अमावस्या शक्ति धनदा साधना दीक्षा महोत्सव

15-16-17-18 जून

कैलाश नारायण धाम E-1077 सरस्वती विहार पीतमपुरा, नई दिल्ली-34

9013859760, 8750757042

बलभद्र सुभद्रा श्री जगन्नाथ साधना महोत्सव

24 जून दमन, वापी (UT)

शिविर स्थल: नंद हरी पार्टी प्लॉट, ICICI Bank के सामने, दिलीप नगर, कथीरिया नानी दमन

सम्पर्क: धीरू भाई 9998627009, जगदीश दमानिया 9898057455, जया बेन 9974863338, नीता बेन 9824684207, विरल सोनी 9925234536, सुनील सोनी 9925555035 जयेश भंडारी 9428021761, कर्षण भाई 9727721081, हेमंत तांडेल 7046333918, चेतन वरकुंड 9998488560, जयेश बलसारा 9898477861, भरत राठौर 9825609875, अनिल भाई 9979730540, धीरूभाई पटेल 9726017671, राजेश फंसा 9909115383, राजेन्द्र पटेल 9925116459, दमू पटेल 9909876852, दिलीप भाई 99242410217, बाबूलाल 9574474311, कल्पेश भाई 9725500022, योगेश बारीया 9825668219, रीतेश भाई 9925479521, संजय शर्मा 9824131909, शशी देशाई 9712181888, रामा भाई 9712460372, लताबेन पी.जे. पटेल 9824733420, चंद्रप्रभा बेन 9824734230

आषाढ़ी नवरात्रि मुम्बादेवी धनदा शक्ति साधना महोत्सव

25 जून कल्याण (W) मुम्बई

शिविर स्थल: Morya Grand, Jashraj Comm. Complex, Opp. Sagar Hotel, Valipeer Road, Kalyan (W) मुम्बई

सम्पर्क: काजल जग्यासी 8484819761, दिनेश 9323139860, अनिल कुंभारे 9819927898, विपुल 9325952449, सुधीर सेठिया 9920116856, स्नेहलता 8779557391, राजेन्द्र प्रजापति 9422785744, तारानाथ 8805509147, डॉ. गवली 9028812305, डॉ. नामदेव, डॉ. हेमंत 9290766600, पंकज सिंह 9930451021, जगदीश पारीख 9096759861, रमेश यादव 9987560823, अंशु जग्यासी 7972663050, डॉ. रवींद्र 9833514917, नितिशा निगम 7666358731, अनिता सिंह 7020160116, गोकुल खटवानी 9323498932, सतनाम सिंह 8779150562, राजकुमार सिंह 8976452658, प्रवीण पराते 9004322419, मयुर ढोलकिया 9106041568, दिनेश आर 9699422466, स्वाती पांडे 9527562231, अनुपमा सिंह 9004280252, विष्णु कांबले 9322106697, विजेश बेनवाल 9764661638, जय गिरधानी 9323304062, सर्वेश निखारे 9967915995, श्रद्धा निखारे 7738632519

महामाया शिव शक्ति अटूट कुबेर लक्ष्मी प्राप्ति
गुरू पूर्णिमा साधना महोत्सव
01-02-03 जुलाई रायपुर (छ.ग.)

शिविर स्थल: अग्रसेन धाम, सिटी मॉल के पास,
G E Road-फूडहर मार्ग, रायपुर (छ.ग.)

आत्मिक मानसिक शारीरिक चेतना का विस्तार प्रत्येक साधक के जीवन में तब ही परिपूर्ण होता है जब वह पूर्ण आनन्दित प्रसन्नमय भाव चिन्तन से सद्गुरूदेव जी को अपने रक्त के कण-कण में स्थापित करने हेतु वर्ष का सर्वश्रेष्ठ सद्गुरू पूर्णिमा महापर्व साक्षीभूत स्वरूप में सपरिवार आकर जीवन को सभी स्वरूपों में सुमंगलमय बनाने हेतु गुरू परिवार के सानिध्य में गृहस्थ सुखमय चेतनाओं को आत्मसात् करता है। ऐसा ही वर्ष 2080 का महामाया शिव शक्ति अटूट कुबेर लक्ष्मी प्राप्ति गुरू पूर्णिमा साधना महोत्सव है क्योंकि इस पूर्णिमा के साथ ही पुरूषोत्तम मास स्वरूप में लगातार दो माह से युक्त श्रावण मास में शिव परिवारमय पूर्णता प्राप्ति हेतु महामृत्युंजय चेतनामय सुक्रियायें सम्पन्न होगी। अत: सपरिवार आना श्रेष्ठ रहेगा। साथ ही विशेष रूप से जो आयोजक नामावली है उनका हर रूप में विशिष्ट सहयोग सीधे कैलाश सिद्धाश्रम, जोधपुर में ही भेजे।

सम्पर्क: भरत उपाध्याय 7895727019, रोहित साव 9753178475, अरूण मिश्रा 9165121524, हितेंद्र साहू 9301912668, लकेश्वर चंद्रा 9827492838, संजय शर्मा 9111342100, रीना रूपलाल डडसेना 8770628513, फकीर गुप्ता 8770749480, दुर्गा साहू 6263617176, ढेलूराम वर्मा 9926113225, कमलेश वर्मा 8871675784, राजेश मिश्रा 9438281838, सरिता बनर्जी 7247595255, कमलेश यादव 8815071291, नारायण साहू 8827272607, रामभरोसे यादव 9630468164, अरविन्द पाण्डे 9479201600, पवन साहू 9479106838, दिलीप मिश्रा 8982049233, अभिषेक दुबे 9827923678, दाऊराम यादव 8120342491, भोजराम वर्मा 9977896366, कामता यादव 9754213393, पूर्णेश्वरी वर्मा 9981213657, चंद्रमणि 6264627982, लालचंद्र 7869479934, डॉ. रूपराय लहरी 8966882907, मनोज यदु 9340322845, गजानन्द साहू 9926514883, मोतीलाल बिरजे 8770267171, पुरुषोत्तम गिरी 7987256155, धर्मात्मा पटेल 7879296149, श्रीनिवास राव 8109578725, गंगाराम पटेल, संतोष साहू 9827267371, संध्या सिंदे 8817775933, अर्पणा इंगोले 7693952979, सोनिया निखिल 9754366488, सोमेश त्रिवेदी 7000447070, तामेश यादव 9754158732, योगेन्द्र देशमुख 9827153658, शैलेन्द्र पारकर 8319129010, राजीव लोचन साहू 9826743909, सुरेश साहू 9617439920, तामेश्वर कुम्भकार 7047370276, दुष्यंत कौशिक 9981476857, राजकुमार साहू 7999742332, संजय कौशिक 9826710809, राकेश कौशिक 9907900944, डॉ. विद्यासागर खोटेश्वर 9993537004, मधुसूदन देशमुख 9893465198, रमेश निषाद 9770620594, वासु निखिल 9754445864, भुवनेश्वर 8517008077, टिकेश्वर सोनकर 6261093199, थानसिंह पारकर 8827253931, हरिशंकर, सुनीता कोर्राम 8770837630, मनोज निषाद 7225982748, देवबती 7587308363, विद्या ठाकुर 7587286062, प्रमिला दर्रो 7587130366, मानेश्वरी 9406028967, मेक बहादुर राणा 6267618995, दुर्गेश्वरी देहारी 7987045998, मुकेश लावत्रे 9993526735, पंचूराम मण्डावी 7974820345, जनकराम पटेल 7000482971, त्रिभुवन साहू 7974849127, हरिशचन्द्र ध्रुव, टोपेन्द्र देवांगन 8871815112, नारद कंवर 6260143189, मोहन साहू, अमृता देशमुख 9977189095, अशोक मीनपाल 975503970, मानसिंह साहू 8435603970, सुशीला साहू, पवन चंदन, भुवनेश्वर साहू 8817337359, पुष्पेन्द्र सिन्हा 7869424200, गोपाल निषाद 7869905248, पेमेन्द्र साहू 9424138830, देवकुमारी हिरवानी, भोलाशंकर, संगीता गजभये, शंकर कश्यप 9752628597, लोकेश सिन्हा 735948128, गजानन्द साहू 8964804988 चन्द्रशेखर वर्मा 9111344253, रविन्द्र नाथ 9522386600, जागेश्वर पटेल 9425529285, राधिका वर्मा 9302738864, टीकाराम वर्मा 6261180440, रवि वर्मा 9753516718, अजेन्द्र वर्मा, दुकलहा साहू, छबीराम वर्मा 9753383436, मोतीलाल बिरजे, महावीर, दिलीप, कुंजबिहारी, कौशल साहू, धीरेन्द्र सिंह परमार, चंद्रमोहन सिन्हा, कोमल जायसवाल, गज्जू साहू 7000443699, संतराम साहु 9826605904, डॉ. रामेश्वर वर्मा 9826540272, सेवकराम वर्मा 9131418258, अनूप साहू 8435014325, विजेन्द्र देवदास 9926093222, मेषकुमार साहू 7909434787, चंदूराम साहू 9926886313,

मनोहर-वंदना कन्नौजे, राजकुमार 8889595643, दशरथ यादव, गेंदराम साहू 9826684041, महेश साहू 9009089688, रोहित नेताम 9630719141, रमेश सिन्हा 7898453866, कोमल सिन्हा 9009201916, गेंदलाल सिन्हा 9993461187, गौरी चौहान 9691317759, भावना-आरती ध्रुव, योगेन्द्र यादव, तेजेश्वरी सोनवानी, जी.एस. कागजी 9907174406, नरेन्द्र वैष्णव 9770059526, भुपेन्द्र सोनकर 7354329151, तरूण साहू 9098684720, रामलाल चक्रधारी 7610473709, जीवन साव 9826688588, नरेन्द्र साव 7697020268, वंदना डनसेना 7999338544, अशोक सिन्हा 8982811225, मदन सिदार 7987764869, रामबिहारी पाण्डे 9399297105, गोरे लाल सिदार 9009854708, अरूण राज 6265858272, नंदकिशोर 8821834952,योगेश, लक्ष्मीनारायण मौर्य 9907912221, लक्ष्मीनारायण कश्यप, नम्मो यादव, कमलेश साहू 9993233952, मनोज प्रधान 9753876863, शुकलाम्बर प्रधान 7898090557, नरेंद्र मेहर, सूरज साहू, नरेंद्र राठिया, दरस श्रीवास, सहदेव साहू 9893637680, चंद्रशेखर देवांगन, घनश्याम 8103429287, जयनारायण 9131848564, रामलाल सिदार, भरत कर्ष, धनंजय 8966852052, युवराज सिदार 8517833398, अशोक जाँजारे 9893669825, जितेन्द्र यादव 7999421006, संतोष साहू, जे. पी. कर्ष, ईश्वर साहू 9584594343, सुरेन्द्र कुरं 8305923237, दानी बरेठ 9669826175, दरसराम राठिया 9340466686, छविदास वैष्णव 9926727696, राजेश पाल 6265115729, राजेश नायक 6260541330, राधेश्याम साहू 9131863005, खम्हन कश्यप, बृजेश साहू, महेन्द्र चंद्रा, शांतनु, कमल तिवारी, विवेकानंद साहू, राजूदास महंत 9644953743, इन्द्रपाल कंवर 8319615383, आर. एल. साहू 9424164289, घनश्याम साहू 9826850922, एस.बी. नेवार 7587390773, हरिशचंद्र राजवाड़े 8871284740, मेलाबाई, नारद कंवर, सागर सिंह, मोतीलाल बरेठ, यशोदा भगत, रश्मी नंदा, अमृता कंवर, रघुनंदन श्रीवास, श्रवण कश्यप 7389439484, सचिन 8319318936, बंधन सिंग, रामनाथ, रामशरण उइके 9399290383, बिहारीलाल कुलदीप, नरेन्द्र, लोकनाथ सिंह, शारदा देवांगन, शिवमंगल सिंह, कमलापति, सूरज त्रिपाठी 7999616257, गोरेलाल साहू 9993685930, बिज्जू साहू 7879608086, सुनिल तिवारी 9993319168, एम पी पटेल 9827934789, संजू साहू, भीम कश्यप, गायत्री कुर्रे, सुबोध कुशवाहा, ईश्वर साहू, वृन्दावन राठिया, सहदेव खण्डेल 7746899629, ओमप्रकाश 7898335049,ललित राठिया, शंकर मजुमदार 9098238261, रतिराम राठिया 9575484579, शोभाराम खुटिया 8959161725, जितेन्द्र गुप्ता 8305397396, लल्लू यादव, सत्यनारायण चौबे 7999586948, लता अग्रवाल 9300662306, संतोषी यादव 9752546580, नरेश मिश्रा 9938428294,यदुमनी दास 9437123724, रणराज सिंह 9437037605, नमिता मोहन्ती 8658129124, निहारिका 9438000676, प्रशान्त मिश्रा 9938593430, रोहित भुजिंया 7894601148, अनंत डड़सेना 9348964823, विनोद चौधरी 9893905723, दिनेश सेठ 9125772840, श्याम पासवान 9304317550, रामनाथ महासेठ 8083392706, प्रमोद मिश्रा 9452042600, अजय शुक्ला 9956843555, डां. संजीव शर्मा 7388655165, अमित गौर 9823153431, गुणवंत गिरडकर 9766797866, स्वस्तिक कुलझले 9890779675, मंगेश डाहुले 8888875625

विघ्नहर्ता गौरी लक्ष्मी महाकाल शक्ति प्राप्ति दीक्षा साधना महोत्सव

08-09-10-11-12 जुलाई

कैलाश नारायण धाम E-1077 सरस्वती विहार

पीतमपुरा, नई दिल्ली-34

9013859760, 8750757042

पाटलीपुत्र हरियाली अमावस्या त्रिशक्ति साधना महोत्सव 16 जुलाई पटना

शिविर स्थल: **माँ कमला उत्सव हाल, विभुतिपुर चौक, मीठापुर बस स्टैण्ड, बाईपास, पटना (बिहार)**

सम्पर्क: राजन उपाध्याय 8709318992, चन्द्रप्रभा 6207007434, प्रियंका 6207658897, धीरज कुमार 7903516430, तारकेश्वर 9386550910, जितेन्द्रनाथ राय 9308826556, मनोज मिश्रा 6206964262, रमाकांत 9334850482, शिशुपाल राय 7004482210, डॉ. विभा रानी 9931729523, गुड़िया सिंह 7004220054, स्वाती 9110917784, प्रमोद प्रतिमा सिंह 9835852445, किशलय दास 8887707614,दीपक कर्ण 9471860061, गणेश कुमार 9430695177, मंतोष कुमार 8210614659, सियाराम कुमार 9308245871, यदुनन्दन 7549551497, धर्मेन्द्र कुमार 8219243838, मधुरेन्द्र कुमार 8986049559, अशोक कर्ण 8987172674, निर्मल पंकज 9308712631, भोलाशरण सहाय 8789045281, रजनीश कुमार 9709744742, अशोक सिंह 9934398821, संजय कुमार 9939460844, ललन दूबे 9199596300, सरोज कुमार 9415454139, राजेश कुमार 9006363573, डॉ. संतोष कुमार 9798877489, जितेन्द्र सिन्हा 7488615629, रामनाथ महासेठ 8083392706, श्याम पासवान 9304317550, उमाशंकर पंडित 9534760110, डॉ. अजय 9198603716, डॉ. संजय कुमार 9199998357, रविन्द्र कुमार 9006630176, अंकित कुमार 6207670876, अनिरूद्ध पंडित 9430924095, आदित्य 6201665339, देवेन्द्र गुप्ता 9430003264, धनजी 7503448301

सोमवती अमावस्या सावन शिवत्व गौरी लक्ष्मी साधना दीक्षा महोत्सव

17-18-19-20 जुलाई जोधपुर

कैलाश सिद्धाश्रम, 1-सी, पंचवटी कॉलोनी,
रातानाड़ा, जोधपुर
9950809666, 7568939648, 8769442398

पुरूषोत्तम शिव गौरी श्रावण लक्ष्मी साधना महोत्सव 23 जुलाई वडोदरा,

शिविर स्थल: मोधा घांची सभागृह, चंपानेरी, पंच गांधीवाड़ी,
जूना लक्कड़पीठा रोड़, वड़ोदरा, गुजरात

व्यवस्थापक: विरल सोनी 9925234536, सुनिल सोनी 9925555035, संजु तिवारी 8368163631, निरंजन पंचाल 8238224500, पी.के. शुक्ला 9426583664, महेन्द्र राणा 9825026711, कुणाल उपाध्याय 6351698191, रमाकांत सोनी 9725880140, ज्योति पाटील 9662294985, कन्नू भाई सोनी 9737836800, विजय दर्जी 9426979591, प्रकाश पटेल 9537519763, कांति परमार 9913644690, अनिल पांड्या 7600050712, कमलेश बारिया 8758829167, मानसिंह बारिया 9726446336, लक्ष्मण दामोर 6354278904, प्रभात भाऊ 7016966778, अरविंद भाई 8758512177, उमेश डांगी 9663923486, गुलाब सिंह 9712819187, मारूती सिंह 9979328170, रंजीत भाई 9979328546, नरपत भाई 9724212401, बालुभाई लाला 9574245488, जीतेन्द्र परमार 9924314658, छतर सिंह 6355537088, रमेश भाई परमार 9978576830, चिराग माहेश्वरी 9725323930, समद भाई 9904916240, श्याम लाल 9998300387, धर्मेन्द्र भाई 9824382108, नाहरू भाई 9723671912, कमलेश सुथार 8000010464, विनोद भाई 9924491054, नैना वडगामा 9824310748, रीतेश भट 9328117525, सौरभ मकवाना 8320242103, सौरभ सोलंकी 9664612883, जयंती भाई 9328420449, विशाल सुथार 9824286774, मयुर भाटिया 9978124633, महेन्द्र भाई 9925292978, मनू भाई 7303789902, रमेश भाई 7265910205, प्रवीण जाला 9601891905, भावेश पटेल 9624722800, सुरेश भाई 9327489544

शिवत्व गौरी शनि महामाया शक्ति साधना महोत्सव 06 अगस्त

शिविर स्थल: मेला ग्राउंड, सत्संग भवन,
शिवरीनारायण, (जांजगीर-चांपा) छ.ग.

प्राचीन मान्यता अनुसार बारह ज्योर्तिलिंगों की चेतना व दिव्यता के फलस्वरूप ही शिवरीनारायण धाम सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि जगन्नाथपुरी में विराजित बलभद्र सुभद्रा व जगन्नाथ जी के विग्रह पूर्ण चेतन्य दिव्यधाम स्वरूप में स्थित थे। आर्यावर्त के चारों दिशाओं में चार धाम स्थित है। मध्य में शिवरीनारायण गुप्त धाम स्वरूप में स्थित है। इसे नर नारायण भी कहा जाता है व शैव तथा वैष्णव धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा है। ऐसे दिव्य धाम में सद्गुरूदेव कैलाश श्रीमाली जी के सानिध्य में पूजा अर्चना साधना सम्पन्न करने से नारायण विष्णुमय धन लक्ष्मी युक्त शिव परिवारमय विघ्नहर्ता गणपति विजयश्री प्रदाता कार्तिकेय व महामाया स्वरूप में शक्तिमय सुलक्ष्मियों का विस्तार हो सकेगा।

सम्पर्क: भरत उपाध्याय 7895727019, रोहित साव 9753178475, नंदकिशोर कश्यप 8821834952, लक्ष्मी नारायण मौर्य 9907912221, योगेश यादव 6261200060, लक्ष्मीनारायण कश्यप 8120095606, मोतीदास वैष्णव 6261825764, पंकजनाथ योगी 9907249334, डॉ.लोकेश कश्यप 8225846065, घनश्याम कश्यप 9669640910, राजेश कर्ष 8103718180, राजेश्वरी यादव 9669113352, गोपाल साहू 8120051602, नारायण नाथ योगी 9981797971, राधेश्याम साहू 9425541600, घनश्याम कंवर 9752386223, रामविष्णु कश्यप 7089218985, नम्मू यादव 8517942826, खम्हन कश्यप 7987467868, सुरेश कश्यप 7000841853, द्वारिका साहू 7987782291, भागवत कर्ष 9589978812, सतीश पटेल 7583024055, अंजू वर्मा 7803994360, इंद्रजीत गुप्ता 9685611203, हितेश्वरी वर्मा 8817090921, किशन पटेल 8103584843, गणेश राम यादव 9644375528, चंद्रशेखर देवांगन 9827864575, सहदेव साहू 9893637680, जीवनलाल कुंभकार 9981903524, दामोदर तिवारी 7067140388, बोधी राम आदित्य 9424173240, मनबोध कुम्हार 6268771930, डॉ. धनेश पटेल 9179510654, बद्री प्रसाद साहू 7000159397, सरोज यादव, राम भरोसे टंडन, ठंडाराम भारती 9669625884, घनश्याम जोंजारे 6264554646, श्रीमती रामेश्वरी बर्मन 9343597472, रामचंद्र कश्यप, नंद झरोखा धीवर, लखन लाल भार्गव 9617829965, अवध नारंग 9617324412, दिलचंद देवांगन 8817254907, लोकनाथ केंवड़ा 9977313161, डॉ. अशोक साहू 9770090570, संतराम साहू 9755855284, प्रकाश नाथ योगी 9754674957, रवि शंकर देवांगन, नरेंद्र कर्ष 7909548385, चंद्र साहू 9755142966, शिव कुमार निर्मलकर 9827274737, रामशंकर बरेठ 7869398653, रीना रूपलाल डडसेना 8770628513, फकीर गुप्ता 8770749480, युवराज सिदार 7024800659 राजकुमार यादव 9131288524, प्रमोद कौशिक 7898585391, राहुल यादव 9691065423, जोहन कश्यप 7828502812, दशरथ साहू 97770680421, हीरालाल कश्यप, नारायण कश्यप, मोहन श्रीवास, छोटे लाल श्रीवास, हेमंत कश्यप 9399712035, राकेश केवट, सुशीला सिन्हा 9617291369, कमल भार्गव 9827194030, अशोक पटेल 8435765447, ईश्वर चंद कौशिक, बंशीधर कौशिक

हरियाली शिव गौरी अखण्ड सुहाग सौभाग्य वृद्धि साधना महोत्सव 19-20 अगस्त

शिविर स्थल: बालांगीर (उड़ीसा)

शत्रु संहारिणी त्रिपिण्ड माता वैष्णों धनदा वृद्धि साधना

19 जून से 29 जून तक



चन्द्रोदय शक्ति युक्त **नवरात्रि जगन्नाथ रथ यात्रा योग दिवस दुर्गाष्टमी व देवशयनी एकादशीमय पंच पर्वो में पूर्ण चेतन्य भाव से दीक्षा ग्रहण करने से आने वाला चार्तुमास** पूर्णरूपेण **चार्तुयविघ्नहर्ता** युक्त **निर्मित** हो सकेगा।

जीव जब **शरीर धारण** करता है तो उसके अन्दर दोनों ही तत्व विद्यमान होते हैं- **राक्षस तत्व** और **देव तत्व**। मनुष्य अपने **कर्मों** और अपने **गुणों** के अनुसार ही **पूज्य** अथवा **घृणित** बनता है। **दैत्य** अथवा **देवता** बन पाता है। परन्तु राक्षस तत्व शीघ्रता से व्यक्ति में सक्रिय हो जाते है, जिससे वह **दुष्प्रकृति** के कारण कुसंस्कारों की ओर प्रवृत्त होकर राक्षस वृतियों को धारण कर लेता है। इसी कारणवश उसमें **झूठ, कपट, हिंसा, लालच, लोभ, क्रोध, ईर्ष्या, वासना, आलस्य, व्यभिचार** आदि अनेक विकार पनपने लगते हैं। इन विकारों के कारण व्यक्ति अपने जीवन में **रोग, कष्ट, तनाव, बाधा, दरिद्रता, अपमान, घृणा, दुर्घटना** आदि **कुस्थितियों** को भोगता है।

ब्रह्माण्ड की तीन आदि शक्तियां **महालक्ष्मी-महासरस्वती** और **महाकाली** जिन्हें **त्रिपिण्ड माता वैष्णों शक्ति** कहा गया है, इन तीनों शक्तियों को आत्मसात करने से **इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति** और **कर्म शक्ति** का विस्तार होता तब ही जीवन **श्रेष्ठ** बनता है। मनुष्य अपने जीवन में तीनों शक्तियों से युक्त होता हुआ **धर्म, अर्थ** और **काम** में पूर्णता प्राप्त करने के साथ ही उसे जीवन में पूर्ण भाव, परमभाव प्राप्त हो पाता है। यह **त्रि-शक्तियां** ही जीवन के सभी क्षेत्रों में **पूर्णता** प्रदान करती हैं, जिससे सांसारिक जीवन सुस्थितियां युक्त पूर्णरूपेण गतिशील व सक्रियमय बन पाता है। त्रि-शक्ति का आह्वान करने से माता वैष्णो देवी साधक को **सगुण** व **निर्गुण** रूप में उपस्थित होकर सहयोग करती हैं।

अतः अपने अन्दर **राक्षस** प्रवृत्ति को समाप्त कर **त्रि-शक्ति देवत्व चेतना** का समावेश करने से **त्रि-शक्ति स्वरूपा देवी महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वती के आह्वान से ही हमारे अन्दर देव गुण जाग्रत हो पायेंगे।** इस दीक्षा को **चन्द्रोदय शक्ति** युक्त **नवरात्रि जगन्नाथ रथ यात्रा योग दिवस दुर्गाष्टमी** व **देवशयनी एकादशीमय पंच पर्व** जो कि **19 जून से 29 जून** के ये **एकादश दिवस पर्व** उक्त **दीक्षा** आत्मसात करने से सुलक्ष्मीयों युक्त **धन, सम्पदा, ऐश्वर्य, कीर्ति, बल, वीर्य, ओज, ज्ञान, आनन्द, प्रेम, वात्सल्य, सकल पदार्थ** उपलब्ध होते हैं।

अतः **गुरू** को अपने जीवन में धारण करना यानि **देवत्व का आह्वान** व **जागरण** करना होता है जो कि जीवन का **सौभाग्य** है।

शत्रु संहारिणी त्रिपिण्ड माता वैष्णों धनदा वृद्धि दीक्षा न्यौछावर ₹2100

दीक्षा हेतु **नूतन फोटो** व **न्यौछावर राशि कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर (राज.) 9950809666** भेजें

न्यौछावर राशि **KAILASH SHRIMALI State Bank Of India Main Branch Jodhpur**

A/c No.: 10827454848 RTGS Code: SBIN0000649 Branch Code:659

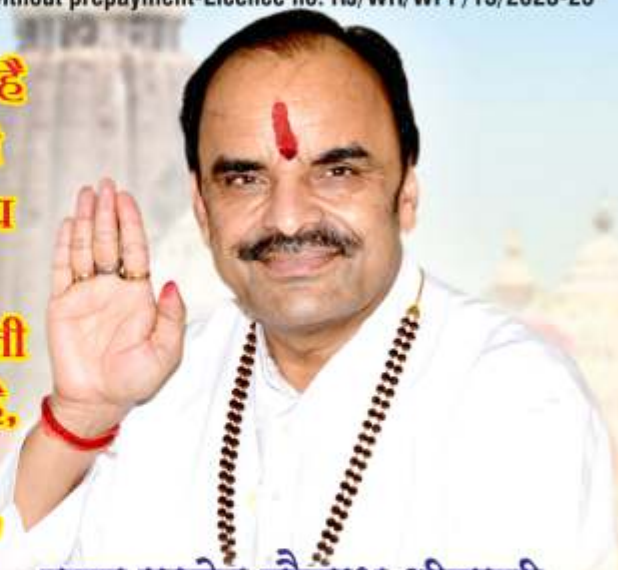
नई दिल्ली E-1077 सरस्वती विहार,पीतमपुरा Mob. +91-90138-59760 / +91-87507-57042

सद्गुरूदेव जी के साधनात्मक कार्यक्रम **GurudevKailash** YouTube **KAILASH SIDDHASHRAM** पर देखे।

Posting Date : 14-15 May 2023
Printing Date : 05-06 May 2023

RNI No. : RAJHIN/2011/37103
Postal Regn. No. : Jodhpur/341/2023-2025
Licensed to post without prepayment-Licence no. RJ/WR/WPP/15/2023-25

"मीठी वाणी एक ऐसा अनमोल रत्न है इसे जितना प्रयोग में लाओगे उसकी उतनी दिव्यता बढेंगी। यदि वाणी मेघ बनकर बरसे तो सर्वत्र मिठास बिखेरती है, और पवन बन कर चलती है तो शीतलता का अहसास कराती है, यदि प्रकाश बनकर फैलती है तो यश-कीर्ति का ताज पहना देती है।"



पूज्य गुरुदेव कैलाश श्रीमाली

गुरू पूर्णिमा व श्रावण मास के विशिष्ट दिवसों पर साधना, पूजा, हवन, दीक्षायें उक्त दिवसों पर पूज्य सद्गुरूदेव जी के सानिध्य में सम्पन्न होंगी।

कैलाश नारायण धाम (दिल्ली)
15-16-17-18 जून
08-09-10-11-12 जुलाई

कैलाश सिद्धाश्रम (जोधपुर)
02-03-04 जून
17-18-19-20 जुलाई

To,

जोधपुर कार्यालय 1-C,पंचवटी कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर -342011 (राज.)
Mob. + 919950809666/+ 917568939648/+ 918769442398, 0291-2517025
दिल्ली कार्यालय : E-1077, सरस्वती विहार, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034
Mob. + 919013859760/+ 918750757042

Indian Spiritual Journal
ISSN 2319-2356

कैलाश सिद्धाश्रम